A Daily News Magazine

इंदौर

गुरुवार, 29 मई, 2025

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 229, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

न्यायिक सक्रियता या अतिक्रमण? राष्ट्रपति के सवालों से नई बहस

रसाल सिंह

हाल ही में भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सुप्रीम कोर्ट से रेफरेंस भेजकर 14 सवाल पूछे हैं। ये सवाल राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद 143 (1) के तहत किए गए हैं। मूलतः ये सवाल सुप्रीम कोर्ट के द्वारा इसी साल 8 अप्रैल को दिए गए फैसले से संबंधित हैं। इसके अलावा कुछ सवालों का संदर्भ एवं दायरा न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका की संवैधानिक शक्तियों और कार्यक्षेत्र से संबंधित भी है। राष्ट्रपति के सवाल सटीक और समीचीन हैं। उन्होंने कानून निर्माण के संबंध में राज्यपाल और राष्ट्रपति को संविधानप्रदत्त शक्तियों को न्यायिक आदेश द्वारा सीमित/नियंत्रित किए जाने पर प्रश्नचिह्न लगाया है।

निश्चय ही, उन्होंने अपनी मर्यादा का उल्लंघन और सीमा का अतिक्रमण करने वाली न्यायपालिका को प्रश्नांकित करते हुए उसके द्वारा संवैधानिक व्यवस्थाओं और प्रावधानों को बदलने से संबंधित सवाल पूछे हैं। उनके सवाल भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में अंतर्निहित संवाद की स्वस्थ परंपरा का परिचय और प्रमाण हैं। 8 अप्रैल 2025 को शीर्ष अदालत ने राज्यपाल बनाम तमिलनाडु राज्य नामक वाद का फैसला सुनाया था। इस अत्यंत महत्वपूर्ण मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति जे. बी. पारदीवाला एवं न्यायमूर्ति आर. महादेवन की दो सदस्यीय न्यायपीठ ने की थी। यह मामला तमिलनाडु विधानसभा द्वारा पारित विधेयकों से संबंधित था। राज्य सरकार का कहना था कि विधानसभा द्वारा पारित कई विधेयक लंबे समय से राज्यपाल द्वारा लंबित रखे गए हैं। साथ ही, राज्य सरकार ने राज्यपाल द्वारा एक साथ कई विधेयकों को राष्ट्रपति को विचारार्थ भेजने पर भी सवाल खड़े किए थे। इन विधेयकों में राज्य द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति का पदेन दर्जा मुख्यमंत्री को देना भी शामिल है। राज्यपाल द्वारा अनिश्चित अवधि तक विधेयकों को लंबित रखना भी संविधान-सम्मत नहीं है।

अदालत ने अपने उपरोक्त मामले से संबंधित फैसले में कुछ संवैधानिक पहलुओं को नए सिरे से पेश किया है। ऐसा करते हुए कोर्ट ने संविधान के कुछ हिस्सों को व्याख्यायित भी किया है। अगर सुप्रीम कोर्ट के उक्त फैसले पर ध्यान दें तो इसके तीन पहलू नज़र आते हैं।

पहला, राज्यपाल एवं राष्ट्रपति द्वारा विधेयकों को स्वीकृति प्रदान करने के लिए समय सीमा समय सीमा तीन महीने तय की गई है। दूसरा, अगर समय सीमा के भीतर राज्यपाल या राष्ट्रपति द्वारा विधेयक पर प्रतिक्रिया नहीं दी जाती है तो राज्य के अनुरोध पर उच्चतम न्यायालय 'परमादेश रिट'(Writ of Mandamus) के तहत विधेयक को स्वीकृति प्रदान करने की क्षमता रखता है। तीसरा, कोर्ट ने खुद को संविधान के अनुच्छेद 142 द्वारा प्रदत्त शक्ति का उपयोग करते हुए 10 लंबित विधेयकों को कानून का दर्जा दे दिया है।

यह पहला मौका है जब बिना राष्ट्रपति या राज्यपाल की स्वीकृति के विधेयक कानून बन गए हैं। इस फैसले ने 'पॉकेट वीटो' को भी खारिज कर दिया है। यह न्यायपालिका द्वारा अपनी संवैधानिक शक्तियों और मर्यादा का अतिक्रमण है। इस फैसले से न्यायपालिका और कार्यपालिका के सम्बन्धों में तनाव और टकराहट बढ़ने की आशंका है।

इस फैसले के पीछे संवैधानिक वस्तुस्थिति को समझना ज़रूरी है। सर्वप्रथम अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुत विधेयकों के संबंध में उनके पास मौजूद विकल्पों का विवरण है। इसके तहत राज्यपाल या तो विधेयक को स्वीकृति देता है या उसे रोक लेता है या वह विधेयक को राष्ट्रपति के विचार के लिए प्रेषित कर देता है। राष्ट्रपति के विचारार्थ आरक्षित विधेयक के लिए एक कसौटी का उल्लेख है। वह यह है कि 'राज्यपाल की राय में' यदि वह (विधेयक) कानून बन जाए तो हाई कोर्ट की शक्तियों को इस प्रकार अल्पीकृत करेगा कि वह व्यवस्था खतरे में पड़ जाएगी, जिसे भरने के लिए संविधान द्वारा उस व्यवस्था का निर्माण किया गया है।

यह कसौटी मसौदा अनुच्छेद 175 में संविधान सभा में बहस के पश्चात जोड़ी गई, जो बहस 30 जुलाई, 1 अगस्त और 17 अक्टूबर 1949 को हुई थी। जिसे हम वर्तमान में अनुच्छेद 200 के नाम से जानते हैं। उक्त अनुच्छेद में कसौटी के निर्णयन के लिए जिस पद का इस्तेमाल है वह है 'राज्यपाल की राय में।' इसके दो मायने हो सकते हैं। पहलाः राज्यपाल मंत्रिपरिषद् के सहयोग एवं सुझाव से ऐसा करेगा। अब सवाल यह उठता है कि मंत्रिपरिषद जो विधानमंडल का हिस्सा है और विधेयक बनाने में शामिल है, आखिर क्यों पहले अपने सीमा क्षेत्र से बाहर जाकर विधेयक पारित करेगी और फिर राज्यपाल को परामर्श देकर उसे राष्ट्रपति को भिजवाएगी? दूसराः राज्यपाल अपने 'विवेकाधिकार' का प्रयोग करते हुए ऐसा करेगा। ऐसा भी संभव है कि ये दोनों अलग-अलग मामलों में लागू किए जा सकते हैं। अनुच्छेद 201 दूसरा महत्वपूर्ण अनुच्छेद है, जो इस बहस में सामने आया है। इस अनुच्छेद में राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति के विचारार्थ आरक्षित विधेयक से संबंधित चर्चा है। इसके तहत राष्ट्रपति या तो विधेयक पर स्वीकृति देते हैं या उसे रोक देते हैं। साथ ही, वह अपने सुझावों और निर्देश के साथ विधेयक को राज्यपाल के मार्फत वापस विधानमंडल को भेज सकते हैं। वह दोबारा विधानमंडल से पारित कराकर राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किया जाएगा। इसके आगे राष्ट्रपति उस विधेयक पर क्या फैसला लेते हैं? इस पर संविधान में स्पष्टता नहीं है।

इसके आगे शीर्ष अदालत ने अनुच्छेद 200 एवं 201 के तहत राष्ट्रपति के विचारार्थ प्रेषित विधेयकों को संवैधानिक एवं वैधानिक त्रुटियों से बचाने के लिए राष्ट्रपति को अनुच्छेद 143(1) के तहत सुप्रीम कोर्ट के परामर्श क्षेत्राधिकार के आधार पर सुझाव लेने के लिए भी निर्देशित किया है। कोर्ट का यह मानना है कि ऐसा करने से विधेयक में वैधानिक त्रुटियां भी नहीं रहेंगी एवं कानून बनने के बाद उसकी संवैधानिकता पर उठने वाले प्रश्नों से भी बचा जा सकेगा।

सबसे ज़रूरी सवाल है कि क्या कोर्ट के इस फैसले से न्यायपालिका, विधायिका एवं कार्यपालिका के मध्य 'शक्ति के बंटवारे' के सिद्धांत का उल्लंघन तो नहीं हो रहा है? 'शक्ति के बंटवारे' का सिद्धांत संविधान की बुनियादी संरचना का हिस्सा है। विधायिका के इस कार्य में हस्तक्षेप संविधान के बुनियादी ढांचे को चुनौती देता है, जो कि समय-समय पर दिए गए कोर्ट के कई फैसलों में भी दिखता है. यह फैसले अवांछित 'न्यायिक सक्रियता' का एक और उदाहरण है।

इस फैसले के बाद एक प्रश्न लगातार चर्चा में है कि क्या संवैधानिक व्याख्या एक संवैधानिक पीठ से इतर किसी अन्य पीठ द्वारा संभव है? संवैधानिक पीठ में न्यूनतम पांच न्यायाधीश होते हैं। वहीं उक्त फैसला मात्र दो न्यायाधीशों की पीठ द्वारा किया गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने प्रश्न संख्या 12 में इस विषय को उठाया है। राज्यपाल को भी केंद्र में सत्तारूढ़ दल के कार्यकर्ता के रूप में आचरण नहीं करना चाहिए।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

थोड़ी देर
मैं तुम्हारे साथ
रहना चाहता हूँ

थोड़ी देर
मैं तुम्हारे साथ
गीत गाना चाहता हूँ

थोड़ी देर
मैं पेड़ और तुम्हें
पेड़ से लिपटी
लता बनाना चाहता हूँ

थोड़ी देर
तुम्हें नदी और
मैं नौका बन जाना
चाहता हूँ

थोड़ी देर मैं
तुम्हारे जीवन में
अपने जीवन को
समा देना चाहता हूँ।

-दुर्गाप्रसाद झाला

17 राज्यों में मानसून का प्रवेश

मुंबई में तेज बारिश, राजस्थान में बारिश और धूलभरी आंधी, एमपी भी तरबतर

छत्तीसगढ़ में 12 दिन पहले मानसून की एंट्री

ठाणे, महाराष्ट्र

नई दिल्ली/रायपुर/भोपाल (एजेंसी)। देश के 17 राज्यों में मानसून की एंट्री हो चुकी है। बुधवार को मानसून समय से 12 दिन पहले छत्तीसगढ़ और 13 दिन पहले ओडिशा पहुंचा। दोनों राज्यों के कुछ जिलों में तेज बारिश हुई।

महाराष्ट्र के मुंबई, नवी मुंबई, ठाणे, पालघर, रायगढ़ में आज भारी बारिश हो रही है। यहां बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है। बदलापुर, उल्हासनगर, कल्याण, डोंबिवली और ठाणे के अलग-अलग इलाकों में जलभराव हो गया है।

राजस्थान में मौसम का तीन रूप देखने को मिल रहे हैं। बूंदी जिले में तेज गर्मी पड़ रही है। यहां के गांव में वृद्ध महिला की मौत हुई। जांच में हीटवेव से मौत की बात सामने आई। उदयपुर, चित्तौड़गढ़-भीलवाड़ा में बारिश जारी है। जैसलमेर में सुबह से रेत का गुबार (धूलभरी आंधी) है।

मध्यप्रदेश के 15 से ज्यादा जिलों में बारिश हुई। आज भी भोपाल, इंदौर-उज्जैन समेत 40 जिलों में तेज आंधी के साथ बारिश की चेतावनी है। कुछ जिलों में आंधी की रफ्तार 50 किमी तक हो सकती है। बिहार के 12 जिलों में आज बारिश का यलो अलर्ट है।

राजस्थान में बूंदी में भीषण गर्मी से बुजुर्ग महिला की मौत, जैसलमेर में छाया रेत का गुबार-राजस्थान में बूंदी के बसौली थाना इलाके में पहाड़ी पर 70 साल की बुजुर्ग महिला का शव मिला। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार महिला की मौत गर्मी और हीट वेव से हुई है। उधर, जोधपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा में बुधवार को दोपहर बाद मौसम बदला और तेज हवा के साथ बरसात हुई। वहीं जैसलमेर में सुबह रेत का गुबार छाया रहा।

उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर में बिजली गिरने से 2 सगी बहनों की मौत- यूपी में बारिश का दौर जारी है। मिर्जापुर में तेज बारिश के बीच आकाशीय बिजली गिरने से 2 सगी बहनों की मौत हो गई।

वहीं, अलग-अलग परिवार के 6 लोग घायल हो गए। कानपुर और रामपुर में बारिश हो रही है। यहां 20 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चल रही हैं।

- **एमपी-महाराष्ट्र में ज्यादा, बिहार-झारखंड में कम बारिश होने का अनुमान-** मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने बताया कि मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडिशा और आस-पास के इलाकों में इस बार सामान्य से ज्यादा बारिश हो सकती है। वहीं, पंजाब, हरियाणा, केरल और तमिलनाडु के कुछ इलाकों में सामान्य से कम बारिश होने का अनुमान है।मध्य और दक्षिण भारत में सामान्य से ज्यादा बारिश होने की उम्मीद है। उत्तर-पश्चिम भारत में सामान्य, जबकि पूर्वोत्तर में सामान्य से कम बारिश हो सकती है। मानसून के कोर जोन में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडिशा और आसपास के इलाके शामिल हैं। इनमें अधिकांश बारिश साउथ वेस्ट मानसून के दौरान होती है। यह रीजन खेती के लिए मानसूनी बारिश पर बहुत ज्यादा निर्भर करता है।
- **देश में इस मानसून सीजन में औसत 106 प्रतिशत बारिश की संभावना-** इस बार मानसून सीजन (जून से सितंबर) में सामान्य से ज्यादा बारिश होने का अनुमान है।मौसम विभाग ने बताया कि 106 प्रतिशत तक बारिश हो सकती है। पिछले महीने इसे 105 प्रतिशत बताया गया था। जून महीने में भी बारिश सामान्य से ज्यादा होगी।

स्व सहायता समूहों के सम्मेलन में सारणी पहुंचे थे मुख्यमंत्री, 464 करोड़ के विकास कार्यों का किया लोकार्पण-भूमिपूजन

महारानी अहिल्या बाई, रानी दुर्गावती और झांसी की रानी से प्रदेश की पहचान : सीएम

बैतूल। पैसा जब माता-बहनों के हाथों में आता है तो वह उसका सदुपयोग करती है। हमने लाड़ली बहना योजना की शुरूआत की, तब हमारी सरकार ने बहनों को एक हजार रूपये देना शुरू किया और फिर 1250 रुपये दे रही है। यह राशि आगामी 5 साल में 3 हजार रूपये तक की जायेगी। अब माता-बहनों को लखपति बनाने के लिए लखपति दीदी अभियान की शुरूआत की है। दरअसल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बुधवार को सारणी में आयोजित स्व सहायता समूहों के भव्य सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने सर्वप्रथम मंचासीन सभी अतिथियों का अभिवादन किया। जिसके बाद सारणी के बाबा मठारदेव, माँ ताप्ती मैया और माता-बहनों के जयघोष लगाकर उद्बोधन की शुरूआत की। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि इस धरनी, धरती माँ की शोभा कहीं है तो वह सारणी में है। सारणी की महिमा निराली है। यहां प्रकृति ने क्या अनुमप छंटा बिखेरी है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि महारानी अहिल्या बाई, रानी दुर्गावती और झांसी की रानी से प्रदेश की पहचान है। तीनों ने प्रदेश में जन्म लेकर इस माटी को अमर कर दिया है। आज हम लोकमाता अहिल्या के 300वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं, तब इनके समाज में दिए योगदान को याद करना आवश्यक है।

महिलाओं की आमदनी बढ़ाने का कर रहे काम

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंच से कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी महिलाओं की आमदनी बढ़ाने के लिए काम कर रहे है। इसके लिए हमारी सरकार भी कटिबद्ध है। धीरे-धीरे कर मप्र में नई फैक्ट्री लग रही है। रेडीमेट की फैक्ट्री में माताएं काम कर रही है। हम अच्छे मानदेय में काम करा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्कूल जाओ तो, कापी पुस्तक फ्री, दूर है तो साइकिल फ्री, मेरिट पर आने पर स्कूटी फ्री, विदेश जाने पर छात्रवृत्ति दी जाती है। हमारी बहनों के लिए जो अच्छा कर सकते हैं, वह काम हम कर रहे हैं। जो भी हो सकेगा, हमारी बहनों के लिए वह करेंगे। आज साढ़े चार सौ करोड़ के कामों का भूमिपूजन हो रहा है।

एक हजार से शुरू हुई लाड़ली बहना योजना, 3 हजार तक मिलेंगे

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हमारी सरकार ने लाड़ली बहना योजना की शुरूआत की। इस योजना में पहले एक हजार रूपये माता-बहनों को दिये जाते थे, अब 1250 रूपये दिये जाते है। आने वाले 5 सालों में यह राशि बढ़कर 3 हजार रूपये तक की जायेगी। सीएम ने कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए कहा कि कांग्रेस कहती है कि भाजपा सरकार यह राशि नहीं देगी, किन्तु यह राशि माता-बहनों के खाते में पहुंच रही है। माता-बहने इस राशि का सदुपयोग कर रही है। सीएम ने कहा कि लखपति दीदी अभियान में एक साल में एक लाख हो जायेगे। उन्होंने कार्यक्रम के दौरान लखपति दीदी के सम्मान पत्र भी वितरित किये।

देश में कोरोना के 1200 केस, अब तक 12 मौतें

- केरल में सबसे ज्यादा 430 कोरोना मरीज मिले
- यूपी-बिहार दौरे पर पीएम मोदी के नजदीक रहने वालों के टेस्ट होंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में कोरोना वायरस के एक्टिव केसों की संख्या 1200 पहुंच गई है। महाराष्ट्र एक्टिव केसेज के मामले में दूसरे नंबर पर है। यहां 325 मरीज हैं। इनमें से 316 मरीज सिर्फ मुंबई में हैं। इसके बाद केरल में सबसे ज्यादा 430 कोरोना पेशेंट हैं। मंगलवार को महाराष्ट्र में 66, कर्नाटक में 36, गुजरात में 17, बिहार में 5 और हरियाणा में 3 नए मामले सामने आए हैं।

नॉर्थ-ईस्ट में भी कोरोना के मामले सामने आने लगे हैं। अरुणाचल प्रदेश में मंगलवार को 2 महिलाएं कोरोना पॉजिटिव पाई गईं। इनमें एक को बुखार और हल्की खांसी है, जबकि दूसरी महिला में कोई लक्षण नहीं हैं। उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में मंगलवार को 78 साल के कोरोना पॉजिटिव बुजुर्ग की इलाज के दौरान मौत हो गई। यह राज्य में कोविड के नए वैरिएंट से पहली मौत है। इसके अलावा, महाराष्ट्र, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक और मध्य प्रदेश में कुल 11 मरीजों की मौत हो चुकी है। कुल मृतक की संख्या 12 पहुंच गई है।

प्रधानमंत्री मोदी के 29-30 मई को यूपी-बिहार दौरे के मद्देनजर राज्य का स्वास्थ्य विभाग भी अलर्ट है। निर्देश दिया गया है कि पीएम के 100 मीटर के दायरे में रहने वाले सभी लोगों की कोरोना जांच होगी।

जयपुर में 26 मई को कोरोना के दो मरीजों की मौत हो गई। इनमें से एक रेलवे स्टेशन पर मृत मिला था। उसकी कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। दूसरी मौत प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती 26 साल के युवक की हुई। उसे पहले से ही टीबी की बीमारी थी।

वहीं, महाराष्ट्र के ठाणे में एक कोरोना पॉजिटिव महिला की इलाज के दौरान मौत हो गई। ठाणे में ही 25 मई (रविवार) को अस्पताल में इलाज करा रहे 21 साल के युवक की मौत हो गई। उसका 22 मई से इलाज चल रहा था।

इससे पहले 17 मई को कर्नाटक के बेंगलुरु में 84 साल के बुजुर्ग की मौत हुई थी। स्वास्थ्य विभाग ने बताया था कि बुजुर्ग की मौत मल्टी ऑर्गन फेल्योर की वजह से हुई थी। 24 मई को उनकी कोविड रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी। केरल में दो लोगों की कोविड से मौत हुई है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 38 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ गुरुवार, 29 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

ट्रंप की चेतावनी पर रूस की खुली धमकी

पुतिन से उलझोगे तो तीसरा विश्व युद्ध तय !

मास्को (एजेंसी)। रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते वैश्विक स्तर पर कूटनीतिक तनाव फिर चरम पर पहुंच गया है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के खिलाफ तीखा हमला बोलते हुए उन्हें 'आग से न खेलने' की चेतावनी दी है। ट्रंप ने साफ कहा कि अगर पुतिन ने अपना रुख नहीं बदला तो 'रूस के लिए बहुत बुरा' हो सकता है। रूसी सुरक्षा परिषद के उपाध्यक्ष और पूर्व राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव ने अमेरिका को सीधे-सीधे धमकी देते हुए कहा- 'ट्रंप ने जो कहा, उसका जवाब है हमें एक वाकई बुरी चीज़ पता है -तीसरा विश्व युद्ध, उम्मीद है ट्रंप इसे समझते होंगे !

ट्रंप ने क्यों दी आगाह करने वाली चेतावनी - यह सारा मामला यूक्रेन पर हालिया रूसी हमलों और बमबारी के बाद भड़का है। ट्रंप ने अपने सोशल

मीडिया प्लेटफॉर्म 'ट्रुथ सोशल' पर पोस्ट करते हुए कहा था- पुतिन पूरी तरह पागल हो चुके हैं। वे आग से खेल रहे हैं। अगर मैं राष्ट्रपति होता, तो अब तक रूस के लिए बहुत बुरा हो चुका होता। और मेरा मतलब वाकई बहुत बुरा है। उन्होंने रूस के बर्ताव को मानवता के खिलाफ अपराध बताते हुए अंतरराष्ट्रीय समुदाय को सख्त कदम उठाने की भी अपील की।

रूस की वर्ल्ड वॉर 3 की धमकी- दिमित्री मेदवेदेव जो पुतिन के बेहद करीबी माने जाते हैं, ने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर लिखा- ट्रंप 'आग से खेलने' और 'बुरे अंजाम' की बात कर रहे हैं। हम बस एक वाकई बुरी चीज़ जानते हैं तीसरा विश्व युद्ध। रूस के इस बयान को सीधी सैन्य धमकी के रूप में देखा जा रहा है, जो यह दर्शाता है कि क्रेमलिन अब ट्रंप के बयानों को हल्के में नहीं ले रहा।

अमेरिकी प्रतिबंधों की तैयारी

अमेरिका और पश्चिमी देशों का आरोप है कि पुतिन जानबूझकर शांति वार्ता में बाधा डाल रहे हैं और संघर्ष को लंबा खींचना चाहते हैं। रूस का दावा है कि वह केवल यूक्रेनी हमलों का जवाब दे रहा है और अमेरिका इस युद्ध को लंबा खींचने के लिए हथियार और धन मुहैया करा रहा है। वॉल स्ट्रीट जर्नल और सीएनएन की रिपोर्ट्स के मुताबिक, ट्रंप की टीम इस सप्ताह रूस पर नए प्रतिबंधों की घोषणा कर सकती है। ट्रंप ने रविवार को पत्रकारों से कहा- हम रूस पर और सख्त आर्थिक प्रतिबंध लगाने पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं। इन प्रतिबंधों में तेल व्यापार, रूसी बैंकों, और पुतिन के करीबी लोगों को निशाना बनाए जाने की संभावना है।

विश्लेषकों की टेंशन- विश्लेषकों का मानना है कि ट्रंप और रूस के बीच इस तरह की खुली धमकी और चेतावनी वैश्विक शांति के लिए गंभीर खतरा है। संयुक्त राष्ट्र के पूर्व कूटनीतिज्ञ एलेक्स रॉस ने कहा कि ऐसे बयान अस्थिर क्षेत्रों में और ज्यादा उकसावे की स्थिति पैदा कर सकते हैं। ट्रंप की भाषा भले ही चुनावी हो, लेकिन रूस इसे सैन्य चुनौती मान सकता है। डोनाल्ड ट्रंप और रूस के बीच तीखी बयानबाज़ी अब सिर्फ कूटनीति तक सीमित नहीं रही।

मणिपुर का अगला सीएम कौन?

सरकार बनाने के लिए 44 विधायकों ने ठोका दावा

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिंसा प्रभावित मणिपुर में नई सरकार बनाने की कवायद के तहत बुधवार को भाजपा विधायक थोकचोम राधेश्याम सिंह ने दस अन्य विधायकों के साथ राजभवन में राज्यपाल अजय कुमार भल्ला से मुलाकात की। इसके बाद उन्होंने दावा किया कि लोगों की इच्छा के अनुसार 44 विधायक सरकार बनाने के लिए तैयार हैं। हमने राज्यपाल को यह बात बता दी है। इस मुद्दे के संभावित समाधान के बाबत भी हमने राज्यपाल से चर्चा की है।

बीजेपी केंद्रीय नेतृत्व पर छोड़ा दांव- राधेश्याम सिंह ने कहा, राज्यपाल ने हमारी बात को ध्यान में रखा है और वह लोगों के सर्वोत्तम हित में कार्रवाई शुरू करेंगे। यह पूछे जाने पर कि क्या वे सरकार बनाने का दावा पेश करेंगे, उन्होंने कहा कि भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व इस बारे में निर्णय लेगा। मगर, यह बताना कि नई सरकार बनाने के लिए हम तैयार हैं, सरकार बनाने का दावा पेश करने के ही समान है। स्पीकर सत्यव्रत ने 44 विधायकों से व्यक्तिगत और संयुक्त रूप से मुलाकात की है। ऐसा कोई भी नहीं है जो नई सरकार के गठन का विरोध करता हो। उन्होंने कहा, लोगों को बहुत ज्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। पिछले कार्यकाल में कोविड 19 के कारण दो साल बर्बाद हो गए थे और इस कार्यकाल में संघर्ष के कारण दो और साल बर्बाद हो गए हैं।

मणिपुर में फिलहाल राष्ट्रपति शासन लागू

गौरतलब है कि भाजपा नेता एन. बीरेन सिंह के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद मणिपुर में फरवरी से राष्ट्रपति शासन लागू है। मई, 2023 में मैतेई और कुकी-जो के बीच शुरू हुए जातीय संघर्ष से निपटने के उनके सरकार के तरीके को लेकर आलोचनाओं के बीच यह फैसला लिया गया था। 60 सदस्यीय विधानसभा में वर्तमान में 59 विधायक हैं, जिनमें से एक सीट एक विधायक की मृत्यु के कारण रिक्त है। भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन में 32 मैतेई विधायक, तीन मणिपुरी मुस्लिम विधायक और नौ नागा विधायक - कुल मिलाकर 44 विधायक हैं। कांग्रेस के पास पांच विधायक हैं, सभी मैतेई हैं। शेष 10 विधायक कुकी हैं। उनमें से सात ने पिछला चुनाव भाजपा के टिकट पर जीता था, दो कुकी पीपुल्स अलायंस के हैं, और एक निर्दलीय है।

भोपाल के आसपास शूट हुई फिल्म; जाह्नवी कपूर-ईशान खट्टर लीड रोल

एमपी में बनी फिल्म 'होम बाउंड' कान्स फिल्म फेस्टिवल में

भोपाल (नप्र)। फिल्म 'होम बाउंड' की शूटिंग भोपाल समेत आसपास की लोकेशन पर हुई है। जाह्नवी कपूर, ईशान खट्टर लीड रोल में है। मध्यप्रदेश में शूट हुई फिल्म 'होम बाउंड' 78वें कान्स फिल्म फेस्टिवल में छा गई। फिल्म का कान्स अन सर्टेन रिगार्ड सेक्शन में प्रीमियर शो कान्स में हुआ। इस फिल्म की शूटिंग भोपाल समेत आसपास की लोकेशन पर हुई है। जाह्नवी कपूर, ईशान खट्टर लीड रोल में हैं। मध्यप्रदेश की फिल्म टूरिज्म पॉलिसी के बाद प्रदेश में 350 से अधिक फिल्में और वेब सीरीज शूट हो चुकी हैं।

वर्ष 2024 में फिल्म 'होम बाउंड' का बड़ा हिस्सा मध्यप्रदेश के भोपाल और आसपास के क्षेत्र में प्राकृतिक, सांस्कृतिक-शहरी परिवेश में शूट किया गया है। फिल्म की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा राज्य की फिल्म अनुकूल नीतियों और फिल्म की कहानी के अनुसार उपयुक्त लोकेशनों की सफलता का प्रमाण है।

बता दें कि यह फिल्म धर्मा प्रोडक्शन के बैनर तले बनी है। मध्यप्रदेश में शूट होने वाली यह उनकी

पांचवीं फिल्म है। फिल्म के निर्माता करण जौहर और निर्देशक नीरज घेवान हैं। इससे पहले उनके निर्देशन में बनी 'मसान' फिल्म को भी दर्शकों ने खूब सराहा था। होम बाउंड में कलाकार ईशान खट्टर, जान्हवी कपूर के अलावा विशाल जेठवा भी मुख्य भूमिका में हैं।

मंत्री ने कहा-बधाई हो- संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने इस उपलब्धि पर 'होम बाउंड' की टीम को बधाई भी दी। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश की प्राकृतिक विविधता, ऐतिहासिक विरासत और सिनेमा-फ्रेंडली वातावरण ने एक बार फिर स्वयं को सिद्ध किया है। होम बाउंड जैसी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित फिल्म का हमारे प्रदेश में शूट होना और फिल्म की टीम द्वारा अनुभव की गई सहजता, हमारे फिल्म नीति और स्थानीय समुदायों के सहयोग का प्रमाण है। राज्य सरकार फिल्म इंडस्ट्री को हर संभव सहयोग देने के लिए प्रतिबद्ध है। ताकि अधिक से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट्स यहां आएं।

मप्र ईज ऑफ शूटिंग डेस्टिनेशन बना

पर्यटन एवं संस्कृति प्रमुख सचिव शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि फिल्म निर्माताओं के लिए मनभावन शूटिंग स्थलों के साथ, शूटिंग फ्रेंडली स्थानीय नागरिक, फिल्म सहयोगी ईको सिस्टम, समृद्ध स्थानीय संस्कृति के साथ मध्यप्रदेश विशेष रूप से ईज ऑफ शूटिंग डेस्टिनेशन बन गया है। विशेष सहायता राशि और सिंगल विंडो फिल्म शूटिंग अनुमति प्रदान करते हुए स्थानीय टैलेंट को भी प्रोत्साहित कर रहे हैं।

नई टूरिज्म पॉलिसी से काम आसान

शुक्ला ने बताया कि प्रदेश की नई फिल्म टूरिज्म पॉलिसी ने निर्माता-निर्देशकों का काम आसान किया है। सिंगल विंडो सिस्टम के जरिए अनुमति प्राप्त करने की प्रक्रिया आसान हुई है। वहीं सब्सिडी से निर्माता-निर्देशकों को प्रोत्साहन मिला है। मध्यप्रदेश की फिल्म टूरिज्म पॉलिसी के बाद प्रदेश में 350 से अधिक फिल्में और वेब सीरीज शूट हो चुकी हैं। अब तक 12 हिंदी फिल्म, 1 तेलुगु फिल्म और 6 वेब सीरीज को 24 करोड़ रुपए से अधिक का वित्तीय अनुदान दिया जा चुका है। एमपी को साल 2022 में 'मोस्ट फिल्म फ्रेंडली स्टेट' का अवॉर्ड भी मिल चुका है।

कर्नल सोफिया मामला

सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट को सुनवाई से रोका

- एसआईटी को जांच के लिए जुलाई तक का वक्त, मंत्री विजय शाह से नहीं हुई पूछताछ

नई दिल्ली/भोपाल (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में

बुधवार को कर्नल सोफिया कुरैशी पर टिप्पणी से विवादों में घिरे मध्यप्रदेश के मंत्री विजय शाह के मामले की सुनवाई हुई। जस्टिस जेजे सूर्यकांत और जस्टिस दीपांकर दत्ता की बेंच ने मामला सुना।

जस्टिस सूर्यकांत ने कहा- एसआईटी ने 21 मई को जांच की, वो बयान देने वाली जगह गई थी। मोबाइल समेत कुछ सबूत भी इकट्ठा किए गए। गवाहों के बयान लिए गए। जांच अभी शुरुआती चरण में है। हाईकोर्ट से हमारी रिक्वेस्ट है कि वो हमारे साथ-साथ सुनवाई न करे। एसआईटी ने तय तारीख को जांच रिपोर्ट पेश कर दी। एसआईटी ने कुछ और समय मांगा है। इस मामले की सुनवाई अब जुलाई के पहले हफ्ते में होगी।

मंत्री शाह से नहीं की गई पूछताछ- स्पेशल

पीएम मोदी 29 और 30 मई को सिक्किम, पश्चिम बंगाल, बिहार और यूपी का करेंगे दौरा

नईदिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 29 और 30 मई को सिक्किम, पश्चिम बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश का दौरा करेंगे। 29 मई को प्रधानमंत्री सिक्किम का जाएंगे, जहां वे सुबह करीब 11 बजे सिक्किम-50 जहां प्रगति उद्देश्य से मिलती है और प्रकृति विकास को पोषित करती है कार्यक्रम में भाग लेंगे। वे सिक्किम में कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन भी करेंगे और लोगों को संबोधित करेंगे। बाद में प्रधानमंत्री पश्चिम बंगाल के अलीपुरद्वार जाएंगे और दोपहर करीब 2.15 बजे अलीपुरद्वार और कूच बिहार जिलों में सिटी गैस वितरण परियोजना की आधारशिला रखेंगे।

इसके बाद पीएम बिहार रवाना होंगे। शाम करीब 5.45 बजे पटना एयरपोर्ट पर नए टर्मिनल भवन का उद्घाटन करेंगे। अगले दिन 30 मई को सुबह करीब 11 बजे प्रधानमंत्री बिहार के काराकाट में 48,520 करोड़ रुपए से अधिक की लागत वाली कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन, शिलान्यास करेंगे। वह एक जनसभा भी संबोधित करेंगे। इसके बाद प्रधानमंत्री उत्तर प्रदेश जाएंगे, जहां वह दोपहर करीब 2.45 बजे कानपुर में करीब 20,900 करोड़ रुपए की लागत वाली कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करेंगे और लोगों को संबोधित करेंगे।

पाकिस्तान से सटे राज्यों में आज मॉक ड्रिल

- जम्मू-कश्मीर, गुजरात, पंजाब और राजस्थान शामिल
- इससे पहले ऑपरेशन सिंदूर के दिन देशभर में हुई थी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान से सटे राज्यों में आज यानी गुरुवार की शाम मॉक ड्रिल होगी। इनमें जम्मू-कश्मीर, गुजरात, पंजाब और राजस्थान शामिल हैं। लोगों से सतर्क रहने की अपील की गई है। इससे पहले 7 मई को देश के 244 जिलों में मॉक ड्रिल हुई थी। इसमें नागरिकों को हमले के दौरान खुद को बचाने की ट्रेनिंग दी गई। यह इसलिए किया गया ताकि युद्ध की स्थिति में लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

मॉक ड्रिल

किसानों को मिलेगी अब फसलों की ज्यादा कीमत

- धान समेत 14 फसलों की एमएसपी में बढ़ोतरी, किसान क्रेडिट कार्ड पर कम ब्याज में मिलेगा लोन

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने धान, कपास, सोयाबीन, अरहर समेत खरीफ की 14 फसलों की मिनिमम सपोर्ट प्राइस (एमएसपी) बढ़ा दी है। केंद्रीय कैबिनेट ने आज यानी 28 मई को यह फैसला लिया। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि धान की नई एमएसपी 2,369 रुपए तय की गई है, जो पिछली एमएसपी से 69 रुपए ज्यादा है।

कपास की नई एमएसपी 7,710 रुपए तय की गई है। इसकी एक दूसरी किस्म की नई एमएसपी 8,110 रुपए कर दी गई है, जो पहले से 589 रुपए ज्यादा है। नई एमएसपी से सरकार पर 2 लाख 7 हजार करोड़ रुपए का बोझ पड़ेगा। यह पिछले फसल सीजन की तुलना में 7 हजार करोड़ रुपए ज्यादा है। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि एमएसपी फसल की लागत से कम से कम 50 प्रतिशत ज्यादा हो, इस बात का ध्यान रखा गया है।

एमएसपी में 23 फसलें शामिल हैं

- 7 प्रकार के अनाज (धान, गेहूं, मक्का, बाजरा, ज्वार, रागी और जौ)
- 5 प्रकार की दालें (चना, अरहर/तुअर, उड़द, मूंग और मसूर)
- 7 तिलहन (रेपसीड-सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, तिल, कुसुम, निगरसीड)
- 4 व्यावसायिक फसलें (कपास, गन्ना, खोपरा, कच्चा जूट)।

असम में दो दिनों के दौरान 9 करोड़ की ड्रग्स जब्त

नईदिल्ली (एजेंसी)। असम में पिछले दो दिनों के दौरान स्थानीय पुलिस और असम राइफल्स ने जॉइंट ऑपरेशन के तहत दो जगहों से करीब 9 करोड़ की हेरोइन जब्त की है। पहली घटना सैतुअल के तेइखांग की है, जहां 26-27 मई की रात वाहन चेकिंग के दौरान दो केनबो बाइक पर सवार दो लोगों को रोका गया। उनके पास से 758 ग्राम हेरोइन बरामद हुई, जिसकी कीमत 5.3 करोड़ है।

बस-ऑटो की टक्कर में एक ही परिवार के 4 लोगों की मौत

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले में मंगलवार शाम बस और ऑटो की टक्कर में एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में एक 2 साल का बच्चा भी शामिल है। पुलिस अधीक्षक संदीप कुमार मीणा ने बताया कि हादसा शाम करीब 7:30 बजे खलीलाबाद थाना क्षेत्र के कांटे गांव के पास मुंडेरवा-कांटेर मार्ग पर हुआ।

तीन लोगों की मौके पर मौत हो गई, जबकि एक की इलाज के दौरान

जस्टिस वर्मा के खिलाफ सरकार महाअभियोग ला सकती है

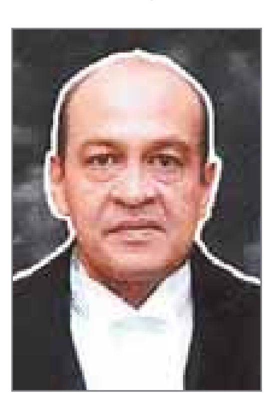

- मानसून सत्र में प्रस्ताव संभव, कैश कांड के दोषी जज के घर जले नोट मिले थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कैश कांड मामले में जस्टिस यशवंत वर्मा के खिलाफ केंद्र सरकार संसद में महाअभियोग प्रस्ताव लाने पर विचार कर रही है। मीडिया ने सरकार से जुड़े सूत्रों के हवाले से बताया कि 15 जुलाई के बाद शुरू होने वाले मानसून सत्र में यह प्रस्ताव लाया जा सकता है। हालांकि सरकार अभी इस बात का इंतजार कर रही है कि जस्टिस वर्मा खुद इस्तीफा दे दें।

दरअसल, जस्टिस वर्मा के लुटियंस दिल्ली स्थित घर में 14 मार्च की रात आग लगी थी। उनके घर के स्टोर रूम से 500-500 रुपए के जले नोटों के बंडलों से भरे बोरे मिले थे। जिसके बाद उन्हें इलाहाबाद हाईकोर्ट ट्रांसफर कर दिया गया था।

22 मार्च को इस मामले में तत्कालीन सीजेआई ने जांच समिति बनाई थी। कमेटी ने 3 मई को रिपोर्ट तैयार की और 4 मई को सीजेआई को सौंपी थी। कमेटी ने जस्टिस वर्मा के खिलाफ आरोपों को सही पाया और उन्हें दोषी ठहराया था।

राजस्थान बोर्ड 10वीं का रिजल्ट जारी

मिहिर गुर्जर को 99.33 प्रतिशत, श्रेया प्रजापति और प्रियांशु के आए 99 प्रतिशत

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने दसवीं कक्षा का परिणाम घोषित कर दिया है। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने परिणाम जारी किया। बोर्ड के अनुसार, जयपुर में सर्वाधिक छात्रों ने परीक्षा दी थी। जयपुर में आरबीएसई 10 वीं कक्षा का रिजल्ट 94.18 प्रतिशत रहा। जयपुर में कुल 1 लाख 4 हजार 894 विद्यार्थी पंजीकृत थे। इनमें से 97 हजार 606 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए।

थरूर बोले-भारत शांति चाहता है, पाकिस्तान ऐसा नहीं होने देता

- वह उस जमीन को पाना चाहता है जो उसकी है ही नहीं

नईदिल्ली (एजेंसी)। पनामा के दौरे पर पहुंचे कांग्रेस नेता शशि थरूर ने कहा कि भारत अकेले शांति से जीना चाहता है, लेकिन पाकिस्तान ऐसा नहीं होने देता। उन्होंने साफ किया कि भारत युद्ध नहीं चाहता था, लेकिन आतंकवादियों को सजा दिए बिना नहीं छोड़ा जा सकता। मीडिया के मुताबिक थरूर ने कहा कि पाकिस्तान लगातार भारत के खिलाफ आतंकी हमलों को बढ़ावा दे रहा है। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर इसलिए शुरू किया क्योंकि पाकिस्तान ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले के अपराधियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की थी।

आतंकवाद के खिलाफ पनामा का भारत को समर्थन- थरूर के नेतृत्व में एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल पनामा की यात्रा पर पहुंचा है। इसमें भाजपा, कांग्रेस और दूसरे दलों के सांसद भी हैं।

इंदौरी दंपत्ति का मेघालय में 6 दिन बाद भी पता नहीं चला

बारिश के कारण शिलांग पुलिस ने सर्चिंग रोकी; पता देने वाले को 5 लाख का इनाम

इंदौर (एजेंसी)। हनीमून पर मेघायल के शिलांग घूमने गए इंदौर के दंपत्ति 6 दिन से लापता हैं। स्थानीय पुलिस ने उनकी तलाश में मंगलवार रात तक सर्चिंग अभियान चलाया। इस दौरान उनके दो बैग झाड़ियों के पास खाई में पड़े मिले। बुधवार को फिर उनकी तलाश में सर्चिंग अभियान चलाया, लेकिन तेज बारिश के कारण रोक दिया गया। पहाड़ों पर से बारिश का पानी काफी तेजी से उतर रहा है, एक टीम नीचे है। वहीं, दूसरी टीम तीन किलोमीटर दूर रुक गई। इधर, परिवार ने दंपती का पता देने वालों पर 5 लाख रुपए का इनाम रखा है। बता दें, जिस इलाके में दंपती के बैग मिले हैं, वहां लूटपाट होना आम है। यहां स्थानीय लोग भी अकेले घूमने नहीं आते। बता दें, 20 मई को हनीमून मेघालय गए ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी और उनकी पत्नी सोनम रघुवंशी 23 मई को शिलांग के सोहरारिम इलाके में लापता हो गए थे। इसी दिन यहां के ओसरा हिल्स के पास दंपती की लावारिस बाइक मिली थी।

सांसद शंकर लालवानी पहुंचे शिलांग

मंगलवार को सीएम डॉ. मोहन यादव मेघालय के सीएम कॉनराड संगमा से बात की। इसके बाद सांसद शंकर लालवानी बुधवार सुबह शिलांग पहुंचे हैं। सांसद ने बताया कि शिलांग की डीजीपी इदशिषा नोंगरांग से मुलाकात की है। साथ में रघुवंशी परिवार के सदस्य भी थे। ये तो साफ हो गया है कि नवदंपती हादसे का शिकार नहीं हुए हैं। पुलिस क्राइम के एंगल पर काम कर रही है। जल्द ही खुलासा होने की उम्मीद है।

संपर्क टूटने के बाद सोनम के भाई गोविंद ने गूगल सर्च कर बाइक रेंट पर देने वाले की जानकारी निकाली थी। दंपती की बाइक सोहरारिम में मिली। ये जगह दुनिया के सबसे अधिक बारिश वाली जगहों में से एक है, जो चेरापूंजी के नाम से लोकप्रिय है।

50 से ज्यादा लोगों की टीम सर्चिंग में जुटी

मेघालय के ईस्ट खासी हिल्स के एसपी विवेक सिएम ने बताया कि दंपती की मोबाइल लोकेशन आखिरी बार मावलाखाइट गांव में पाई गई थी। लापता राजा रघुवंशी और उनकी पत्नी सोनम की तलाश के लिए 50 से ज्यादा लोगों की टीम बनाई गई है। हर टीम में 10 लोग हैं, जिनमें गांव के लोग और विलेज डिफेंस पार्टी के सदस्य भी शामिल हैं। बुधवार को सर्चिंग के लिए और लोगों को लगाया गया। पुलिस जांच में पता चला कि दंपती ने पहले नोंग्रियाट गांव में गाइड के साथ लिविंग रूट्स ब्रिज देखा था और वहीं रात गुजारी थी।

भंवरकुआं में चेकिंग के दौरान सिख युवक ने किया हंगामा

पुलिस से की झूमाझटकी, भेजा गया जेल

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के भंवरकुआं क्षेत्र में सोमवार रात चेकिंग के दौरान एक सिख युवक द्वारा पुलिसकर्मियों से झूमाझटकी और अभद्रता का मामला सामने आया है। युवक ने शराब के नशे में पुलिस कार्यवाही का विरोध किया और मौके पर काफी देर तक हंगामा करता रहा। बाद में पुलिस ने प्रतिबंधात्मक धाराओं में कार्यवाही करते हुए युवक को जेल भेजा। एसीपी देवेन्द्र धुर्वे के अनुसार, घटना भंवरकुआं के प्रतीक्षा ढाबे के पास की है, जहां रात में चेकिंग पाइंट लगाया गया था। इसी दौरान तिलक नगर निवासी रजवीर सिंह, पुत्र जसवीर पाल, दोपहिया वाहन से गुजर रहा था। पुलिस ने जब उसे रोककर ब्रीथ एनालाइजर से जांच की, तो उसके शराब पीने की पुष्टि हुई।

युवक को कोर्ट में पेश किया, जहां से जेल भेजा

कार्रवाई से बचने के लिए युवक ने पुलिस से बहस शुरू कर दी और देखते ही देखते मामला झूमाझटकी तक पहुंच गया। काफी प्रयासों के बाद पुलिस ने युवक को काबू में किया और गाड़ी में

बैठाकर थाने लेकर गई। उसके खिलाफ मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया और मंगलवार को एसीपी कोर्ट में पेश कर उसे जेल भेज दिया गया।

वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल- इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें युवक को पुलिस से मारपीट करते देखा जा सकता है। घटनास्थल पर बड़ी संख्या में लोग भी जमा हो गए थे। पुलिस का कहना है कि हाल ही में आजाद नगर, खजराना, छोटी ग्वालटोली और राजेन्द्र नगर इलाकों में भी चेकिंग के दौरान पुलिस पर हमले हुए हैं। इन सभी मामलों में शासकीय कार्य में बाधा डालने की धाराओं के तहत कार्रवाई की गई है।

भस्म आरती दर्शन

रजत त्रिपुण्ड, मुकुट और भांग से भगवान महाकाल का दिव्य श्रृंगार

उज्जैन (एजेंसी)। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में बुधवार तड़के भस्म आरती के दौरान मंदिर के कपाट खोलते ही सबसे पहले वीरभद्र जी को प्रणाम कर स्वस्ति वाचन कर आज्ञा लेकर चांदी द्वार को खोला गया। गर्भगृह के पट खोलकर पुजारी भगवान का श्रृंगार उतार कर पंचामृत पूजन के बाद कर्पूर आरती की। भगवान महाकाल को भांग चन्दन सिंदूर और रजत त्रिपुण्ड और आभूषणों से दिव्य स्वरूप में श्रृंगारित किया गया। नंदी हाल में नंदी जी का स्नान,ध्यान, पूजन किया गया। जल से भगवान महाकाल का अभिषेक करने के पश्चात दूध, दही, घी, शक्कर, शहद फलों के रस से बने पंचामृत से पूजन किया गया। ड्रायफ्रूट फल मिठाई का भोग लगाकर भस्म चढ़ाई गई, शेषनाग का रजत मुकुट रजत की मुण्डमाल और रुद्राक्ष की माला के साथ-साथ सुगन्धित पुष्प से बनी फूलों की माला धारण की भगवान महाकाल ने। भस्म आरती में बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल का आशीर्वाद लिया। महा निर्वाणी अखाड़े की ओर से भगवान महाकाल को भस्म अर्पित की गयी। मान्यता है की भस्म अर्पित करने के बाद भगवान निराकार से साकार रूप में दर्शन देते है।

85 साल के बुजुर्ग को क्रेन ने कुचला, मौत

सड़क पार करते समय हुआ हादसा, घटना के बाद ड्राइवर मौके से फरार

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के बड़ा गणपति इलाके में मंगलवार शाम एक तेज रफ्तार क्रेन ने सड़क पार कर रहे 85 वर्षीय बुजुर्ग को कुचल दिया। हादसे के बाद लोगों ने क्रेन को वहीं रोक लिया, लेकिन ड्राइवर मौका पाकर फरार हो गया। मल्हारगंज पुलिस के अनुसार, जनता कॉलोनी निवासी लक्ष्मीचंद (85) पुत्र चुन्नीलाल मंगलवार को बड़े गणपति क्षेत्र में स्थित एक दुकान पर चाय पीने के बाद घर लौट रहे थे। जैसे ही वह सुभाष स्कूल के गेट के पास सड़क पार कर रहे थे, तभी क्रेन (नंबर MP09 DQ 1723) ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, क्रेन का अगला पहिया लक्ष्मीचंद के ऊपर से गुजर गया, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और क्रेन को जब्त कर लिया गया। लक्ष्मीचंद के बेटे पुरुषोत्तम की शिकायत पर ड्राइवर के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। पुलिस उसकी तलाश में जुटी है।

सिरपुर तालाब में तैरता मिला युवक का शव- इंदौर के सिरपुर तालाब में बुधवार सुबह एक अज्ञात युवक का शव पानी में तैरता हुआ मिला। शव देखकर मॉर्निंग वॉक पर निकले लोगों ने तुरंत चंदन नगर पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और शव को बाहर निकलवाकर जिला अस्पताल भेजा गया। मृतक की उम्र करीब 35 वर्ष बताई जा रही है। शव की शिनाख्त के प्रयास किए जा रहे हैं। पुलिस आसपास के थानों में गुमशुदगी की रिपोर्ट खंगाल रही है।

बिजनेस डील का लालच देकर बुजुर्ग से लाखों की ठगी

हर माह ढाई लाख देने का वादा करने वाले आरोपी पर केस दर्ज

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के लसूड़िया थाना क्षेत्र में एक 60 वर्षीय व्यक्ति से धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। आरोप है कि इंपोर्ट-एक्सपोर्ट बिजनेस में साझेदारी का झांसा देकर आरोपी ने लाखों रुपए की ठगी की। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस अब मामले की विस्तृत जांच कर रही है। पुलिस के अनुसार, मानसरोवर नगर निवासी सुरेशचंद्र तिवारी ने शिकायत दर्ज कराई है कि आकर्ष उर्फ कवि गुलाटी निवासी चिकित्सक नगर ने उन्हें बिजनेस में मोटा मुनाफा देने का झांसा देकर करीब 24.5 लाख रुपए हड़प लिए। सुरेश तिवारी के अनुसार, आरोपी ने उन्हें बताया था कि उसकी फर्म 'विनेस एंटरप्राइजेस' मुंबई में रजिस्टर्ड है और वह इंपोर्ट-एक्सपोर्ट का काम करता है। तिवारी ने पुलिस को बताया कि आरोपी उनकी बेटी का मित्र है और उसी के माध्यम से परिचय हुआ था।

शूटिंग कोच मोहसिन ने 30 लड़कियों से गलत काम किया

वीडियो में कबूला, इंदौर ही नहीं कई जिलों की लड़कियों से थे रिलेशन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में शूटिंग एकेडमी की आड़ में लड़कियों और कर्मचारियों से रेप और छेड़छाड़ के आरोपी मोहसिन खान को लेकर लगातार खुलासे हो रहे हैं। अब उसका एक और वीडियो सामने आया है, जिसमें वह कबूल करता दिखाई दे रहा है कि उसके कई लड़कियों से रिलेशन थे। इंदौर ही नहीं दूसरे जिलों की लड़कियों से भी टच में था। अब तक उसने 25 से 30 लड़कियों के साथ गलत काम किया है। इधर, पुलिस ने मोहसिन को 7 दिन की रिमांड पर लिया है। मामले की जांच एक 6 सदस्यीय एसआईटी कर रही है। वहीं, सोमवार को एक और पीड़िता की शिकायत पर अन्नपूर्णा थाना पुलिस ने उस पर गैंगरेप का केस दर्ज किया है। मंगलवार को पुलिस ने पीड़िता के कोर्ट में बयान कराए हैं। यह मोहसिन पर पांचवीं एफआईआर है, जिसमें उसके साथ ही उसके दोस्त फैजान और इमरान को भी आरोपी बनाया है। फैजान और इमरान आपस में भाई हैं। पुलिस को आज सुबह खजराना इलाके में इमरान की मोबाइल लोकेशन मिली, जिसके आधार पर दबिश देकर उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

जावद की लड़की से मिलने जाता था मोहसिन- मोहसिन ने मंदसौर के पास जावद की एक अन्य लड़की का नाम पूछताछ में कबूला है। उसने बताया कि जावद में वह एक लड़की से मिलने जाता था। यह पता चलने पर अब हिंदूवादी संगठन उस लड़की की जानकारी निकाल रहे है। संभव है कि वह भी मोहसिन के खिलाफ केस दर्ज करा दें। हिंदूवादियों के मुताबिक उसके साथ भी मोहसिन ने काफी कुछ गलत किया है।

अकाउंट में नहीं मिला ट्रांजेक्शन- इधर, एसआईटी की टीम ने मोहसिन के बैंक खातों की जानकारी निकाल ली है। फिलहाल उसके अकांउट में फंडिंग जैसा ट्रांजेक्शन सामने नहीं आया है। उसके अकांउट में जो लेन-देन हुआ है वह क्लास में आने वाली लड़कियों की फीस के बाद स्टाफ की सैलरी है। हालांकि, अभी मोहसिन से और पूछताछ की जा रही है कि वह दूसरे अकांउट तो हैंडल नहीं कर रहा था। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर मोहसिन खान, फैजान और इरफान के खिलाफ गैंगरेप का केस दर्ज किया है। इरफान और फैजान अभी फरार है।

पांचवीं एफआईआर में पीड़िता ने क्या बताया

26 मई को एक लड़की ने मोहसिन के खिलाफ 5वीं एफआईआर दर्ज कराई है, जिसमें उसने मोहसिन और उसके दो दोस्त फैजान और इमरान पर गैंगरेप का आरोप लगाया है। बताया कि वह वारदात के समय नाबालिग थी। घरेलू कार्य करती थी। पिता की मौत हो जाने के कारण घर पर आर्थिक तंगी रहती थी। मेरे परिचित ने मुझे मोहसिन के फ्लैट पर सफाई कार्य के लिए लगाया था। फरवरी 2020 को मोहसिन ने मुझे कहा कि टिपटॉप रहा कर अच्छी लगती है। वो मुझे बैड टच करने लगा। लड़की ने बताया, उस समय मेरी उम्र 17 वर्ष थी। मोहसिन रोज मेरे साथ गंदी हरकत किया करता था। जबरदस्ती पकड़कर गोद में बैठाता था। मुझे नए कपड़े देता था और कहता कि मेरे सामने ही कपड़े पहना करो। कई बार तो अपने हाथ से मेरे पहने हुए कपड़े उतारता था और नए कपड़े पहनाता था। मोहसिन ने मेरे साथ आपत्तिजनक व अप्राकृतिक तरीके से जबरदस्ती संबंध बनाए।

15 दिन तक बंधक बनाकर गैंगरेप किया

लड़की ने आरोप लगाए कि मोहसिन से मिलने उसका दोस्त फैजान और उसका भाई इमरान भी आया करता था। यह दोनों भी मुझे गलत तरीके से छूते थे। लॉकडाउन के समय मोहसिन, इमरान और फैजान ने खाना बनाने के बहाने घर पर बुला लिया और इन तीनों ने मुझे 15 दिन कैद करके रखा। इस दौरान तीनों मेरे साथ सामूहिक दुष्कर्म करते थे।

रहवासियों ने कलेक्टर से की फूल मंडी हटाने की मांग

जन आक्रोश रैली निकालकर कलेक्टर ऑफिस पहुंचे, जमकर नारेबाजी की

इंदौर (एजेंसी)। फूल मंडी हटाने की मांग को लेकर बुधवार को मां हरसिद्धी रहवासी संघ, मोती तबेला रहवासी संघ ने जन आक्रोश रैली निकाली और कलेक्टर ऑफिस के सामने जमकर नारेबाजी कर प्रदर्शन किया। दोनों रहवासी संघ के पदाधिकारियों ने कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपा और मांग पूरी न होने पर उग्र आंदोलन की चेतावनी दी है। रहवासियों का कहना है कि वे काफी समय से फूल मंडी से परेशान हैं। आए दिन विवाद की स्थिति बनती है। मंडी शिफ्ट की जा चुकी है तो यहां अवैध रूप से फूल मंडी क्यों लग रही है। पहले भी इसकी शिकायत की जा चुकी है। मगर स्थिति आज भी वैसी ही है।

ज्ञापन में बताई पीड़ा- रहवासी संघ ने कलेक्टर के नाम ज्ञापन दिया। जिसमें लिखा है रहवासी क्षेत्र हरसिद्धी और मोतीतबेला की गलियों एवं मुख्य मार्गों पर अवैध रूप से फूल मंडी घरों के साथ-साथ रोड पर भी लग रही है। मंडी में आने वाले ग्राहक-किसानों की गाड़ियां बीच रोड पर अव्यवस्थित रूप से खड़ी हो जाती हैं, जिससे स्कूल बस, ऑटो-रिक्शा जैसे वाहनों को निकलने में दिक्कत होती है। अवैध मंडी के कारण रोड पर जाम लग जाता है। अवैध फूल मंडी में आने वाले बाहरी तत्वों की भीड़, चिल्ला-पुकार और रोड जाम होने के कारण क्षेत्रीय महिलाएं और बच्चियां बाहर निकलने में डरती हैं। इन्हें दुकानें-गाड़ियां हटाने का बोलने पर रहवासियों को धमकाते हैं। कई बार मारपीट की।

मांग पूरी नहीं होने पर करेंगे आंदोलन

अवैध फूल मंडी लगाने के लिए आधी रात को किसान-व्यापारी आ जाते हैं। गाड़ियों के शोर, जोर-जोर से चिल्लाकर बोली लगाते हैं। जिससे बच्चों की पढ़ाई, रहवासियों की नींद भी नहीं होती है। रहवासियों का कहना है कि उनके सुखाधिकार का हनन हो रहा है। कई रहवासियों का खुद का मकान होने के बाद भी दूसरी जगह किराए से रहना पड़ रहा है। रहवासियों ने कहा कि पंढरीनाथ से सभी फूल मंडी चोइथराम में शिफ्ट की जा चुकी है। यहां पर अवैध रूप से दुकानें लगाई जा रही हैं। अगर उनकी मांगें पूरी नहीं होती हैं तो वे आगे चरणबद्ध उग्र आंदोलन करेंगे।

इंदौर में चीन-बांग्लादेशी कपड़ों का बहिष्कार

राजबाड़ा में जलाई प्रतीकात्मक होली; विधायक गोलू शुक्ला बोले- पूरा एमपी जुड़े इस अभियान से

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर रिटेल गारमेंट्स एसोसिएशन ने चीन और बांग्लादेश से आने वाले कपड़ों का बहिष्कार शुरू कर दिया है। इस अभियान के तहत ना तो इन देशों से कपड़े खरीदे जा रहे हैं और ना ही बेचे जा रहे हैं। इस मुहिम को शहर के कई व्यापारिक संगठनों का समर्थन मिल रहा है। मुहिम के तहत मंगलवार को राजबाड़ा क्षेत्र के राजगुरु कॉम्प्लेक्स चौराहे पर प्रतीकात्मक रूप से चीन और बांग्लादेशी कपड़ों की होली जलाई गई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में व्यापारी शामिल हुए।

विधायक गोलू शुक्ला ने किया व्यापारियों से निवेदन- इस मुहिम को समर्थन देने के लिए इंदौर के सनातनी विधायक गोलू शुक्ला भी मौके पर पहुंचे। उन्होंने कहा, राजबाड़ा के व्यापारियों ने एकजुट होकर विदेशी कपड़ों का विरोध किया है। अब वक्त है कि पूरे मध्यप्रदेश के व्यापारी इस मुहिम से जुड़ें और स्वदेशी अपनाओ, देश बचाओ के नारे को सार्थक बनाएं। विधायक ने एमपी के सभी व्यापारियों से अपील की कि वे भी इस अभियान का हिस्सा बनें और स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता दें। एसोसिएशन अध्यक्ष अक्षय जैन ने बताया कि मुहिम को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी दुकानों पर चीन-बांग्लादेशी कपड़ों के बहिष्कार वाले पोस्टर लगाए गए हैं। 50 हजार से ज्यादा ग्राहकों को कॉल सेंटर के ज़रिए कॉल कर स्वदेशी कपड़े खरीदने और विदेशी कपड़े ऑनलाइन भी न खरीदने की अपील की गई है।

कलेक्शन मैनेजर और साथी पर हमला गर्लफ्रेंड के चक्कर में हुआ विवाद

पुलिस ने चार लोगों पर किया केस दर्ज

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के विजयनगर थाना क्षेत्र में गर्लफ्रेंड को लेकर हुए विवाद में चार से ज्यादा लोगों ने कलेक्शन मैनेजर और उसके साथी के साथ मारपीट कर दी। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर मनीष, राधे, साउद और उनके अन्य साथियों के खिलाफ केस दर्ज किया है। हालांकि, जिस जगह पर घटना हुई वहां कोई सीसीटीवी कैमरा नहीं मिला, जिससे जांच में कुछ बाधा आई है। विजयनगर पुलिस के अनुसार, आयुष यादव निवासी न्यू देवास रोड, सतगुरु परिणय बिल्डिंग स्थित एक कार्यालय में कलेक्शन मैनेजर के पद पर कार्यरत है। 26 मई को ऑफिस में टेली कॉलर का काम करने वाली एक युवती के बॉयफ्रेंड मनीष और ऑफिस स्टाफ विशाल ठाकुर के बीच फोन पर बहस हो गई थी। शाम को युवती ऑफिस से चली गई, लेकिन रात करीब साढ़े आठ बजे वह अपने बॉयफ्रेंड मनीष और अन्य युवकों के साथ ऑफिस की पार्किंग में पहुंची। उस समय आयुष, विशाल और कुछ अन्य लोग वहीं मौजूद थे। युवती ने विशाल से सवाल किया कि उसने मनीष से क्या कहा था। जवाब में विशाल ने कहा कि मनीष को अपने पर्सनल मुद्दे ऑफिस में नहीं लाने चाहिए, ये बातें बाहर सुलझाई जानी चाहिए। इस पर मनीष और उसके साथियों ने विवाद शुरू कर दिया।

3 साल से धूल खा रही कोरोना जीनोम सिक्वेंसिंग मशीन

डब्ल्यूएचओ ने एमजीएम मेडिकल कॉलेज को दी थी मशीन; सैंपल भोपाल भेजे जा रहे, रिपोर्ट में देरी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या फिर बढ़ने लगी है। इस साल अब तक कुल छह कोरोना पॉजिटिव केस मिले हैं, जिनमें से चार मरीज अभी सक्रिय हैं और सभी होम आइसोलेट हैं। इन मरीजों के सैंपल जीनोम सिक्वेंसिंग के लिए भोपाल स्थित एआईआईएमएस भेजे गए हैं। रिपोर्ट आने में कुछ समय लग सकता है। तीन साल पहले विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने एमजीएम मेडिकल कॉलेज इंदौर को 60 लाख रुपए कीमत की जीनोम सिक्वेंसिंग मशीन प्रदान की थी। इसके लिए स्टाफ को पुणे में ट्रेनिंग भी दी गई, लेकिन जरूरी किट न मिलने के कारण मशीन तब से उपयोग में नहीं आ सकी और धूल खाती रही। डॉ. अरविंद घनघोरिया ने बताया कि मशीन को लेकर संबंधित अधिकारियों से जानकारी ली गई है और जल्द ही इस समस्या का समाधान निकाला जाएगा। हाल के कोरोना मामलों में सूरत, अहमदाबाद और उज्जैन के तीन मरीज भी शामिल हैं। कोरोना के किस वैरिएंट का संक्रमण है, यह जांचने के लिए इंदौर एआईआईएमएस भोपाल पर निर्भर है। डब्ल्यूएचओ ने यह मशीन 27 नवंबर 2022 को दी थी, इसके बाद मशीन इंस्टाल कर स्टाफ को ट्रेनिंग के लिए भेजा गया, लेकिन किट और जरूरी संसाधन न मिलने के कारण लैब चालू नहीं हो सकी। इंदौर से लिए गए सभी पॉजिटिव सैंपल्स का जीनोम सिक्वेंसिंग एआईआईएमएस भोपाल में हो रहा है, जिससे जांच में देरी होती है। डॉक्टरों का मानना है कि यदि मशीन चालू होती, तो इंदौर और आसपास के क्षेत्रों के सैंपल भी यहीं जांचे जा सकते थे, जिससे वैरिएंट का जल्दी पता चलकर तुरंत इलाज शुरू किया जा सकता। सीएमएचओ डॉ. बीएस सेतिया ने बताया कि इंदौर में मिले कोरोना पॉजिटिव मरीजों के सैंपल जीनोम सिक्वेंसिंग के लिए भोपाल भेजे जा रहे हैं। राज्य सरकार की तरफ से इस संबंध में कोई नई एडवाइजरी जारी नहीं हुई है, लेकिन केंद्र सरकार ने गाइडलाइन जारी की है, जिसके तहत कोरोना पॉजिटिव केसों को होम आइसोलेट करने और जीनोम सिक्वेंसिंग कराकर नए वायरस के पता लगाने पर जोर दिया गया है।

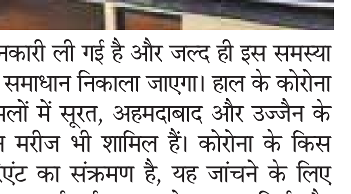

संपादकीय

तमन्ना पर यू- टर्न ?

इस देश में किसी भी मुद्दे पर राजनीति हो सकती है फिर वह चाहे साबुन का ब्रांड ही क्यों न हो। क्षेत्रीय अस्मिता और भाषा का मुद्दा इतना हावी हो चुका है कि इससे बाहर जाकर राष्ट्रहित में कोई निर्णय लेना आफत को न्यौता देने जैसा है और ये हालात बनाने के लिए भी राजनीतिक दल और उनके क्षुद्र स्वार्थ ही जिम्मेदार है। ताजा मामला कर्नाटक का है। वहां सरकारी स्वामित्व वाली कंपनी केएसडीएल सरकारी स्वामित्व वाली केएसडीएल द्वारा निर्मित मैसूर संदल साबुन की ब्रांड एंबेसडर अभिनेत्री तमन्ना भाटिया को बनाने पर बवाल खड़ा हो गया है। सरकार के इस फैसले का बचाव करते हुए कर्नाटक के उद्योग मंत्री एमबी पाटिल ने कहा कि यह व्यापारिक विवेक का मामला है, कन्नड़ पहचान से जुड़ा मामला नहीं। केएसडीएल ने 'बाहुबली' फेम तमन्ना भाटिया को 2 साल के लिए 6.2 करोड़ रू. में अपने साबुन का ब्रांड एंबेसेडर बनाया है। तमन्ना भाटिया मुंबई से हैं तथा हिंदी के साथ साथ तमिल और तेलुगु फिल्मों का जाना माना चेहरा हैं। उनके 28 मिलियन यानी 2.8 करोड़ इंस्टाग्राम फॉलोअर्स हैं। यह एक पैन-इंडिया अपील है। मंत्री पाटिल के अनुसार क्योंकि मैसूर सैंडल (साबुन) केवल कर्नाटक में नहीं बिकता। अगर सिर्फ कर्नाटक में यह बिकता, तो हम यहीं की किसी अभिनेत्री को ब्रांड एम्बेसेडर बनाते। मैसूर सैंडल साबुन का 18 प्रतिशत कर्नाटक में बिकता है और बाकी 82 प्रतिशत दक्षिण भारत के अन्य राज्यों में। अब इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जाना है। भविष्य हमें हॉलीवुड अभिनेत्री को भी लेना पड़ सकता है। लेकिन मंत्रीजी के इन तर्कों से ज्यादातर लोग सहमत नहीं हैं। मामला अब स्थानीय बनाम बाहरी का मोड़ ले रहा है। प्रो-कन्नड़ समर्थकों ने कन्नड़ अभिनेत्रियों की तस्वीरें पोस्ट कीं ताकि सरकार पर फैसला बदलने का दबाव बनाया जा सके। वैसे दिलचस्प यह भी है कि कन्नड़ फिल्म इंडस्ट्री को 'सैंडलवुड' कहा जाता है। कन्नड़ एक्टर और एक्टिविस्ट चेतन कुमार अहिंसा ने एक्स पर लिखा-विवाद के बीच, कर्नाटक सरकार को तमन्ना भाटिया को किसी ऐसे व्यक्ति या समूह से बदलना चाहिए जो राज्य की संस्कृति से जुड़ा हो और मैसूर सेंडल सोप की पहुंच भी बढ़ाए। वहां सरकार के इस फैसले के खिलाफ प्रदर्शन भी हुए। गौरतलब है कि मैसूर में सरकारी चंदन तेल फैक्टरी की स्थापना 1916 में मैसूर के तत्कालीन महाराजा नलवाड़ी कृष्ण राजा वाडियार और दीवान सर एम. विश्वेश्वरैया ने की थी। महाराजा इसे पूरे देश में लोकप्रिय बनाना चाहते थे। इसलिए इसे उच्च गुणवत्ता वाला और स्वास्थ्य मानकों के लिए हिसाब से बनाया गया था। लेकिन अब यह राजनीति का मुद्दा भी बन गया है। पूर्ववर्ती मैसूर राजघराने के उत्तराधिकारी और मैसूर-कोडागु से बीजेपी सांसद यदुवीर वाडियार ने भी कर्नाटक सरकार के फैसले को 'बेहद गैर-जिम्मेदाराना और असंवेदनशील' बताया। उन्होंने कहा कि मैसूर सैंडल साबुन सिर्फ एक उत्पाद नहीं है; यह हमारी सांस्कृतिक पहचान और घरेलू विरासत का हिस्सा है। पूछा जा रहा है कि क्या कर्नाटक सरकार को एक भी ऐसी कन्नड़ अभिनेत्री नहीं मिली, जिसे इस साबुन का ब्रांड एंबेसेडर बनाया जा सके। वैसे मंत्री पाटिल ने खुद माना कि पूरी जांच के बाद यह फैसला लिया गया और इसमें रश्मिका मंदाना, दीपिका पादुकोण, कियारा आडवाणी जैसी कई अभिनेत्रियों पर भी विचार किया गया था। कंपनी का लक्ष्य है कि वह 2030 तक 5000 करोड़ रुपये का टर्नओवर हासिल करे, जो कि 2024-25 में 1785.99 करोड़ रुपये है। अब मुद्दा यह है कि पिछले कर्नाटक विस चुनाव में कांग्रेस ने राज्य के 'नंदिनी' दूध ब्रांड को साइड लाइन कर गुजरात के अमूल को लोकप्रिय बनाने की कोशिशों के लिए तत्कालीन भाजपा सरकार को कटघरे में खड़ा किया था। क्या अब सिद्धारमैया सरकार की नीति ने यू टर्न ले लिया है?

जरूरी है परमाणु जवाबदेही बाधाओं से मुक्ति

नजरिया

प्रमोद भार्गव
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

पहलगाम हमले के बदले में चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर के बाद केंद्र सरकार परमाणु ऊर्जा क्षेत्र को नियंत्रित करने वाले कानूनों में संशोधन पर विचार कर रही है। अंदाजा है कि आगामी मानसून सत्र में परमाणु क्षति के लिए असितत्व में लाए गए नागरिक दायित्व अधिनियम (सीएलएनडीए) 2010 में दो महत्वपूर्ण संशोधन सरकार कर सकती है। इन दो संशोधनों को बड़े सुधारों के रूप में देखा जा रहा है। इस संशोधन के तहत परमाणु संयंत्रों को उपकरण सप्लाई करने वाली कंपनियों की जिम्मेदारी सीमित की जा सकती है। मसलन यदि कोई दुर्घटना होती है तो उनकी जिम्मेदारी अनुबंध की मूल राशि और एक निर्धारित समय तक ही सीमित रहेगी। इस परिप्रेक्ष्य में बतौर उदाहरण विदेशी कंपनी जैसे जीई-हिताची वेस्टिंग हाउस को इस कानून के कारण निवेश में हिचक होती रही है। दूसरा संशोधन परमाणु ऊर्जा अधिनियम 1962 में प्रस्तावित है। यह कानून फिलहाल केवल सरकारी स्वामित्व वाली कंपनियों को ही परमाणु संयंत्र चलाने की अनुमति देता है। इसे संशोधित किया जाता है तो निजी कंपनियों को भी परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के संचालन की अनुमति मिल सकती है। इस परिवर्तन से विदेशी कंपनियों के लिए भविष्य के परमाणु प्रोजेक्ट में आंशिक हिस्सेदारी का द्वार खुल जाएगा। साफ है, ये उपाय किए जाते हैं तो परमाणु उत्पादन बढ़ने की संभावनाएं तो बढ़ जाएंगी, लेकिन स्वच्छ ऊर्जा और परमाणु दुर्घटना होने पर कंपनियों को नागरिक जवाबदेही से मुक्ति मिल जाएगी। याद रहे मनमोहन सिंह सरकार के प्रधानमंत्री रहते हुए भारत-अमेरिका के बीच हुए परमाणु समझौते के बाद जो राजनीतिक तूफान उठा था, उसके चलते संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन-1 सरकार गिरते-गिरते बची थी।

दरअसल सरकार परमाणु ऊर्जा क्षेत्र को बाधा मुक्त इसलिए करना चाहती है जिससे 2047 तक सौ गीगावाट परमाणु ऊर्जा के उत्पादन का लक्ष्य हासिल कर लिया जाए। इसी लक्ष्य पूर्ति के लिए सरकार परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में निजी भागीदारी बढ़ाना चाहती है। इसीलिए 2024-25 के आम बजट में लघु परमाणु संयंत्रों के लिए सरकार ने बड़े बजट का प्रावधान किया था। इस क्षेत्र में नया प्रयोग करते हुए पहली बार निजी कंपनियों को लघु परमाणु संयंत्र समूचे देश में स्थापित करने का अवसर दिया जाएगा। कालांतर में विदेशी कंपनियों को भी परमाणु संयंत्र लगाने की अनुमति दी जा सकेगी। साथ ही मॉड्यूलर (प्रतिरूपक) रिएक्टर के आधुनिकीकरण के लिए शोध और विकास पर भी धनराशि खर्च की जाएगी। जिससे परमाणु ऊर्जा में नई प्रौद्योगिकी का विकास हो, इसे पीपीपी मोडल पर क्रियान्वित किया जाएगा। इसका उद्देश्य देश में स्वच्छ एवं वैकल्पिक बिजली को बढ़ावा देना है। इसी साल फरवरी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अमेरिका यात्रा पर गए थे, तब भारत में छोटे परमाणु संयंत्र लगाने और भारत में ही उत्पादन करने का समझौता हुआ था। एआई के दौर में ऊर्जा की खपत असाधारण रूप से बढ़ने की उम्मीद है। यह एक बड़ा कंप्यूटर की भाषा का कृत्रिम बुद्धि से जुड़ा मॉडल है। भाषा मॉडल ऐसे मशीन लर्निंग मॉडल हैं, जो मानव भाषा के पाठ को समझ सकते है और सृजित भी कर सकते हैं। ये मॉडल भाषा के बड़े डेटा भंडार का विश्लेषण करने पर भी सक्षम होते हैं। सुपर और क्वांटम कंप्यूटर में इसी एआई की जरूरत पड़ेगी। इसके लिए परमाणु ऊर्जा की जरूरत लघु परमाणु संयंत्रों से ही संभव हैं। स्वच्छ ऊर्जा के उत्पादन में इसे क्रांतिकारी पहल माना जा रहा है।

विकसित भारत के लिए ऊर्जा की उपलब्धता एक बड़ी जरूरत है। इसलिए सरकार सिर्फ पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर नहीं रहना चाहती है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद जिस तरह से हमारी सेना ने पाकिस्तान के आतंकी और गैर-सैन्य ठिकानों को ध्वस्त किया था, उन आयुधों के निर्माण और संचालन के लिए भी परमाणु ऊर्जा की जरूरत पड़ती है। इस परिप्रेक्ष्य में सौर और पवन ऊर्जा पर सरकार पहले ही काफी कुछ कर चुकी है। अतएव अब फोकस परमाणु ऊर्जा पर केंद्रित है। इसलिए इसमें संभावनाएं अधिक हैं। आम बजट पेश करते हुए वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने ऊर्जा सुरक्षा को सरकार की नौ प्राथमिकताओं में गिनाया था। ऊर्जा बदलाव के संबंध में एक नीतिगत दस्तावेज तैयार करने की बात भी कही गई है। इससे यह तय होगा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में किस तरह से पारंपरिक ऊर्जा की जगह धीरे-धीरे अपारंपरिक ऊर्जा के स्रोत का महत्व बढ़ रहा है। यह दस्तावेज ऊर्जा क्षेत्र में रोजगार, विकास और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों का भी समाधान खोजेगा। अतएव इसी परिप्रेक्ष्य में निकेल, कोबाल्ट, तांबा और लिथियम जैसी धातुओं के उत्पादों के आयात पर शुल्क घटाया है। इन उत्पादों का प्रयोग परमाणु और सौर ऊर्जा के साथ दूसरे ऊर्जा उत्सर्जन उपायों में भी होता है। आयात सस्ता होने से इनका निर्माण भारत में करने में आसानी होगी। यही नहीं परमाणु ऊर्जा, नवीनीकरण ऊर्जा और अंतरिक्ष एवं रक्षा क्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाली 25 धातुओं पर सीमा शुल्क को पूरी तरह खत्म कर दिया गया है। यानी छोटे परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने के रास्ते साफ किए जा रहे हैं।

भारत में एक ओर अर्से से अटकी परमाणु बिजली परियोजनाओं में विद्युत का उत्पादन शुरू हो रहा है, वहीं निजी निवेश से परमाणु ऊर्जा बढ़ाने के प्रयास हो रहे हैं। प्रधानमंत्री ने गुजरात के सूरत जिले के तापी काकरापार में 22,500 करोड़ रुपए की लागत से बने 700-700 मेगावाट बिजली उत्पादन के दो परमाणु ऊर्जा संयंत्र 22 फरवरी 2024 को राष्ट्र को समर्पित कर दिए हैं। ये देश के पहले स्वदेशी परमाणु ऊर्जा संयंत्र हैं। ये संयंत्र प्रतिवर्ष लगभग 10.4 अरब यूनिट स्वच्छ बिजली का उत्पादन करेंगे। जो गुजरात में बिजली की आपूर्ति के साथ अन्य प्रांतों को भी बिजली देंगे। ये संयंत्र शून्य कार्बन उत्सर्जन की दिशा में आगे बढ़ने की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होंगे। भारत सरकार के उपक्रम परमाणु ऊर्जा निगम ने मध्यप्रदेश में चार नए परमाणु ऊर्जा संयंत्र लगाने की मंजूरी दी है। जल्दी ही ये संयंत्र नीमच, देवास, सिवनी और शिवपुरी में लगेंगे। सब कुछ सही रहा तो जल्दी ही इन परियोजनाओं पर काम शुरू हो जाएगा। इन संयंत्रों के शुरू हो जाने पर 1200 मेगावाट की अतिरिक्त बिजली पैदा होगी। भारत की परमाणु ऊर्जा क्षमता पिछले 10 साल में करीब दोगुनी हो चुकी है। 2031 तक इसके तीन गुना होने की उम्मीद है।

हालांकि परमाणु ऊर्जा से उत्पन्न खतरों की आशंकाएं भी एकदम बेबुनियाद नहीं हैं। इसलिए परमाणु संयंत्रों की सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। रूस के चेर्नोबिल और जापान के फुकुशिमा परमाणु संयंत्र में हादसे के बाद इस तरह की चिंताएं लाजिमी हैं। क्योंकि वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद प्राकृतिक आपदाओं के सामने हम बौने हैं। जापान में महज दस सेकेंड के लिए आई सुनामी नामक विराट आपदा ने फुकुशिमा की वैज्ञानिक उपलब्धियों को चकनाचूर कर दिया था। सृष्टि को संजीवनी देने वाले तत्व हवा, पानी और अग्नि जब न्यूनतम मर्यादाओं की सीमा लांघकर भीषण विराटता रचते हैं तो दसों दिशाओं में सिर्फ और सिर्फ विनाशलीला का मंजर दिखाई देता है। इसलिए जरुरी है कि परमाणु रिएक्टर प्रदायक कंपनियों को कड़ी शर्तो के तहत मुआवजे के प्रावधान निर्धारित हों या फिर बीमा कंपनियों को दुर्घटना की स्थिति में क्षतिपूर्ति से जोड़ा जाए।

परमाणु बिजली संयंत्रों में ग्रेफाइट मॉडरेट के रुप में प्रयोग होता है। जिसमें पानी की बहुत थोड़ी मात्रा विलय करने से हाइडोजन और ऑक्सीजन के विखण्डन के समय बहुत अधिक तापमान के साथ उर्जा निकलती है। इस ऊर्जा का दबाव टर्बाइन को तीव्रतम गति से घुमाने का काम करता है। नतीजतन बिजली उत्पन्न होती है। रिएक्टरों के इस उच्चतम तापमान को एक सेंटीग्रेट तक काबू में रखने के लिए रिएक्टरों पर ठंडे पानी की निरंतर प्रबल धाराएं छोड़ी जाती हैं। हालांकि प्राकृतिक अथवा अन्य आपदा की स्थिति में ये परमाणु संयंत्र अचूक कंप्यूटर प्रणाली से संचालित व नियंत्रित होने के कारण खुद-ब-खुद बंद हो जाते हैं। लेकिन इस अवस्था में विरोधाभासी स्थिति यह होती है कि जल से हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का नाभिकीय विखण्डन तो थम जाता है, किंतु रासायनिक प्रक्रियाएं और भौतिक दबाव एकाएक नहीं थमते। गोया, जलधारा का प्रवाह बंद होते ही रिएक्टरों का तापमान 5000 डिग्री सेंटीग्रेट से बढ़कर 10000 डिग्री सेंटीग्रेड तक पंहुच जाता है। यह तापमान जीव-जंतुओं को तो क्या स्टील जैसी ठोस धातु को भी पल भर में गला देता है। इस लिहाज से इन संयंत्रों के संभावित खतरों को एकाएक नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

परमाणु ऊर्जा नागरिक उत्तरदायित्व अधिनियम- अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा के कार्यकाल के दौरान छह साल से अटके असैन्य परमाणु ऊर्जा अनुबंध पर समझौता नरेंद्र मोदी के पहले कार्यकाल की शुरुआत में ही हो गया था। मोदी की वाकपटुता के चलते ओबामा अमेरिका न्यूक्लियर मैटिरियल ट्रैक करने की विवादास्पद मांग से पीछे हट गए थे। इसी वजह से दोनों देशों के बीच यह समझौता रुका हुआ था। इस करार की बड़ी सफलता यह रही कि भारत को झुकना नहीं पड़ा और अमेरिका संतुष्ट हो गया था। इस मुद्दे के सिलसिले में दोनों देशों ने चतुराई यह बरती कि परमाणु ऊर्जा नागरिक उत्तरदायित्व अधिनियम में संशोधन की जरूरत नहीं पड़ी। इस परमाणु करार को अमल में लाने के बाबत सबसे बड़ी बाधा इस कानून का उपबंध 17 था। इसमें प्रावधान है कि यदि अमेरिकी उपकरणों के कारण भारत में कोई त्रासदी होती है तो परमाणु संयंत्र प्रदाता कंपनी को नुकसान की भरपाई करनी होगी। जाहिर है, यह शर्त दुर्घटना होने की स्थिति में आपूर्तिकर्ता को सीधे-सीधे जिम्मेदार ठहराती है। इसीलिए 2008 में इस समझौते के हो चुकने के बावजूद कोई विदेशी परमाणु ऊर्जा कंपनी भारत नहीं आई। जबकि डॉ मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार ने इस करार को लागू करने के लिए सरकार ही दांव पर लगा दी थी। इस कानून में संसद में वामदलों की मांग के चलते यह कठोर शर्त जोड़ी गई थी।

इस शर्त को शिथिल किए जाने के सिलसिले में अमेरिका और फ्रांस जैसे देशों का कहना था कि भारत वैश्विक नियमों का पालन करे। इन नियमों के तहत दुर्घटना की प्राथमिक जिम्मेदारी संचालित कंपनी की होती है। इस क्रम में भारत की दुविधा यह थी कि हमारे यहां सभी परमाणु संयंत्रों का संचालन सरकारी कंपनी 'भारतीय नाभिकीय ऊर्जा निगम' करती है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय नियमों का पालन करने का मतलब था, दुर्घटना की स्थिति में सरकार को मुआवजे की अदायगी झेलने की मजबूरी उत्तरदायित्व कानून में एक अन्य विवादास्पद शर्त दुर्घटना के समय असीमित जिम्मेदारी की भी जुड़ी थी। इस षर्त की वजह से अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा कंपनियों को बीमाकर्ता कंपनी तलाशने में मुश्किलें पेश आ रही थीं क्योंकि कोई भी बीमा कंपनी परमाणु संयंत्रों से जुड़ी दुर्घटना का संपूर्ण बीमा भार झेलने का जोखिम नहीं उठाती। दरअसल ऐसा इसलिए है, क्योंकि परमाणु दुर्घनाएं इतनी बड़ी और व्यापक हो सकती हैं कि कोई एक दो बीमा कंपनियां इसकी भरपाई कर ही नहीं सकतीं। रूस के चेर्नोबिल और जापान के फुकुशिमा में घटी परमाणु दुर्घटनाएँ इसकी बानगियां हैं। इस नजरिए से लघु परमाणु ऊर्जा संयंत्र भविष्य में उपयोगी साबित हो सकते हैं।

मुद्दा

अमित राव पवार
युवा लेखक

लव जिहाद: एक सांस्कृतिक युद्ध या सामाजिक चुनौती

भारत एक विविधताओं से भरा देश है, जहां अनेक धर्म, संस्कृतियाँ और परंपराएं सह-अस्तित्व में रही हैं। किन्तु विगत कुछ वर्षों में 'लव जिहाद' एक गंभीर और विवादित सामाजिक विषय बन कर उभरा है। यह न केवल हिंदू समाज की महिलाओं की अस्मिता से जुड़ा हुआ मुद्दा है,बल्कि इससे जुड़ी घटनाएं परिवार, संस्कृति और समाज की बुनियाद को भी प्रभावित करती हैं। यह आलेख इसी विषय पर गहराई से प्रकाश डालता है।

आज से लगभग 5100 वर्ष पूर्व जब कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था,तब अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में प्रवेश कर धर्म, संस्कृति और न्याय के लिए वीरगति प्राप्त की थी। आज ठीक उसी प्रकार हिंदू समाज की बेटियाँ एक ऐसे मानसिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक चक्रव्यूह में फँसी हुई हैं, जिसे 'लव जिहाद' कहा जा रहा है। इसमें फर्क केवल इतना है कि अभिमन्यु ने धर्म के लिए युद्ध लड़ा और लव जिहाद में धर्म को ही निशाना बनाया जाता है।

लव जिहाद क्या है?- लव जिहाद एक ऐसी संगठित मानसिकता और साजिश है, जिसमें एक समुदाय विशेष के पुरुष हिंदू लड़कियों को प्रेम के जाल में फँसाकर धर्मांतरण के लिए प्रेरित करते हैं। इसका उद्देश्य न केवल उनके जीवन को बर्बाद करना होता है, बल्कि हिंदू समाज की जड़ों को भी कमजोर करना होता है।

हाल ही में आई फिल्म 'द केरला स्टोरी' इस विषय का एक उदाहरण प्रस्तुत करती है, जिसमें दिखाया गया कि कैसे तीन हिंदू सहेलियों को उनकी एक मुस्लिम मित्र के माध्यम से ब्रेनवॉश कर कट्टरपंथ के रास्ते पर धकेला गया। परिणामस्वरूप, उनका परिवार टूट गया और वे स्वयं भी भयावह अंत को प्राप्त हुईं। यह केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि उन सैकड़ों बेटियों की कहानी है जो इसी तरह के षड्यंत्र का शिकार बनी हैं।

लव जिहाद केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक संकट है। यह हमारे परिवार, धर्म, सामाजिक मूल्यों और संस्कारों पर सीधा आघात है। इसमें न केवल प्रेम को हथियार बनाया जाता है, बल्कि भावनाओं, विश्वास और युवावस्था की नासमझी को भी शोषण का माध्यम बनाया जाता है।

उत्तरदायित्व किसका?- इस समस्या के लिए केवल दूसरे समुदाय को दोष देना पर्याप्त नहीं है। कहीं न

कहीं हमारी बेटियाँ भी इस संकट की भागीदार बन रही हैं। यह आवश्यक है कि माता-पिता अपने बच्चों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षाएँ भी दें। जब लड़कियाँ आत्मनिर्भर, जागरूक और धर्म के प्रति सजग होंगी, तभी वे किसी भी प्रकार के भावनात्मक या मानसिक शोषण से स्वयं को सुरक्षित रख पाएंगी।

हमें यह समझना होगा कि यह युद्ध किसी संगठन या संस्था का नहीं, स्वयं की अस्मिता और सम्मान का है। जब कोई लड़की अपनी मर्यादा की रक्षा नहीं कर पाती, तब उसका पूरा परिवार दांव पर लग जाता है। हमें समाज में जागरूकता लानी होगी, हर घर में इस विषय पर खुलकर बात करनी होगी। यह वैसा ही संक्रमण है जैसा कोरोना था - फर्क बस इतना है कि वह बीमारी छूने से फैलती थी और यह विचारों से।

सरकार ने धर्मांतरण पर सख्त कानून बनाए हैं, किन्तु समाज को भी सजग रहना होगा। जब तक हम स्वयं जागरूक नहीं होंगे,कानून अकेले कुछ नहीं कर सकता। हमें अपनी बेटियों को सिखाना होगा कि उनका शरीर और आत्मा उनका है, और उसकी रक्षा का उत्तरदायित्व भी उन्हीं का है।

आत्मनिरीक्षण- यह सच है कि कुछ मुस्लिम युवकों द्वारा यह रणनीति अपनाई जा रही है, पर यह भी उतना ही सच है कि हमारी लड़कियाँ स्वयं को कमजोर बना रही हैं। कोई भी गैर-मर्द तब तक हमारी बहनों को हाथ नहीं लगा सकता जब तक हम स्वयं उन्हें सशक्त और संस्कारित नहीं बनाते। हमें उन्हें राधा-कृष्ण, सीता-राम,मीरा और झांसी की रानी जैसे पवित्र उदाहरणों से जोड़ना होगा।

क्या 'लव जिहाद' केवल एक पक्ष की करतूत है?- यह प्रश्न आज के सामाजिक विमर्श में अत्यंत आवश्यक हो गया है। क्या यह सत्य नहीं है कि इसमें हमारी अपनी बेटियाँ भी अनजाने में या कहीं-कहीं जानबूझकर भागीदार बन रही हैं? माता-पिता अपने बच्चों, विशेष रूप से बेटियों को शिक्षा दिलाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए घर से बाहर भेजते हैं, ताकि वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकें, सम्मानपूर्वक जीवन यापन करें। परंतु दुःखद यह है कि कई बार वही बेटियाँ प्रेमजाल में फँसकर न केवल अपना भविष्य संकट में डालती हैं, बल्कि अपने माता-पिता की प्रतिष्ठा और विश्वास को भी आघात पहुँचाती हैं।

19-20 वर्ष की आयु की ये बालिकाएँ यदि अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहें, अपने जीवन को रचनात्मकता और आत्मसम्मान की दिशा में आगे ले जाएँ, तो शायद कोई भी ताकत उन्हें भ्रमित नहीं कर सकती। लेकिन जब यह उम्र केवल बॉयफ्रेंड और टाइमपास की गलियों में खो जाती है,तब वह निर्णय लेने की परिपक्वता और आत्म-संरक्षण की चेतना धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

कोई भी परिवार अपनी बेटी को यह शिक्षा नहीं देता कि वह किसी अनजान पुरुष से इतना जुड़ जाए कि आत्मा और शरीर तक सौंप दे। चाहे वह लड़का किसी भी धर्म का हो, सवाल यह है कि हमारी बेटियाँ अपनी अस्मिता किसी के भी हाथ में क्यों सौंप रही हैं? कैसे कोई अपरिचित व्यक्ति उनका विश्वास, प्रेम, संवाद और अंततः उनके जीवन पर अधिकार कर लेता है?

यह वही भारत है जहाँ रानी पद्मावती ने अपनी शुचिता की रक्षा हेतु अग्नि को गले लगाया था। यह वही धरती है जहाँ सीता का आदर्श आज भी लाखों बेटियों के लिए पवित्रता और मर्यादा का प्रतीक है। हम उसी परंपरा को भूलकर आज अपने आत्मसम्मान को स्वयं ठुकरा रहे हैं।

'लव जिहाद' केवल एक धार्मिक षड्यंत्र नहीं है,यह उस सामाजिक और वैचारिक कमजोरी का परिणाम भी है, जहाँ बेटियाँ अपने आत्मबल को खो रही हैं। यदि कोई लड़की स्वयं तटस्थ और दृढ़ न हो, तो फिर कोई दूसरा उसकीमर्यादा की रक्षा कैसे करेगा? यह केवल कानून या सरकार का मामला नहीं,यह समाज और परिवार के भीतर की वैचारिक पराजय भी है।हम अपने रिश्ते के लिए मर्यादित होते है किंतु वे अपने रिश्ते के लिए मर्यादित नही।ये भी एक बड़ा अंतर लव जिहाद का दिखाई देता है।

यह प्रश्न केवल प्रेम की आड़ में होने वाली साजिशों का नहीं है, बल्कि यह भी है कि वह प्रेम आया कहाँ से,बढ़ा कैसे,और इस कदर गहरा कैसे हो गया कि आत्मा और अस्तित्व तक को किसी और के हवाले कर दिया गया।

लव जिहाद कोई मामूली समस्या नहीं, यह एक सामाजिक-सांस्कृतिक युद्ध है। हमें इसमें सजगता, आत्मबल,धर्म और न्याय के साथ उतरना होगा। अगर हमने समय रहते उचित निर्णय नहीं लिया, तो यह रोग हमारी सभ्यता और संस्कृति को खोखला कर देगा। अतः आज आवश्यकता है कि हम अपनी बेटियों को धर्म,संस्कृति, शिक्षा और आत्मरक्षा से सज्ज करें,उन्हें मजबूत बनाएं ताकि कोई भी छल-कपट उन्हें छू भी न सके। तभी हम इस युद्ध में विजय प्राप्त कर सकेंगे।

हाई-वे पर हाई सोसायटी

कटाक्ष

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल
लेखक व्यंग्यकार हैं।

हाई-वे पर हाई सोसायटी की हाई लेबिल की एक्टिविटीज़ हो रही हैं। उसकी उपयोगिता में दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ोतरी हो रही है। इससे हाई वे की उपयोगिता में चार चांद भी लग गये हैं। अब चांदनी चार गुना होगी तो किसका मन न मोह लेगी? कसूर चांदनी का और दोष आदमी का? ये क्या बात हुई? बात कुछ हजम नहीं हुई।

आवागमन के लिए निर्मित सहज सुलभ हाई वे पर युद्धक विमान उतरे तो एक कीर्तिमान बन गया। चारों ओर नाम हो गया। अब नित नवीन सांस्कृतिक आयोजन भी सम्पन्न हो रहे हैं। इससे भी चारों ओर नाम हो रहा है। काम की भूरि भूरि प्रशंसा हो रही है। एक नई चेतना जन जन में आ रही है। एक नई जागरुकता का दूर दूर विस्तार हो रहा है। नए भारत में हाईवे के नूतन उपयोग से हम अभिभूत हैं। सलाम इंडिया!

अपनी रोज की ज़िन्दगी से ऊबे लोग इन्हें लाइव देखना चाहते हैं। इसलिए आम जन की यही पुकार है कि सड़क परिवहन मंत्री हाई वे पर उच्च क्वालिटी के कैमरे लगवायें और उनका सीधा संबंध दूरसंचार विभाग में रजिस्टर्ड सभी इलेक्ट्रानिक मीडिया चैनलों के ब्रॉडकास्टिंग रूम से हो। इससे चैनलों को जो पैसा दिया जा रहा है वह कुछ वसूल होगा और आम जन न्यूज़ में भी आनंद का अनुभव कर सकेंगे। इसके अलावा यदि कैमरे अधिकतम मेगा पिक्सल के नाइट विज़न वाले होंगे तो सोशल मीडिया में भी बेहतर क्वालिटी की वीडियो क्लिप देखने को मिलेंगी।

तमाम तरह की अफवाहों के बीच एक जानकारी यह भी सामने आई है कि हाईवे का उदघाटन बहुत दिनों से प्रतीक्षित था और सड़क परिवहन विभाग को मंत्री जी से समय नहीं मिल पा रहा था। इसलिए स्थानीय लोगों के दवाब में शीघ्र उद्घाटन हेतु स्थनीय प्रतिनिधियों को ऐसा करना पड़ा ताकि आवागमन शुरू हो सके।इसके पीछे मात्र सड़क के उद्घाटन की मंशा थी।

इस बारे में जब प्रदेश अध्यक्ष से पूछा गया तो उन्होंने साफ कहा कि पारिवारिक संस्कारों का पार्टी के संस्कारों से कोई घालमेल नहीं होना चाहिये। ये कदापि सहन नहीं किया जायेगा।किसी को भी पार्टी के संस्कारों में पारिवारिक संस्कार मिलाने की इजाजत नहीं है। यदि किसी ने ऐसा किया तो उसके खिलाफ कठोर कार्यवाही की जायेगी।

इस बारे में अखिल भारतीय श्वान संघ के अध्यक्ष ने भी प्रेसनोट जारी कर अपने संगठन की ओर से आपत्ति दर्ज कराई है कि श्वान सुलभ क्रीड़ाओं पर उनके जाति समूह का कापी राइट है।उनके मौलिक अधिकारों पर यदि कोई आंच आई तो वह इसे सहन नहीं करेंगें। वह देश भर में आंदोलन चलायेंगे। सरकार को इसके दुष्परिणाम भुगतने होंगे।

इस मुद्दे पर बहस के दौरान एक मीडिया चैनल पर ऐंकर ने विषय विशेषज्ञ के रूप में बैठे सज्जन से सवाल किया तो उन्होंने कहा कि इसे बारे में अलग अलग राय सामने आ रही हैं। अलग अलग लोगों की अलग अलग आयु वर्ग की। हम प्रतीक्षा कर रहे हैं कि सेंसर बोर्ड इस पर क्या निर्णय लेता है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुरेश उपाध्याय
लेखक व्यंग्यकार हैं।

जुबान से छूटा तीर, घाव करे गंभीर

रपट हो, काई हो, चिकनाई हो तो किसी के भी फिसलने की सम्भावना हो सकती है और फिसलने का दोष परिस्थिति को दिया जा सकता है। यदि बेपरवाही इससे जुड़ जाए तो फिसलना लगभग तय है और फिर दोष परिस्थिति से लापरवाही पर आ जाता है। फिसलने पर चोंट की गम्भीरता गिरने के कोण (एंगल) पर निर्भर करती है। फिसलने पर चोंट न लगे और किसी की निगाह न पड़े तो गिरने वाला इधर-उधर देखकर झट से कपड़े झटककर आगे की राह चल देता है। यदि किसी की निगाह पड़ जाए तो ऐसे में मुस्कराके तेजी से आगे बढना ही उचित प्रतीत होता है। थोडी चोंट में सहानुभूति से काम चल जाता है और सहानुभूति जताने वाले तो बहुतायत में उपलब्ध होते हैं। लेकिन गम्भीर चोंट में सहयोग की जरुरत पड़ सकती है, वैसे तो मददगार मिल ही जाते हैं लेकिन प्रतिकूल परिस्थिति में सहयोग में डर का भाव असहाय अवस्था में छोड़ने का बायस बन सकता है।

फिसलने की आशंका में शुभचिंतक दार्शनिक अंदाज में सचेत करते रहते हैं - ' ऐ भाई, जरा देख के चलो / आगे ही नही / पीछे भी / दाए ही नहीं / बाए भी / ऊपर ही नहीं / नीचे भी। फिर भी जीवन में फिसलना / गिरना चलता रहता है। अगर कोई विशेष प्रयोजन से फिसलने की ठान ही ले और प्रत्यक्षदर्शी को अग्रीम में समझाइश व चेतावनी दे - 'आज रपट जाए तो हमें न उठईयो / हमें जो उठइयो तो खूद भी फिसल जइयो', तो कोई क्या कर सकता है।

संविधान ने अभिव्यक्ति की आजादी दी है तो अपनी राय व्यक्त करने, बयान देने, खंडन - मंडन करने के लिए सभी को विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता है। संवाद, वाद - प्रतिवाद की यह प्रक्रिया लोकतंत्र को जीवंत बनाती है।

बयान दो तरह के हो सकते हैं ङ्क मन से निकले या मस्तिष्क से उपजे। मन से निकले उद्गारो में जो बात मन में होती है वह स्वाभाविक रुप से जुबान पर आ जाती है। मस्तिष्क से उपजे उद्गारो में विचार प्रक्रिया का योगदान होता है। बात जब निकलती है तो दूर तलक जाती है और इन बयानो / उद्गारो की व्याख्या, विश्लेषण, अर्थ, भावार्थ, संदर्भ आदि सामने आते हैं। यह प्रक्रिया संवाद को गति प्रदान करती है। प्रतिक्रिया के तर्क व तथ्य से एक वातावरण निर्मित होता है, जो अनुकूल या प्रतिकूल हो सकता है। अनुकूल स्थिति में तो किसी को भी मुखर समर्थक मिल सकते हैं लेकिन बयान के प्रतिकूल प्रभाव पर अलग थलग पडने के खतरे हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बयानकर्ता की पहली कोशिश - गलत व्याख्या की गई, तोड-मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया, छेड़छाड़ की गई आदि तर्क से माहौल बदलने की होती है। जब बयानकर्ता का दल ही किसी नेता के बयान को उसकी व्यक्तिगत राय कहकर किनारा कर लेता है तो ऐसे में वक्तव्यकर्ता के पास 'जुबान फिसल गई' का तर्क ही शेष रह जाता है। यह अच्छा ही है कि व्यक्तिगत राय पर दलो द्वारा कारवाई की कोई परम्परा निर्मित नहीं हुई है और वकतव्यकर्ता सस्ते में निपट जाता है।

जुबान तो चंचल, चपल व हड्डी विहिन होती है, वह लपलपाती है तो फिसलती भी होगी? वैसे, फिसलने में जुबान का तो कुछ बिगड़ता नही है, अलबत्ता दांतो के बीच फिसलने पर कटने की सम्भावना हो सकती है। जुबान के संदर्भ में कई मुहावरे हमें प्रायः सुनाई देते है यथा बहुत तेज चलती है, कैची की तरह चलती है, मिठी जुबान, कड़वी जुबान, चुभती जुबान आदि - इत्यादि। जबकि जुबान तो निर्दोष होती है, वह मन और मस्तिष्क की तरंगो पर ही थिरकती है। मन और मस्तिष्क की हरकत का खामियाजा जुबान को भुगतना पडता है, बदनामी उसकीहोती है?। जुबान फिसलने का जन्हा तक प्रश्न है - जुबान फिसली, नही फिसली, कैसे फिसली, कितनी फिसली इसका निर्धारण करने की कोई डिवाइस तो अभी तक जानकारी में नही आई है। जुबान फिसलना सुर्खियो में आने का बायस भी बन सकता है और सुर्खियो की उपलब्धियो से इतिहास भरा हुआ है। हो सकता है जुबान फिसली न हो फिसलाई गई हो। मुसीबत गले पड़ने पर वक्ता को 'जीभ फिसलना' एकमात्र बचाव का रास्ता प्रतीत होता हो। वही बता सकता है कि जुबान फिसली, कभी कभी श्रोता को भी जुबान फिसलने का आभास हो जाता है और विशेष श्रोता तो बगैर सुने भी बता देते हैं। जुबान फिसलने के बढते प्रकरणो ने प्रशिक्षण की जरुरत को उभार दिया है, प्रशिक्षण का क्या असर होगा, इसका निर्धारण भविष्य करेगा ही।

कोई कुछ भी कहे, जुबान फिसल गई या फिसलाई गई हो, तीर तो छूट गया है, जितना गहरा घाव करना था, कर ही गया है। घाव पर समय पर मरहम लगाना ही उचित है, स्वतः ठीक हो

विहान के 'स्वप्नयान' में बाल कलाकारों ने फैलाया उम्मीद का उजास

कला संसार

पंकज शुक्ला

भोपाल के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में रविवार की शाम एक अलग तरह की आभा दमक रही थी। यह आभा मंच पर उतरे 35 बच्चों की प्रतिभा और प्रस्तुतियों से उपजी थी। उन बच्चों में उम्र का अंतर था लेकिन जज्बे, प्रदर्शन और लगन में कोई कमतर नहीं था। कहीं कोई प्रतिस्पर्धा थी ही नहीं जो कमतर या श्रेष्ठ होने की बात की जाए। सब एक समूह का हिस्सा थे जो अपनी-अपनी भूमिका निभा रहे थे, बेटन एक दूसरे को थमा कर रिले रेस को पूरी करते सर्जक। यदि कोई प्रतिस्पर्धा थी तो हर बच्चे की अपनी खुद से। किसी को तुतलाती भाषा में भी अच्छा संवाद बोलना था। किसी को नाचना न आते हुए भी नाचना था। किसी का संवाद था ही नहीं लेकिन उसे अपनी उपस्थित दर्शकों को महसूस करवानी थी। किसी को बड़े संवाद को ऐसे बोलना थे कि दर्शक समझ जाए निर्देशक का कौशल।

और यह सब बच्चों को करना था। 3 साल से लेकर 12-13 साल के बच्चों को। और वे कर गए। क्या खूब कर गए कि हर मन आल्हादित था, आश्वस्त था। मंच के सामने बैठे बच्चों के अभिभावक ही नहीं अन्य कला प्रेमी भी।

ये बच्चे भोपाल विहान ड्रामा वर्क्स की ग्रीष्मकालीन नाट्य कार्यशाला के उपरांत अपनी देने मंच पर उतरे थे। विहान का अर्थ होता है भोर का समय। विहान अपनी हर प्रस्तुति के बाद दर्शकों को विभोर करता है। यह अब स्थापित होता जा रहा है। हर बार की तरह इस बार भी विहान ने 'स्वप्नयान' रचा और क्या खूब रचा। 25 मई 2025 की सांझ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के विथि में मुक्ताकाश मंच पर उतरे 'स्वप्नयान' ने अभिभावकों के सपनों को साकार कर दिया तो आगत के कई स्वप्न थमा भी दिए। उम्मीद फिर हरी हुई कि इस दुनिया में खूबसूरत रचा जा रहा है। भोपाल के एक छोटे से हाल में ऐसी आश्वस्ति गढ़ी जा रही है जिस पर हम सब का भविष्य टिका है। एक हौसला जो हमें थक कर बैठने नहीं देता बल्कि उड़ान का जज्बा भरता है। 25 दिन चली नाट्य कार्यशाला का समापन जब मंच पर 'अंधेर जंगल, चौपट्ट शेर' की प्रस्तुति के रूप उतरा तो वहां मौजूद हर मन एक उजले विश्वास से भर गया। यह विश्वास कि दुनिया में कुछ भी हो जाए, कितना ही बड़ा संकट हो, सृजन ही सहारा रहेगा।

मैं बार-बार आश्वस्ति की बात इसलिए कह रहा हूं कि हम अपने समय का सबसे उथलपुथल भरा दौर जी रहे हैं। ऐसे समय में गहरी रात्रि से घबराया मन 'विहान' की तरफ ही तो देखेगा न, भोर के उजास की ओर।

उस मंच में मेरा बेटा ही नहीं था बल्कि मेरे मित्रों के बच्चे भी थे। मैं सभागार में बैठा-बैठा सुन रहा था, देख रहा था, अपने बच्चों के अभिनय से, उसे अपनी सीमा से पार जा कर बेहतर प्रस्तुति देते देख अभिभूत हो रहे माता-पिता अन्य बच्चों के कौशल को देख गदगद थे। अंकों की प्रतिस्पर्धा वाले माता-पिता वहां थे ही नहीं। प्रतिस्पर्धा के युग में परस्परता की उड़ान ही तो 'विहान' है। हमारे समय की भोर।

एक और बात बताऊं मेरी तरह, कई अभिभावकों ने यह गौर किया होगा। मंच पर एक नन्ही बच्ची थी पाखी। सबसे कम उम्र की। शायद तीन साल। या उतने भी नहीं। वह मुझे तब दिखाई दी थी जब मंच पर दीपप्रज्ज्वलन हो रहा था और वह जवनिका से झांक रही थी। वह वहां जमीन पर ही लोट गई। मैं मुस्कुरा दिया था।

फिर पूरे समय मैंने उसे मंच पर पाया। कभी नृत्य करते बच्चों के साथ तो कभी मंच पर नाटक चल रहा है लेकिन उसे सबसे दूर किनारे खड़े पाया। जब दृश्य बदल रहा था तब सब बच्चे नैपथ्य में जा रहे थे और वह वहीं मंच पर ही बैठ गई। वह पूरे समय मंच पर बनी रही। अपने अभिनय, अपने कौशल के साथ। उसका कोई संवाद नहीं था, लेकिन वह मंच पर थी। उसका मन नहीं था तो कोई एक्ट नहीं करना था लेकिन वह मंच से भागी नहीं। डरी नहीं। ठहरी रही क्योंकि उसे यही सीख मिली थी।

नाटक की प्रस्तुति के पहले भोपाल का मौसम बदल चुका था। हम सभी घबरा रहे थे। नवतपा में काले बादल। खुला मंच और नन्हे कलाकार। हे प्रभु, रहम।

ऐसी ही बातों के बीच देवधर ने कहा, 'ममा, मेरी श्वेता मैम ने कहा है, बादल गरजे, आंधी आए या पानी गिरे। हमें घबराना नहीं है। नाटक करते जाना है। बारिश हो भी गई तो क्या हम तो नाटक करते रहेंगे।'

मैं हैरत में था और जब मंच पर पाखी को देखा तो महसूस हुआ श्वेता केतकर मैम का मैसेज बच्चों ने कैसे ग्रहण किया है। देवधर ने ही मुझे बताया कि निर्देशक सौरभ अनंत ने सब बच्चों की तरह पाखी के लिए भी ड्रेस बनाने के लिए कहा था। मतलब सब जानते थे कि वह मंच पर कितना कर पाएगी लेकिन उसे होना था और वह रही।

यह सामूहिकता ही तो विहान ड्रामा वर्क्स की ताकत है, इसी के दम पर तो वह कमाल रचता है।

मित्र सीमा-सुनील मिश्र की बेटी अरणी ने तो निःशब्द कर दिया। डेढ़ दिन से जारी तेज बुखार, लगातार पेट दर्द, डिहाइड्रेशन ने उसे खड़े रहने की ताकत भी छीन ली थी। मगर, वह आई। आई ही नहीं बल्कि मंच पर ऐसी उपस्थिति कि कोई जान ही न सका, भीतर नन्ही किस तकलीफ को परास्त कर रही है।

मुझे अपने शिक्षकों की सारी बातें याद आईं और मैं उन सूत्रों को यहां फलीभूत होते देख नतमस्तक था।

मित्र आशीष गोस्वामी की बेटियों ईशा गोस्वामी और ग्रेसी सारे बच्चों की दीदी नहीं टीम में अनुशासन, स्नेह और देखभाल का उदाहरण हैं।

मित्र चानी-किंशुक की बेटियों मीरा और गौरी को अभिनय करते देख लगता है, अपने आसपास कितना सुंदर तत्व बसा हुआ है। कौन जानेगा कि परिपूर्ण भाव विन्यास पेश कर ही गौरी पहली बार मंच पर उतरी है।

लगता है, यहां नहीं होते तो जान ही नहीं पाते कि हमारे आसपास के बच्चे कितनी प्रतिभा, कितने कौशल और कितनी लगन के धनी हैं।

अंत में चलते, चलते, मैंने अंकित पारोचे सर से कहा, आपका परिश्रम रंग लाया। वे बोले, 'परिश्रम कहां सर, हम तो आनंद से करते हैं।'

यही तो विहान की ताकत है, कला की ताकत।

पूरी विहान टीम में किस-किस का नाम लूं? हम घर में दो बच्चों को संभाल नहीं पाते। उन्होंने 35 बच्चों को पूरे 25 दिन संभाला। संभाला ही नहीं तराशा। सब बच्चों को एक जैसा नहीं, जो जैसा है, जैसे हुनर वाला वैसा तराशा।

यह केवल समर क्लास नहीं है जो काम खत्म और छुट्टी। मैंने देखा कि जो बच्चे पिछली कार्यशालाओं में साथ थे और अब बड़े हो चुके हैं, वे भी नैपथ्य में दायित्व संभाल रहे थे। उन्हें विहान ने बुलाया नहीं था, वे खुद आए थे, अपनी जवाबदेही चिन्ह कर।

यही जुड़ाव ही तो विहान की ताकत है।

यहां मुझे अब्राहम लिंकन का खत याद आता है जिसमें वे लिखते हैं, प्रिय शिक्षक, मेरा बेटा आज से स्कूल की शुरुआत कर रहा है. इस जीवन को जीने के लिए उसे विश्वास, प्रेम और साहस की जरूरत होगी। तो प्रिय शिक्षक, क्या आप उसका हाथ पकड़कर उसे वह सब सिखाएंगे, जो उसे जानना चाहिए, जो उसे सीखना चाहिए। उसे सिखाएं मनुष्यों के साथ नरमी और कोमलता से पेश आना। उसे कठोर लोगों के साथ थोड़ा सख्त होना भी सिखाएं। यदि आप कर सकते हैं तो उसे सिखाएं कि जब वह दुख में हो कैसे मुस्कुराए। उसे सिखाएं कि आंसुओं में कोई शर्म की बात नहीं है। उसे अपने विचारों में विश्वास करना सिखाएं, भले ही हर कोई उसे गलत क्यों न कह रहा हो। मेरे बेटे को यह शक्ति देने की कोशिश करें कि जब सब लोग एक दिशा में जा रहे हों तो वह भीड़ के पीछे न चले।

विहान ने यह बात समझी है ... सौरभ सर की दृढ़ता, हेमंत सर की कोमलता, श्वेता केतकर की कला बारीकियां, अंकित सर की विविधता और सर्वश्री अंश जोशी, रुद्राक्ष भायेरे, ईशा गोस्वामी, ग्रेसी गोस्वामी, दीपक यादव, रवि अहिरवार, नवीन मिश्रा, शिव मोहन यादव, नीरव पाण्डेय, निकिता कटारिया, आरती धुर्वे, अभय शर्मा, आयुष लोखंडे, राहुल सेन, विवेक धाकड़ की एकजुटता, समर्पण और लगन विहान की उड़ान है।

मंच पर दाहिने साजिंदे बैठे थे। इनमें सुश्री तेजस्विता अनंत भी थीं। जिस तरह बच्चे अपनी सीमाओं से परे जा कर विस्मयजनक प्रदर्शन करते हैं हमने देखा है कि उसी तरह तेजस्विता ने भी नाम के अनुरूप अपने तेज से सारी बाधाओं व कष्टों को परे हटा कर अपनी गाढ़ी उपस्थिति रचना सीख लिया है।

मुझे अक्सर लगता है कि विहान जैसी संस्थाओं से हमारी अपेक्षाएं तो बहुत होती है लेकिन उनके प्रति हमें या समाज को जितना करना चाहिए उतना हम करते नहीं है। अल्प संसाधनों के साथ आखिर ऐसी संस्थाएं चलेंगी कैसे?

ऐसे में सम्मानीय रघुराज सिंह और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय का जिक्र करना भी आवश्यक समझता हूं जिन्होंने विहान को आवश्यक साथ दिया।

यहां लिखी गई बातें एक भावुक मन की प्रतिक्रिया या एक कृतज्ञ पिता का बयान लग सकती है क्योंकि विहान की जिन विशिष्टताओं का मैंने उल्लेख किया वे तो सदियों से श्रेष्ठता का पैमाना रही हैं। इन्हीं पर खुद को परिष्कृत कर, मांज कर, खरा साबित कर कई संस्थाएं और व्यक्ति कार्य कर रहे हैं।

लेकिन विहान के संदर्भ में एक और विशिष्टता है जो इसे थोड़ा आगे रखती है। वह है सातत्य। निरंतरता के बिना हर श्रेष्ठतर कार्य भी समय के पहले व्यर्थ हो जाता है। इस निरंतरता को देख ही मुझे समझ आता है कि क्यों सौरभ अनंत को कुँवर नारायण की यह कविता पसंद है-

इतना कुछ था दुनिया में
लड़ने-झगड़ने को
पर ऐसा मन मिला
कि ज़रा-से प्यार में डूबा रहा
और जीवन बीत गया...

गहरे निशा काल में विहान (भोर) से हमारा मन ऐसा ही लगा रहे और जीवन बीत चले यूं ही सुंदर-सुंदर रचते हुए।

एक म्यान, दो तलवारें: शौर्य की अद्वितीय मिसाल थे महाराणा प्रताप

महाराणा प्रताप जयंती पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अपनी वीरता, स्वाभिमान, दृढ़ संकल्प और त्याग से इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कराने वाले हिन्दू हृदय सम्राट वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप 16वीं शताब्दी के ऐसे कुशल वीर योद्धा थे, जिन्होंने विभिन्न युद्धों में अपने अदम्य साहस का प्रदर्शन किया। अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए उन्होंने अपने जीवनकाल में हमेशा मुगलों को समय-समय पर दांतों चने चबाने पर विवश किया। दरअसल मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप ऐसे महान् वीर और निर्भीक शासक थे, जिन्हें मुगलों का शासन कदापि स्वीकार नहीं था। मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा राणा उदय सिंह और महारानी जयवंता बाई के ज्येष्ठ पुत्र महाराणा प्रताप बचपन से ही घुड़सवारी, तीरंदाजी और युद्ध कला में भी पारंगत थे। उनकी वीरता से भारत भूमि तो गौरवान्वित हुई ही, मेवाड़ की वह शौर्य-भूमि भी धन्य हुई, जहां उन्होंने जन्म लिया था। इतिहासकार महाराणा प्रताप को ऐसा योद्धा मानते हैं, जिनके युद्ध कौशल के दुश्मन भी कायल थे और इसीलिए प्रायः दुश्मन भी उन्हें सलाम करते थे। मेवाड़ की धरती को मुगलों के आतंक से बचाने के लिए उन्होंने अनेक लड़ाईयां लड़ी, जिनके कारण ही उनका नाम पराक्रमी, शूरवीर, साहसी, महान राष्ट्रभक्त और एक वीर सम्राट के रूप में इतिहास के पन्नों में अजर-अमर हो गया। युद्ध कला और नीति निर्माण में निपुण महाराणा प्रताप की शौर्य गाथाएं मेवाड़ में तो आज भी लोकगीतों के माध्यम से बताई जाती हैं। इन्हीं हिन्दू हृदय सम्राट महाराणा प्रताप की जयंती हिंदी कैलेंडर के अनुसार इस वर्ष 29 मई को मनाई जा रही है, जिसे लेकर मेवाड़ में एक सप्ताह पहले ही कार्यक्रम शुरू हो गए थे। महान राजपूत शासक मेवाड़ के 13वें राजा महाराणा प्रताप का जन्म 1540 में राजस्थान के मेवाड़ में ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि के दिन पुष्य नक्षत्र में हुआ था। बचपन में उन्हें कीका के नाम से पुकारा जाता था और उनका राज्याभिषेक गोगुंदा में हुआ था। दरअसल बचपन में महाराणा प्रताप का जीवन काफी समय तक भीलों के साथ भी बीता। भील उस समय अपने पुत्र को कीका कहकर संबोधित करते थे, इसीलिए महाराणा प्रताप को भी कीका कहकर संबोधित किया जाता था। महाराणा प्रताप की शौर्य गाथाओं से तो हालांकि आज की पीढ़ी भी परिचित होगी ही लेकिन यह तथ्य कम लोग ही जानते होंगे कि युद्ध के समय वे एक म्यान में एक साथ दो तलवारें रखा करते थे, एक स्वयं के लिए और दूसरी दुश्मन के लिए। यही नहीं, वह एक कुशल योद्धा की भांति कभी किसी निहत्थे पर वार भी नहीं करते थे और जरूरत पड़ने पर म्यान से निकालकर अपनी ही दूसरी तलवार शत्रु को लड़ने के लिए दे देते थे। महाराणा प्रताप जब युद्ध के लिए प्रस्थान करते थे तो 208 किलोग्राम वजनी दो तलवारें, 72 किलोग्राम का कवच और 80 किलोग्राम का भाला अपने साथ लेकर जाते थे।

मुगल सम्राट अकबर भारत के सभी राजा-महाराजाओं को अपने अधीन कर मुगल साम्राज्य की स्थापना कर पूरे हिन्दुस्तान में इस्लामिक परचम फहराना चाहता था। इसीलिए उसने महाराणा प्रताप के मेवाड़ को जीतने के लिए भी हरसंभव प्रयास किए। महाराणा प्रताप के 24 भाई और 20 बहनें थी। उनके एक सौतेले भाई जगमल ने उन्हें धोखा देते हुए अजमेर जाकर अकबर से संधि कर ली थी लेकिन

महाराणा प्रताप अकबर के विशाल साम्राज्य के समक्ष कभी नहीं झुके और उन्होंने जीते-जी अकबर की अधीनता को कभी स्वीकार नहीं किया बल्कि अकबर के साथ कई वर्षों तक संघर्ष किया। उन्होंने देश के पहले स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया और हल्दी घाटी युद्ध में अकबर के साथ वीरतापूर्वक लड़े। महाराणा प्रताप और मुगल बादशाह अकबर के बीच 18 जून 1576 को हल्दी घाटी में भीषण युद्ध हुआ था। उस युद्ध में महाराणा प्रताप को अफगानी राजाओं का समर्थन प्राप्त था। अफगानी हाकिम खान अंतिम सांस तक युद्ध में राजपूतों की ओर से लड़े थे। अन्न की कमी के कारण महाराणा प्रताप की सेना को हार का सामना पड़ा था लेकिन महाराणा प्रताप ने अकबर की 85 हजार सैनिकों वाली विशाल सेना के सामने अपने 20 हजार सैनिकों और सीमित संसाधनों के बल पर स्वतंत्रता के लिए वीरतापूर्वक संघर्ष किया। हालांकि महाराणा प्रताप को उस युद्ध के मैदान से भागने के लिए विवश होना पड़ा था लेकिन उन्होंने जब तक बड़ी संख्या में अकबर की सेना का सफाया करने में कामयाबी हासिल की थी, जिसके चलते उनकी बहादुरी की अपार प्रशंसा हुई। उस युद्ध में जख्मी होने के बावजूद महाराणा मुगलों के हाथ नहीं आए। हल्दी घाटी की हार के बाद भी दृढ़ निश्चयी, पराक्रमी और वीरता की मिसाल महाराणा प्रताप ने हार नहीं मानी और नई रणनीति के तहत मुगलों से लोहा लेने का संकल्प लिया। इसके लिए उन्होंने गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाई और अरावली की पहाड़ियों में शरण ली। वहीं से ही उन्होंने मुगल सेना पर खूब छापामार हमले किए। 12 वर्षों तक उन्होंने वनवास में रहकर ही संघर्ष किया और मेवाड़ को मुगलों से मुक्त कराने का निरंतर प्रयास करते रहे। कहा जाता है कि जंगल में रहते हुए उन्होंने न जमीन पर सोकर रातें गुजारी बल्कि केवल घास की ही रोटी भी खाई लेकिन अकबर के सामने कभी हार नहीं मानी। गुरिल्ला युद्ध के जरिये वे हर पल मुगलों की नाक में नकेल कसते रहे और इस प्रकार उन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। 30 वर्ष लंबे संघर्ष और युद्ध के बाद भी अकबर महाराणा प्रताप को न तो बंदी बना सका और न ही झुका सका।

महाराणा प्रताप के शौर्य की बात हो और उनके प्रिय घोड़े चेतक का जिक्र न किया जाए, यह भी संभव नहीं। दरअसल महान राजपूत योद्धा महाराणा प्रताप का अश्व चेतक भी उन्हीं की भांति वीर योद्धा था, जो दुनिया के सर्वश्रेष्ठ घोड़ों में से एक था। चेतक महाराणा प्रताप के प्रति वफादारी के लिए जाना जाता है, जो एक बेहद बुद्धिमान और ताकतवर घोड़ा था। युद्ध में दुश्मन को चकमा देने के उद्देश्य से उसके मुंह के आगे हाथी की सूंड लगाई जाती थी। एक बार जब मुगल सेना महाराणा प्रताप के पीछे लगी थी, तब चेतक महाराणा प्रताप को अपनी पीठ पर लिए 26 फीट के उस नाले को भी लांघ गया था, जिसे मुगल पार नहीं कर सके। हल्दी घाटी युद्ध में चेतक बुरी तरह घायल हो गया था, जिसके बाद उसकी मृत्यु हो गई और आज उसी युद्धस्थल के पास चेतक का मंदिर बना हुआ है। वीरता, स्वाभिमान और दृढ़ संकल्प के प्रतीक महाराणा प्रताप केवल एक महान योद्धा ही नहीं थे बल्कि एक आदर्श शासक और प्रेरणादायक व्यक्तित्व भी थे, जिन्होंने अपने जीवनकाल में कुंभलगढ़ किले का निर्माण, चावंड, रणकपुर और जगन्नाथपुरी जैसे मंदिरों का निर्माण कराया और गायों की रक्षा के लिए अनेक गौशालाओं की भी स्थापना की। महाराणा प्रताप सदैव भारत के वीर योद्धाओं और देशभक्तों के लिए प्रेरणास्त्रोत बने रहेंगे। युद्ध और शिकार के दौरान लगी चोटों के कारण 56 वर्ष की आयु में 29 जनवरी 1597 को उन्हें वीरगति प्राप्त हुई। महाराणा प्रताप ने कुल 11 शादियां की थी और राजनीतिक कारणों से हुई उन शादियों से उनके कुल 17 बेटे और 5 बेटियां थी। महाराणा प्रताप के वीरगति को प्राप्त हो जाने के बाद राजगद्दी उनकी पहली पत्नी अजाब्दे पंवार के बेटे अमर सिंह को सौंपी गई।

मरती ममता और बिखरती महत्वाकांक्षाएं

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

ईश्वर ने अपने आशीर्वाद के रूप में ममता को सबसे प्यारे उपहार के रूप में दिया है। हम किसी भी उम्र में क्यों न पहुंच जाए। जब भी हमें कोई दुःख होता है तो हमारे मुहं से माँ ही निकलता है। परन्तु आज अपने आस-पास के परिवेश को जब देखें तो हैरानी के साथ दुःख भी होता है कि कैसे हमारे बच्चे अपनी तकलीफ को हम से कह नहीं पाते? जब भी समाचार-पात्र खोले तब एक या दो ऐसे समाचार पढ़ने को मिलते है ,जहां ऐसे किस्से हो जहां किसी कोचिंग इंस्टिट्यूट , स्कूल या किसी भी अकेडमी में बच्चो को मानसिक एवमं शारीरिक उत्पीडन का सामना करना पड़ता है। हर कोचिंग, स्कूल या अकेडमी में इस प्रकार का वातावरण नहीं होता, लेकिन जिन में भी होता है वहां की बातें बाहर आने में बहुत समय लग जाता है और कई बार तो बातें बाहर आ भी नहीं पाती। बहुत बार शिक्षकों के व्यवहार से बच्चे मानसिक रूप से टूट जाते है, पर सवाल यह है कि आखिर वह अपनी बात अपने माता-पिता से क्यों नहीं कह पाते? या माता-पिता ही अपने बच्चो में आ रहे नकारात्मक बदलाव को क्यों नहीं समझ पाते? एक ऐसा समय भी था जब बच्चे अपने परिवार में ही सबसे ज़्यादा सुरक्षित अनुभव करते थे। लेकिन ऐसा क्या हो रहा है कि बच्चे बाहर से उत्पीडन को भी झेल जाते है पर अपने घर पर आकर किसी को कुछ नहीं बताते। अपने भीतर के द्वंद को वह किस प्रकार सहते होंगे, इसका अंदाजा लगाना कठिन है, पर इसका अंदाजा लगाना ही क्यों पड़ रहा है? यह ज्वलंत प्रश्न है लेकिन इसका उत्तर क्या सच में कोई नहीं जानता?

अपने बच्चो को दूसरे बच्चे से अधिक मार्क्स आए, वह हर स्तर पर उतीर्ण ही हो। उसे हर विषय पर दक्षता हासिल हो। ऐसी उम्मीद लगाना गलत नहीं है। पर अपनी उम्मीदों के बोझ में अपने ही बच्चे के कोमल मन को कुचलना गलत है। आजकल लगभग सभी कामकाजी है। अपने काम पर किसी प्रकार की कोई कठिनाई ना आए इसके चलते हम बच्चों को स्कूल के बाद विभिन्न क्लासेज़ में डाल देते है। फिर खुद ही थके-हारे आते है तो बच्चों से क्या ही पूछते होंगे कि वह कैसे है? हाँ हम उन्हें यह जताना कभी नहीं भूलते कि हम उनपर कितना पैसा खर्च कर रहे है। जिसे उन्हें हर जगह सफल होकर चुकाना ही है। कई बार माता-पिता का झगड़ा या बिजी पारिवारिक माहौल बच्चों को अपनी बात कहने से रोकता है। जब उसकी हर बात पर शक करें या उसकी कही बात की परवाह ही न करें या उसकी हर बात की तुलना किसी दूसरे ही बच्चे से करते रहे, उस स्थिति में बच्चे का बचपन ही नहीं खत्म होता बल्कि वह अपने माता-पिता से भी दूर होने लगता है।

बाहर वाले में आपके बच्चे को मानसिक या शारीरिक प्रताड़ना देने की हिम्मत तभी आती है जब उसे यह आभास हो कि आपमें और आपके बच्चे में भावनात्मक दूरीयां है। यह जानना कोई कठिन बात भी नहीं है। बच्चों के हाव-भाव शब्दों के मोहताज नहीं होते। कई बार खामोशी ज़्यादा शोर मचाती है। डरा-सहमा बच्चा दूसरों के लिए निमंत्रण है कि इसका बचपन प्रेम की छाँव से दूर होने के साथ-अपनेपन से भी अछूता है।

यह एक डरावनी दस्तक है। बच्चों के आज का खालीपन उनके आने वाले पूरे जीवन पर प्रश्नचिंह लगा सकती है। उनकी खामोशी किसी ओर के जीवन के लिए वह दस्तक बन सकती है जिसकी गूंज उनके बचपन को खत्म कर देती है। इसलिए अपने जीवन के हर उस ज़रूरी काम पर थोड़ी रोक लगाए और अपने बच्चो को अपने पास आने दें। उन्हें यह अहसास दिलाएं कि वह चाहे कुछ भी करें पर आपके लिए उनका होना सबसे ज़्यादा अहमियत रखता है। उनकी खामोशी को जुबां दें। उनमें आ रहे हर परिवर्तन पर अपनी पैनी नज़र रखें। उनको यह विश्वास हो की वह आपसे कुछ भी कह सकते है। आप यकीन करें आपका दिया यही विश्वास ही उनके बेहतरीन जीवन की सुख नींव रखेगा। तभी न तो उन्हें कोई मानसिक तनाव दे पाएगा, क्योंकि उसे भी पता होगा कि आपके बच्चे पर आपके प्यार का कवच है।

बच्चों ने सीखी मराठी, सिंधी और भारतीय मसालों की भाषाई विविधता

केंद्रीय विद्यालय बैतूल में सात दिवसीय भारतीय भाषा समर कैंप का सफल आयोजन

विद्यार्थियों को सिखाई मराठी भाषा के शब्द, वाक्य और गिनती

बैतूल। पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय बैतूल में 21 मई से 27 मार्च तक सात दिवसीय भारतीय भाषा समर कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप का संचालन विद्यालय के प्राचार्य आरएन पांडेय के सफल मार्गदर्शन में और कार्यक्रम प्रभारी शिक्षिका सीमा साहू के नेतृत्व में किया गया। यह समर कैंप एनसीईआरटी एवं सीबीएसई की मंशा के अनुरूप भारत की भाषाई विविधता को समझने और सीखने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। इसमें विद्यार्थियों के साथ-साथ अभिभावकों की भी सक्रिय भागीदारी रही। शिविर की शुरुआत 21 मई को समारोह पूर्वक हुई। उद्घाटन अवसर पर प्राचार्य आरएन पांडेय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। पहले दिन मराठी भाषा के शब्द, वाक्य और गिनती विद्यार्थियों को सिखाई गई। इसके साथ ही महाराष्ट्र की सांस्कृतिक झलक भी प्रस्तुत की गई। 22 मई को कक्षा छठवीं की छात्रा प्रीति हिरानी के अभिभावकों द्वारा बच्चों को सिंधी भाषा से परिचित कराया गया। उन्होंने सरल वाक्यों का प्रयोग कर संवाद अभ्यास कराया, जिससे बच्चों ने रुचि के साथ भाषा सीखी।

सिंधी भाषा में राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत गीत सिखाया- 23 मई को शिविर में सिंधी भाषा में राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत गीत सिखाया गया और बच्चों ने समूह में गायन किया। 24 मई को भारत के विभिन्न प्रांतों में प्रयुक्त मसालों के नाम विभिन्न भाषाओं में बताए गए। साथ ही मसालों के उपयोग से पारंपरिक भारतीय व्यंजन बनाने की विधि भी विद्यार्थियों ने सीखी। 25 मई का दिन उत्साह से भरा रहा। इस दिन विद्यार्थियों को स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास से अवगत कराया गया। देश भर के स्वतंत्रता सेनानियों के साथ-साथ बैतूल जिले के सेनानियों पर विशेष रूप से चलचित्र दिखाया गया, जिससे विद्यार्थियों को स्थानीय इतिहास की जानकारी प्राप्त हुई। 26 मई को भारत की प्रमुख नदियों और ऐतिहासिक इमारतों पर आधारित गतिविधियाँ आयोजित की गईं। विद्यार्थियों ने विभिन्न भाषाओं में इन स्थलों की जानकारी एकत्रित की और समूह चर्चा में भाग लिया।

मातृभाषा व भारतीय भाषाओं के महत्व को समझाया- समर कैंप का समापन 27 मई को दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति के माध्यम से किया गया, जिसमें सप्ताह भर की गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया। समापन अवसर पर प्राचार्य आरएन पांडेय ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए और मातृभाषा व भारतीय भाषाओं के महत्व को समझाते हुए विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं। सीमा साहू ने सभी सहयोगियों, विद्यार्थियों और अभिभावकों का आभार प्रकट किया, जिनकी सक्रिय भागीदारी से यह समर कैंप पूर्ण रूप से सफल रहा। शिविर के माध्यम से विद्यार्थियों में भारतीय भाषाओं के प्रति रुचि, समझ और सम्मान की भावना विकसित हुई।

नियुक्ति तिथि से सेवा गणना की मांग को लेकर शिक्षकों ने सीएम को सौंपा ज्ञापन

बैतूल। पुरानी पेंशन बहाली राष्ट्रीय आंदोलन बैतूल संगठन द्वारा नवीन शैक्षणिक संवर्ग से जुड़े शिक्षकों की समस्याओं को लेकर सारनी में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पुष्पमाला अर्पित कर सौजन्य भेंट की गई तथा उन्हें ज्ञापन सौंपा गया। संगठन ने मुख्यमंत्री से अनुरोध किया कि नवीन शैक्षणिक संवर्ग के शिक्षकों की सेवा गणना उनकी नियुक्ति तिथि से किए जाने हेतु शीघ्र आदेश जारी किए जाएं ताकि उन्हें पेंशन, ग्रेच्युटी और अवकाश नगदीकरण जैसी सुविधाओं का पूर्ण लाभ मिल सके। ज्ञापन सौंपने वालों में रवि सरनेकर, जिलाध्यक्ष - पुरानी पेंशन बहाली राष्ट्रीय आंदोलन बैतूल, राजेंद्र कटारे, जिला अध्यक्ष - आदर्श शिक्षक संघ बैतूल, राजेंद्र प्रसाद साहू, जिलाध्यक्ष - समग्र शिक्षक संघ, राजू गंगारे, जिला उपाध्यक्ष - आदर्श शिक्षक संघ बैतूल, एवं मनीष नारे शामिल रहे। जिलाध्यक्ष रवि सरनेकर ने जानकारी देते हुए बताया कि अध्यापक संवर्ग की 1 जुलाई 2018 से मध्यप्रदेश राज्य स्कूल शिक्षा सेवा में नवीन शैक्षणिक संवर्ग के रूप में नियुक्ति मानी जा रही है, जिससे अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना युनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) का पूरा लाभ प्राप्त करने के लिए 25 वर्ष की सेवा जरूरी है, जबकि पूर्व में की गई सेवा को गणना में न लेने के कारण नवीन शैक्षणिक संवर्ग के शिक्षक अर्हता पूरी नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने बताया कि 1 अप्रैल 2007 को शिक्षाकर्मी, संविदा शाला शिक्षक और गुरुजी संवर्ग का अध्यापक संवर्ग में संविलयन हुआ था, जिसमें पूर्व सेवा को गिना गया। लेकिन अब जब इन्हीं अध्यापक संवर्ग का नवीन शैक्षणिक संवर्ग में समायोजन हुआ है, तो पूर्व सेवा की गणना नहीं की जा रही है। इससे नवीन शैक्षणिक संवर्ग के शिक्षकों की दोहरी वरिष्ठता प्रचलन में आ गई है ङ्क सेवा लाभ जैसे क्रमोन्नति, पदोन्नति, उच्च पद प्रभार, समयमान वेतनमान में तो नियुक्ति तिथि से सेवा मानी जा रही है, लेकिन आर्थिक मामलों जैसे ग्रेच्युटी, अवकाश नगदीकरण आदि में सेवा की गणना 1 जुलाई 2018 से की जा रही है। रवि सरनेकर ने बताया कि यह अन्याय शिक्षा विभाग के कर्मचारियों में असंतोष पैदा कर रहा है। इस विषय पर उच्च न्यायालय जबलपुर में कई याचिकाएं लंबित हैं, जिनमें कुछ निर्णय शिक्षकों के पक्ष में आए हैं। उच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि नवीन शैक्षणिक संवर्ग के शिक्षक अब शासकीय कर्मचारी हैं और उनकी सेवा की गणना प्रथम नियुक्ति दिनांक से की जानी चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय में भी इसी विषय पर सुनवाई चल रही है और संभावना है कि अंतिम निर्णय शिक्षकों के पक्ष में आएगा। लेकिन उसके पूर्व ही यदि मध्यप्रदेश सरकार स्वयं निर्णय लेकर समस्त सुविधाओं हेतु सेवा गणना प्रथम नियुक्ति तिथि से करने का आदेश जारी कर दे, तो इसका सीधा श्रेय सरकार को मिलेगा और शिक्षा जगत को आंदोलन, हड़ताल एवं न्यायिक प्रक्रियाओं से मुक्ति मिलेगी। ज्ञापन के माध्यम से शिक्षकों ने मुख्यमंत्री से निवेदन किया कि वे शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने तथा शिक्षक समुदाय को न्याय देने हेतु तत्काल प्रभाव से आदेश जारी करने की कृपा करें। शिक्षकों ने आशा व्यक्त की कि सरकार उनके साथ न्याय करेगी और वर्षों से लंबित इस समस्या का स्थायी समाधान निकालेगी। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विधायक हेमंत खंडेलवाल का शिक्षक संघ ने आभार व्यक्त किया।

वन विभाग ने चुनागोसाई गांव में की छापेमारी

दो घरों से अवैध सागौन लकड़ी जब्त, आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। पश्चिम बैतूल वनमंडल के सांवलीगढ़ क्षेत्र में वन विभाग ने चुनागोसाई गांव में अवैध सागौन लकड़ी की सूचना मिलने पर कार्रवाई की। वन विभाग की दो टीमों ने संयुक्त अभियान चलाया। टीमों ने दो स्थानीय निवासियों रामचरण और शिशुपाल के घरों पर छापेमारी की। रामचरण के घर से 0.078 घन मीटर सागौन लकड़ी बरामद हुई। वहीं शिशुपाल के घर

से 0.164 घन मीटर सागौन लकड़ी जब्त की गई। वन विभाग ने दोनों आरोपियों के खिलाफ भारतीय वन अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया है। मामले की जांच जारी है। वन विभाग ने स्पष्ट किया है कि वन अपराधों के खिलाफ कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। विभाग ने आम जनता से वन्य संसाधनों के संरक्षण में सहयोग की अपील की है। साथ ही लोगों से अनुरोध किया है कि वन से जुड़ी किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत नजदीकी वन कार्यालय को दें।

माता रमाई का त्याग समस्त महिलाओं के लिए प्रेरणादायक: नामदेव नागले

माता रमाई भीमराव अम्बेडकर के स्मृति दिवस पर सम्यक बुद्ध विहार बडोरा में कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। माता रमाबाई अंबेडकर के स्मृति दिवस के अवसर पर सम्यक बुद्ध विहार बडोरा बैतूल में स्मृति दिवस कार्यक्रम पूज्य भंते जी दीपांकर के सानिध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भारतीय बौद्ध महासभा राष्टीय संरक्षक महाउपासिका मीरा ताई अंबेडकर के जिलाध्यक्ष अधिवक्ता नामदेव नागले उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि माता रमाई अंबेडकर का त्याग समस्त महिलाओं के लिए प्रेरणादायक है। जिस प्रकार माता रमाई ने बाबा साहब अम्बेडकर को जीवन के हर मोड़ पर सहयोग प्रदान किया और पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त रखा जिसके कारण ही बाबा साहब अम्बेडकर को समाजिक व आर्थिक संघर्ष करने के लिए संबल मिला। माता रमाई के कारण ही बाबा साहब महान् विद्वान बनकर संविधान निर्माता बने हैं।उन्होंने कहा कि माता रमाई को समस्त महिलाएं अपना आदर्श मानकर पुरुष वर्ग के साथ बहुजन महापुरुषों के कांरवा को आगे बढ़ाने में मदद करें। इस अवसर पर विशेष अतिथि अतिथि आयु काशीनाथ वाघमारे ने अपने संबोधन में माता रमाबाई की सोच एवं जीवन संघर्षों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। विशेष अतिथि के रूप में भारतीय बौद्ध महासभा के जिला कोषाध्यक्ष आयु तुलाराम चौकीकर,जिला सचिव श्रामनेर आयु प्रेमलाल अंबुलकर, जिला संघटक श्रामनेर आयु किसोर कुमार पाटिल,तहसील अध्यक्ष आयु मनोहर खातरकर, आयु राजु आठनेरे, आयु सीताराम पाटिल,आयु नरेंद्र नाथ पाटिल, आयु एम पी मासतकर, आयु ओमप्रकाश खातरकर, आयु मनोज अतुलकर, आयु श्याम किशोर पाटिल, आयु जी आर पटेल, रमाबाई उत्थान समिति बडोरा आयु कलसिया बाई पंडाग्रे, आयु जसवंती चौकीकर, आयु मीना पाटिल, आयु पुष्पा पटेल, आयु भागरती डोंगरे, जिला सचिव आयु प्रमिला पाटिल,आयु संगीता मासतकर आयु संगीता खातरकर, आयु नीशा पाटिल ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन आयु तुलाराम चौकीकर ने किया।

सीएम को काले झंडे दिखाने पहुंचे कांग्रेसी गिरफ्तार

बैतूल। सीएम को काले झंडे दिखाने जा रहे करीब 45 कांग्रेसियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने कार्यकर्ताओं को बस में भरकर जेल भेजा है। इस दौरान पुलिस और कार्यकर्ताओं के बीच धक्का-मुक्की भी हुई। सीएम का स्व सहायता समूहों के सम्मेलन में शामिल होने सारणी का दौरा था। दरअसल कांग्रेस ने मुख्यमंत्री के कार्यक्रम में घेराव का ऐलान किया था। पुलिस ने सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर कांग्रेस कार्यकर्ताओं को सलैया गांव में ही रोक लिया। कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच सारणी पहुंचने को लेकर लंबी खींचतान हुई। पुलिस ने कार्यकर्ताओं को मुख्य मार्ग तक जाने की अनुमति दी। वहां पहुंचकर कार्यकर्ता धरने पर बैठ गए। बैतूल टीआई रविकांत डहरिया ने बताया कार्यकर्ता सीएम की यात्रा का विरोध कर रहे थे। इससे शांति व्यवस्था भंग होने की स्थिति में सभी गिरफ्तार कार्यकर्ताओं को बैतूल भेज दिया है। इधर कांग्रेस जिला अध्यक्ष हेमन्त वागद्रे ने कहा कि जिले में भाजपा के जनप्रतिनिधियों की निष्क्रियता और अव्यवहारिक कार्यप्रणाली के चलते नौकरशाही हावी हो चुकी है। प्रशासकीय अराजकता की स्थिति बन गई है। मुख्यमंत्री से इन सभी मामलों पर तत्काल संज्ञान लेने के लिए प्रदर्शन का ऐलान किया था। कांग्रेस अधूरे फोरलेन पर शुरू की गई टोल टैक्स वसूली को लेकर भी विरोध कर रहे थे। कांग्रेस की मांग थी कि जब तक सडक़ पूरी नहीं बन जाती, तब तक टोल वसूली न्यायसंगत नहीं है। इसके अलावा सारणी में रोजगार के नए अवसर सृजित करने और क्षेत्र में बढ़ते अपराध एवं असामाजिक तत्वों को सत्ता से मिल रहे संरक्षण को खत्म किया जाए। वागद्रे ने कहा कि चिचोली और भीमपुर में स्वच्छ भारत मिशन में हुए घोटाले की जांच कर जनपद एवं जिला पंचायत के सीईओ के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जानी चाहिए। जेएच कॉलेज घोटाले में भी अब तक आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हुई है।

नर्मदा पथ सर्वेक्षण, जन जागरूकता यात्रा का समापन यात्रा माखननगर प्रस्थान

सुबह सवेरे सोहागपुर। सोहागपुर माछा से प्रारंभ मां नर्मदा पथ सर्वेक्षण एवं जन-जागरूकता यात्रा का आज सोहागपुर नर्मदा नदी के अंतिम घाट ग्राम पामली , एवं ग्राम रामनगर में चौपाल लगाने के उपरांत समापन किया गया। अब मां नर्मदा पथ सर्वेक्षण यात्रा ने आज सोहागपुर विधानसभा के माखननगर प्रस्थान किया। इसके पूर्व यात्रा में श्रमदान, चौपाल, नर्मदा सेवा समिति गठन के साथ मूंग की फसल को जैविक पद्धति से लगाने के लिए जागरूक किया गया।नर्मदा पथ के किनारे ग्रामों हो रहे मिट्टी के कटाव की विस्तृत जानकारी देकर एवं समाधान की सारगर्भित उल्लेख किया गया। वहीं नर्मदा पथ मार्ग पर परिक्रमावांसियों के लिए रूकने की व्यवस्था को जानना एवं परिक्रमावासियों की सेवा करने वाले स्वयं सेवकों चिन्हित करके उनका सम्मान करना तथा पैदल यात्रा करने वालो को आने वाली समस्या को निकलना कार्य किए गए। उक्त बातें जिला समन्वयक पवन सहगल ने द् कार्यक्रम में दी। जनपद सीईओ संजय अग्रवाल ने जल गंगा संवर्धन के संदर्भ में खेत तालाब एवं उससे निकलने वाली गाद को किसको देना है की जानकारी दी गई। वहीं आपने पानी बचाओं पर कहा कि पानी बचाया जा सकता है। पानी बनाया नहीं जा सकता।इस कारण पानी उचित प्रबंधन करके पानी बचाया जाए। आपने अंत में जल संरक्षण की शपथ दिलाई। विकास खंड समन्वयक किशोर कड़ोले ने समिति का गठन, समस्याओं को नोट करके सर्वे प्रपत्र को भरने की जानकारी दी।गजेंद्र मेंटर ने कार्यक्रम का संचालन एवं घाटों के किनारे कटाव एवं पौधारोपण किए गये वृक्षो की जानकारी दी। मेंटर , सचिन विश्वकर्मा , श्याम सिंह मीना ने प्रथम दिवस यात्रा प्रभारी नियुक्त किए गए। नवांकुर के संदेश मिश्रा, कमल किरार द्वितीय दिवस के प्रभारी नियुक्त किए। यात्रा में छात्र छात्राओं में मंजू पंवार, निशा चौरसिया मेंटर नियुक्त रहे। ग्राम आजेरा, भानपुर ग्राम के प्रभारी अरविंद सिलावट, सोहागपुर यात्रा प्रभारी निर्मल विकास सेवा समिति। कोर रूप में जिला समन्वयक, विकास खंड समन्वयक, हासिल तिलोटिया, शुभम् संकेत, हरिदास अहिरवार थे। 9 ग्राम पंचायतों में यात्रा उत्साह से निकाली गई। सभी स्थानों पर जनपद पंचायत सीईओ संजय अग्रवाल के निर्देश के अनुसार भोजन व्यवस्था की गई थी। माछा में समाजसेवी विशाल गोलानी, सरपंच, प्रस्फुटन से भूपेंद्र ठाकुर, आजेरा सरपंच, सचिव रोजगार सहायक, भानपुर, गलचा से भाई साहब पटेल पूर्व मंडल अध्यक्ष, जितेंद्र विनय सचिव सहसचिव, भटगांव में सरपंच सुधीर ठाकुर ,प्रदीप ठाकुर, सांकला, रेवामुहारी में दयाराम पटेल, विशाल गोलानी व भगवानदास महाराज जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। ईशरपुर में सरपंच, सचिव, व नर्मदा परिक्रमावासियों के लिए सेवा देने वाले सेवकों के साथ , पामली रामनगर में दौलतराम पटेल, समाजसेवी माखनसिंह पटेल, साहाबसिंह पटेल आदि को संत महात्माओं का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। इस यात्रा में मुख्यमंत्री मंत्री सामूदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के छात्र,छात्राओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यात्रा में नवरंग युवा मंडल सोहागपुर, मित्र संघ सोहागपुर, ज्ञान सरोवर वेलफेयर सोसायटी व ग्राम विकास प्रस्फुटन के प्रतिनिधियों के साथ ग्रामीण उपस्थित थे।

आठनेर अस्पताल में 3 जून को लगेगा मोतियाबिंद जांच शिविर

युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल करेगा नेत्र शिविर का आयोजन

बैतूल। युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल एवं चिरायु मेडिकल कॉलेज अस्पताल बैरागढ़ भोपाल के तत्वावधान में संगठन के रजत जयंती स्थापना दिवस वर्ष के अवसर पर आठनेर के सरकारी अस्पताल में 3 जून दिन मंगलवार को सुबह 11.30 से बजे से 2 बजे तक जिला स्तरीय मोतियाबिंद जांच परामर्श एवं ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया गया है। युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल के स्वास्थ्य शिविर प्रभारी ओंकार साहू ने बताया कि शिविर में 60 वर्ष से अधिक उम्र के मरीजों की आंखों की निशुल्क जांच की जाएगी एवं जांच में मोतियाबिंद पाए जाने पर सभी मरीजों के ऑपरेशन चिरायु मेडिकल कॉलेज अस्पताल भोपाल में निशुल्क किए जाएंगे। इस शिविर में मरीजों को आवास व्यवस्था, भोजन व्यवस्था, परिवहन व्यवस्था एवं दवाइयां की व्यवस्था निशुल्क रहेगी एवं शिविर में केवल गंभीर मरीजों के ही परिजनों को मरीज के साथ भोपाल ले जाया जाएगा। शिविर में मरीजों को बस द्वारा सरकारी अस्पताल आठनेर से चिरायु मेडिकल कॉलेज भोपाल ले जाया जाएगा एवं ऑपरेशन के पश्चात मरीज को मुलताई के सरकारी अस्पताल में वापस पुनः वापस लाया जाएगा जहां से वे अपने घर जा सकेंगे। श्री साहू ने जिले वासियों से निशुल्क मोतियाबिंद जांच परामर्श एवं ऑपरेशन शिविर का लाभ लेने का आग्रह किया गया है।

शोभापुर कॉलोनी पाथाखेड़ा में लगेगा रक्तदान शिविर, रक्तदान करने वाले होंगे सम्मानित

बैतूल। जब हमें या हमारे किसी चिर-परिचित को रक्त की आवश्यकता होती है, तो हम बहुत मुश्किलों के बाद रक्त की व्यवस्था कर पाते हैं, क्योंकि आज भी रक्तदान की भ्रांतियों के कारण लोग रक्तदान से परहेज करते हैं। रक्त को किसी कारखाने में तैयार नहीं किया जा सकता, इसे केवल मानव द्वारा ही दिया जा सकता है। रक्तदान के बहुत फायदे हैं। रक्तदान से हार्ट अटैक से बचा जा सकता है। इसी उद्देश्य से जनकल्याण रक्तदान समिति नवदुर्गा मंच द्वारा 29 मई को जैरी चौक, शोभापुर कॉलोनी में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया है। नगर पालिका अध्यक्ष किशोर बर्दे, नगर पालिका उपाध्यक्ष जगदीश पवार शिविर में विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। समिति के राजू भारती, सुरेश नागले, मीत चंदेलकर, राजेश पटैया, शेरू डोंगरे, मनोज लिलौरे, धर्मेंद्र चौधरी, सुधा भाई, गुड्डू सोनी, निर्देश रघुवंशी, राधेश्याम मालवीय, मुकेश झरबाडे, पप्पू उज्जैनवार, फूलचंद पवार ने रक्तदान शिविर में उपस्थित होने की अपील की है। शिविर प्रातः 10 बजे से प्रारंभ होगा।

यदुवंशी महासभा के ब्लॉक अध्यक्ष बने नन्दन यादव

बैतूल। घोड़ाडोंगरी ब्लॉक के मर्दवानी गांव के किसान परिवार से राजनीति में सक्रिय हुए पाढर मंडल अध्यक्ष नन्दन यादव को अखिल भारतीय यदुवंशी महासभा का घोड़ाडोंगरी ब्लॉक अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति महासभा के जिला अध्यक्ष ओमप्रकाश यदुवंशी द्वारा की गई। समाज के प्रति नन्दन यादव द्वारा की जा रही सेवा और कार्यों के प्रति समर्पण को देखते हुए उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। नन्दन यादव ग्राम पंचायत मेढ़ापानी के पूर्व उप सरपंच स्वर्गीय अनिल यादव के पुत्र हैं। वे गांव में ही पदस्थ शिक्षक विनोद यादव के अनुज हैं। वे अपने पिता स्वर्गीय अनिल यादव के पदचिन्हों पर चलते हुए समाज सेवा और राजनीति के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। मर्दवानी गांव लगभग 1500 की आबादी वाला, घोड़ाडोंगरी ब्लॉक का अंतिम गांव है। यहां का निवासी होने के बावजूद नन्दन यादव ने सामाजिक कार्यों और राजनीति में अपनी अलग पहचान बनाई है। खेती किसानी से जीवन की शुरुआत करने वाले नन्दन यादव को पहले भारतीय जनता पार्टी के घोड़ाडोंगरी मंडल में किसान मोर्चा का उपाध्यक्ष बनाया गया था। इसके पश्चात पाढर मंडल के गठन पर वे पाढर मंडल के पहले किसान मोर्चा अध्यक्ष बने। हाल ही में भाजपा जिला एवं प्रदेश संगठन ने उन्हें भाजपा मंडल पाढर का अध्यक्ष नियुक्त किया है। अब समाज में उनकी सक्रियता और सेवा को देखते हुए अखिल भारतीय यदुवंशी महासभा ने उन्हें घोड़ाडोंगरी ब्लॉक अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी दी है। इस नियुक्ति के बाद स्वजातीय बंधुओं, शुभचिंतकों और इष्ट मित्रों ने उन्हें शुभकामनाएं और बधाई प्रेषित की हैं।

श्री सुखमणि साहिब जी के पाठ से गूंजा गुरुद्वारा परिसर, 30 मई को होगा मुख्य आयोजन

बैतूल। धन धन सतगुरु श्री गुरु अर्जन देव जी महाराज के शहीदी गुरुपुरब 30 मई के पावन अवसर पर बैतूल के गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा परिसर में सेवा और श्रद्धा का एक अद्वितीय संगम देखने को मिल रहा है। सिख पंथ के पांचवे गुरु तथा शहिदों के सरताज गुरु अर्जन देव जी महाराज की शहादत को समर्पित यह भक्ति से परिपूर्ण आयोजन बीते एक माह से लगातार चल रहा है। गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा बैतूल द्वारा आयोजित इस सेवामयी कार्यक्रम में सिख, पंजाबी एवं सिंधी समाज की समस्त साध संगत हर शाम 5.15 बजे से एकत्र होकर श्री सुखमणि साहिब जी का पाठ कर रही है। श्रद्धालुओं का यह सेवाभाव और गुरु के प्रति समर्पण आयोजन को दिव्य स्वरूप प्रदान कर रहा है। श्री सुखमणि साहिब जी का पाठ शांति, मानसिक स्थिरता और परमात्मा से जुड़ाव की अनुभूति कराता है। बड़ी संख्या में संगत प्रतिदिन इस पाठ में भाग लेकर गुरु घर की अपार खुशियां और आशीष प्राप्त कर रही है। यह आयोजन गुरु अर्जन देव जी महाराज के त्याग, बलिदान और उनकी निर्मल वाणी को समर्पित है, जो समाज को सहनशीलता और मानवता की सेवा का मार्ग दिखाती है। आज 29 मई की रात को बच्चों द्वारा विशेष कीर्तन दीवान आयोजित किया जाएगा। 30 मई शुक्रवार को शहीदी गुरुपुरब के दिन मुख्य आयोजन होगा, जिसमें पहले सुबह संगत द्वारा रखे गए श्री सहज पाठ की पूर्णता सुबह 11 बजे होगी। इसके बाद सुबह 11.15 बजे से दोपहर 12.15 बजे तक विशेष कीर्तन दीवान और अरदास का आयोजन होगा। इस दिन विशेष सेवा के रूप में ठंडे शरबत का वितरण होगा। पहली छबील सेवा सुबह 11.30 बजे से दोपहर 2 बजे तक गुरुद्वारा परिसर में होगी, वहीं दूसरी छबील सेवा दोपहर 1 बजे से शाम 4 बजे तक गंज मुख्य बस स्टैंड पर आयोजित की जाएगी।।गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा प्रबंधक समिति ने समस्त संगत से इस पावन आयोजन में सहभागी बनकर गुरु साहिब का आशीष प्राप्त करने का विनम्र अनुरोध किया है।

संक्षिप्त समाचार

अपराधियों की गिरफ्तारी संबंधी कार्यवाही में विलंब करने पर वनरक्षक श्री जुबेर खान निलंबित

रायसेन (निप्र)। वनमण्डल सामान्य रायसेन की परिक्षेत्र सिलवानी पश्चिम अंतर्गत दिनांक 15 अप्रैल 2025 को संदिग्ध मांस की जप्ती की जाकर संदिग्ध मांस का सेम्पल परीक्षण हेतु नानाजी देशमुख पशु चिकित्सालय एवं विज्ञान विश्विद्यालय प्रयोगशाला जबलपुर भेजा गया था। प्रयोगशाला जबलपुर में भेजे गये सेम्पल की जांच रिपोर्ट में जप्त मांस काला हिरण वन्यप्राणी होने की पुष्टि होने पर आरोपियों की तलाश शुरू की गई। दिनांक 24.05.2025 को वन स्टाफ द्वारा वन अपराध प्रकरण क्रमांक 41200/14 दिनांक 16.05.2025 में काला हिरण शिकार के आरोपी फैसल पुत्र खालिद को हिरासत में लिया गया। आरोपी से पूछताछ जारी है। वन अपराध प्रकरण क्रमांक 41200/14 दिनांक 16 मई 2025 में अपराधी के विरूद्ध की जाने वाली कार्यवाही में लापरवाही बरतने एवं अपराधियों की गिरफ्तारी संबंधी कार्यवाही में विलंब करने के कारण वनरक्षक श्री जुबेर खान को निलंबित कर दिया गया है।

सिलाई, अगरबत्ती निर्माण व उपार्जन से जुड़कर आशा बनी 'लखपति दीदी'

हरदा (निप्र)। हरदा विकासखण्ड के ग्राम हंडिया निवासी आशा केवट की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। वह भी कुछ काम करके अतिरिक्त आय प्राप्त कर अपने परिवार के संचालन में पति का हाथ बंटाना चाहती थी, लेकिन जानकारी के अभाव में कुछ नहीं कर पा रही थी। गांव में आशा को एक दिन पता चला कि महिलाओं के स्वसहायता समूहों को घर पर ही छोटे मोटे व्यवसाय शुरू करने के लिये सरकार से आर्थिक मदद मिलती है। बस फिर क्या था, आशा ने अपने आसपास की कुछ महिलाओं से बात कर रेवा आजीविका स्वसहायता समूह गठित कर लिया और समूह महिलाओं ने मिलकर अगरबत्ती निर्माण का व्यवसाय शुरू किया, जिससे उसे हर महिने लगभग 10 हजार रूपये की आय होने लगी। इसके अलावा आशा के स्वसहायता समूह ने गांव में सिलाई का कार्य भी शुरू किया, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय होने लगी। एक दिन आशा को मालूम चला कि सरकार गेहूं व चना उपार्जन का कार्य भी महिला स्वसहायता समूह को दे रही है। आशा ने अपने स्व सहायता समूह की महिलाओं के साथ मिलकर गेहूं व चना उपार्जन का कार्य भी शुरू कर दिया, जिससे अब आशा की वार्षिक आय लगभग ढाई-तीन लाख रूपये हो गई है। आय बढ़ने से आशा और उसके परिवार का जीवन स्तर सुधर गया है और वह अब बहुत खुश है क्योंकि गांव वाले उसे ''लखपति दीदी'' जो कहने लगे हैं।

शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था के प्रशिक्षणार्थी 20 दिवसीय ऑन जॉब ट्रेनिंग के लिए रवाना

बैतूल (निप्र)। अंतर्राष्ट्रीय हार्टफुलनेस फाउन्डेशन एवं शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बैतूल के बीच हुए एमओयू के अनुसरण में 26 मई 2025 को संस्था के फ्लोरीकल्चर एंड लेण्डस्केपिंग के 40 प्रशिक्षणार्थियों को व्यवसाय प्रशिक्षक श्री दिलीप बेले एवं कु. प्रतिमा गौरे के नेतृत्व में 20 दिवसीय ऑन जॉब ट्रेनिंग के लिए कान्हा शांति वनम हैदराबाद रवाना किया गया। रवाना होने के पूर्व बैतूल रेल्वे स्टेशन पर हार्टफुलनेस संस्था के प्रतिनिधि डॉ.आनन्द मालवीय द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को शुभकामना देते हुए ऑन जॉब ट्रेनिंग में मन लगाकर कौशल सीखने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर हार्टफुलनेस संस्था के जिला संयोजक श्री रोहित बघेल, श्री बीआर गव्हाड़े, श्री अनुराग तिवारी, संस्था प्राचार्य श्री रेवाशंकर पंडाग्रे, वरिष्ठ प्रशिक्षण अधिकारी श्री दिलीप कुमार सोनी, प्लेसमेंट अधिकारी श्री विवेक दायमा, श्रीमती पुष्पा नागले, श्रीमती विनीता पाटिल, श्री रामनारायण गंगारे, श्री संदीप धुर्वे, श्री दुर्गेश भलावी, श्री सोमु मराठा उपस्थित रहे। संस्था प्राचार्य श्री रेवाशंकर पंडाग्रे ने बताया कि हार्टफुलनेस फाउंडेशन से हुए एमओयू के तहत संस्था में सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए 5 दिवसीय ध्यान शिविर आयोजित किये जा रहे है एवं विशेष रूप से फ्लोरीकल्चर एंड लेण्डस्केपिंग व्यवसाय के प्रशिक्षणार्थियों को हार्टफुलनेस संस्था के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय कान्हा शांति वनम फॉरेस्ट बाय हार्टफुलनेस में 20 दिवसीय नि:शुल्क ऑन जॉब ट्रेनिंग विगत 2 वर्षों से प्रदान की गयी।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने झाँसी में एशिया के पहले नेट-जीरो पुस्तकालय का किया अवलोकन

ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर की दिशा में ठोस पहल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने झाँसी में एशिया के पहले नेट-ज़ीरो पुस्तकालय का अवलोकन किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह मॉडल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के पर्यावरणीय संतुलन और सतत विकास के विजन का जीवंत उदाहरण है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने में वैश्विक स्तर पर अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर, वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों और पर्यावरण-अनुकूल निर्माण कार्यों को प्राथमिकता दे रही है। राज्य में सतत औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए ठोस रणनीति पर कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रयास शिक्षा, ऊर्जा, आत्मनिर्भरता और पर्यावरण संरक्षण को एकीकृत करते हुए विकास को नई दिशा देते हैं।

झांसी पुस्तकालय झांसी विकास प्राधिकरण (उत्तर प्रदेश सरकार) द्वारा निर्मित किया गया है। झाँसी पुस्तकालय को विश्व बैंक की सहयोगी संस्था अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम (आईएफसी) द्वारा एशिया का पहला नेट-ज़ीरो पुस्तकालय घोषित किया गया है। इस पुस्तकालय ने शत-प्रतिशत ऊर्जा बचत प्राप्त की है। इसकी सम्पूर्ण ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति स्थानीय नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों जैसे सौर पैनलों और विंड टरबाइन के माध्यम से की जाती है। यह परियोजना भारत के नेट-ज़ीरो लक्ष्य 2070 के अनुरूप भी है।

इंटरनेशनल मॉडल विद्याजोशी आएंगी जन परिषद समारोह में

भोपाल। बी यूनिक इंटरनेशनल मिसेज दुबई, मोस्ट पॉपुलर फेसऑफ आबू धाबी, लोकप्रिय रनवे मॉडल एवं एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशी पटेल, अग्रणी संस्था जन परिषद के 36वें वार्षिक समारोह में शिरकत करने के लिए बतौर विशिष्ट अतिथि आगामी 13 जून को दुबई से भोपाल आयेंगी। समारोह में राज्यपाल, विधान सभा अध्यक्ष, मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर, गोपाल भार्गव, संजय पाठक, प्रह्लाद पटेल, एंदेल सिंह कंसाना एवं हेमंत खंडेलवाल को भी आमंत्रित किया गया है।

संस्था के अध्यक्ष एवं पूर्व डीजीपी एन के त्रिपाठी एवं महासचिव अजय श्रीवास्तव नीलू ने बताया कि जून में जनपरिषद की रचनात्मक यात्रा के 36 वर्ष पूरे हो रहे हैं। परंपरानुसार यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। जिसमें जन परिषद के 275 चैप्टर्स के प्रतिनिधिगण एवं गणमान्य नागरिक शामिल होते हैं। देश प्रदेश के उपलब्धि प्राप्त व्यक्तियों को सम्मानित भी किया जाता है।

संयोजक रामजी श्रीवास्तव के अनुसार जन परिषद एवं इसके विभिन्न चैप्टर्स पिछले 36 वर्षों में 1300 से अधिक लोगों को सम्मानित कर चुके हैं। संयोजक रामजी श्रीवास्तव के अनुसार जन परिषद गैरराजनीतिक संस्था है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने ओरछा में भगवान श्री रामराजा सरकार के किए दर्शन

प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि और निरंतर विकास की प्रार्थना की

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने निवाड़ी जिले के अल्पप्रवास के दौरान ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगरी ओरछा में भगवान श्री रामराजा सरकार के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने प्रदेशवासियों की सुख, समृद्धि एवं निरंतर विकास की कामना की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि भगवान श्री रामराजा सरकार आस्था, श्रद्धा और विश्वास के प्रतीक हैं। उनका आशीर्वाद हमें सेवा, समर्पण और सुशासन के पथ पर अग्रसर रहने की प्रेरणा देता है। ओरछा की धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत पूरे देश में अद्वितीय है। विधायक निवाड़ी श्री अनिल जैन, कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड़, पुलिस अधीक्षक डॉ. राय सिंह नरवरिया सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, उपस्थित रहे।

सतीश सिंह का 5वां म्यूज़िक एल्बम 'इश्क' रिलीज

मुंबई। स्तंभकार, लेखक और गीतकार सतीश सिंह का पांचवां म्यूजिक एल्बम 'इश्क' जारी हो चुका है। यह स्पोटिफ़ाई, अमेज़न म्यूजिक, जियो सावन, यूट्यूब म्यूजिक सहित 100 से अधिक ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर उपलब्ध है। म्यूजिक एल्बम 'इश्क' अपने मनमोहक बोलों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। गायक की दिलकश आवाज़ श्रोताओं के साथ एक गहरा संबंध स्थापित करता है। संगीत में मधुर धुनों का एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण है, जो श्रोताओं को एक स्वप्निल दुनिया में ले जाता है, जहां की हर शैय में सिर्फ इश्क होता है।

सतीश सिंह के संगीत करियर की शुरुआत उनके पहले एल्बम पिया रे ओ रे पिया से हुई थी जो 25 दिसंबर, 2021 को रिलीज़ हुआ। उसके बाद उनका दूसरा एल्बम हसरतों का कोई किनारा नहीं होता 21 जनवरी, 2025 को आया; उनका तीसरा एल्बम महबूबा को खत लिखते हैं 8 फरवरी, 2025 को आया; और उनका चौथा एल्बम हिम्मत है तो छू कर देख जरा 22 मार्च, 2025 को रिलीज़ हुआ था।

विश्व माहवारी दिवस पर किशोरी समूह की चित्र प्रदर्शनी

भोपाल। विकास संवाद द्वारा क्राई के सहयोग से संचालित बाल गतिविधि केंद्र के माध्यम से माहवारी दिवस पर संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें किशोरियों और उनकी माताओं ने एक साथ भागीदारी की और माहवारी पर खुल कर बात करने के लिए जागरूकता फैलाने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में जिला समन्वयक के रूप मे शिवराज कुशवाहा, स्थानीय शिक्षिका शिव कुमारी यादव, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता / सहायिका और अभिवावक शामिल रहें।

आजीविका फ्रेश' ने बदली गुलाब बाई की जिंदगी

स्व-सहायता समूह और सरकारी योजनाओं ने दी आत्मनिर्भरता की राह, स्वयं का रोजगार स्थापित कर गुलाब बाई बनी लखपति दीदी

नर्मदापुरम (निप्र)। ग्रामीण आजीविका को सशक्त बनाने की दिशा में मध्य प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत अनेक महिलाओं की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव आ रहे हैं। इसी क्रम में ग्राम नंदरवाड़ा, विकासखंड सिवनीमालवा, जिला नर्मदापुरम की श्रीमती गुलाब बाई ने आनंदी आजीविका स्व-सहायता समूह से जुड़कर अपनी जीवन यात्रा को नई दिशा दी है।

गुलाब बाई की आर्थिक स्थिति पहले बेहद कमजोर थी और कोई स्थायी रोजगार न होने के कारण वे कर्ज के बोझ तले दबी रहती थीं। लेकिन स्व-सहायता समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने 5000 रुपये का ऋण लेकर सब्जी व्यापार की शुरुआत की। धीरे-धीरे उन्होंने 10,000 रुपये का दूसरा ऋण लेकर व्यवसाय का विस्तार किया और फिर 25,000 रुपये समूह से तथा 15,000 रुपये अपनी बचत से जोड़कर ÷आजीविका फ्रेश÷ नाम से स्थायी सब्जी दुकान खोली।

आज गुलाब बाई की मासिक आय 12,000 से 15,000 रुपये और वार्षिक आय 1.20 लाख रुपये से अधिक हो गई है। उन्होंने अपनी मेहनत से एक लोडिंग ऑटो भी खरीदा है, जिसका उपयोग कोरोना काल में चलित सब्जी विक्रय के लिए किया और आपदा की घड़ी में ग्रामीणों को फल-सब्जी की सेवा प्रदान की।

गुलाब बाई आज न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं, बल्कि सामाजिक रूप से भी सशक्त हो चुकी हैं। उन्हें मध्य प्रदेश शासन की लाडली बहना योजना तथा प्रधानमंत्री आवास योजना का भी लाभ प्राप्त हुआ है। ये योजनाएं उनके जीवन में सहारा बनकर आईं और उन्हें स्थायित्व व सम्मान दिलाने में सहायक रहीं।

दीदी गुलाब बाई ने नारी शक्ति संकुल स्तरीय संगठन एवं राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इन योजनाओं और समूह की बदौलत ही वे आज आत्मनिर्भर बन पाई हैं।

ग्राम गुनखेड़ की महिला कृषक श्रीमती कंचन ने पाली हाउस योजना से बदली अपनी तकदीर

बैतूल (निप्र)। प्रदेश सरकार इस वर्ष लोकमाता अहिल्याबाई की 300वीं जयंती मनाने जा रही है। वहीं विभिन्न योजनाओं के माध्यम से मध्य प्रदेश शासन द्वारा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। शासन की इन्हीं योजनाओं में से एक पाली हाउस योजना का लाभ उठाकर आठनेर तहसील के ग्राम गुनखेड़ की महिला कृषक श्रीमती कंचन कनाठे ने अपने जीवन में उल्लेखनीय बदलाव किया है। पहले पारंपरिक खेती पर निर्भर रहने वाली श्रीमती कंचन ने जब उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों से मार्गदर्शन लिया तब उन्हें फूलों और सब्जियों की उन्नत खेती का सुझाव मिला। इसके बाद उन्होंने पाली हाउस स्थापित कर सब्जी, गेंदा की खेती शुरू की। महिला कृषक श्रीमती कंचन ने बताया कि शुरुआत में थोड़ी हिचकिचाहट थी, लेकिन विभागीय अधिकारियों ने उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण और योजनाओं की पूरी जानकारी दी। इसके बाद उन्होंने पूरी लगन से फूल उत्पादन शुरू किया। आज उनके खेतों में रंग-बिरंगे फूल लहलहा रहे हैं, जिन्हें वे भोपाल, नागपुर, पुणे सहित अन्य बड़े शहरों में भेज रही हैं। पहले जहां खेती से सीमित आमदनी होती थी, अब वह लाखों रुपये की कमाई कर रही हैं। इतना ही नहीं उन्होंने अपने पाली हाउस में अन्य ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को भी रोजगार दिया है।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में अनुभूति पंथी के बढ़ते कदम, गांव के अन्य महिलाओं के लिए बनी प्रेरणा स्रोत

विदिशा (निप्र)। महिला सशक्तिकरण की दिशा में विदिशा जिले की महिलाएं भी स्वाबलंवी होकर आत्मनिर्भर बनी हैं। मध्यप्रदेश शासन की महत्वाकांक्षी योजनाओं को जानकर महिलाएं ना सिर्फ योजनाओं का लाभ ले रही हैं बल्कि स्वरोजगार से जुड़कर घर-गृहस्थी में भी हाथ बंटा रही हैं।

आज हम बात कर रहे हैं विदिशा जिले के ग्राम गुरारिया हवेली में शासकीय उचित मूल्य दुकान का संचालन करने वाली दुकान विक्रेता श्रीमती अनुभूति पंथी की। जो स्वयं आत्मनिर्भर होकर आजुविका मिशन के अंतर्गत बेतवा आजुविका स्व सहायता समूह का संचालन कर रही हैं और पंचायत के तीनों ग्रामों पठारी हवेली, धनौरा और बरखेड़ा जीतू के कुल 339 परिवारों को राशन विक्रय कर रही हैं। महिला सशक्तिकरण की दिशा में उनके बढ़ते कदम अन्य महिलाओं को प्रेरित कर रहे हैं। समूह की अध्यक्ष और विक्रेता श्रीमती अनुभूति पंथु के साथ ही गांव की अन्य महिला सदस्य भी उनके समूह में जुड़ी हैं जो राशन वितरण का कार्य बखूबी निभा रही हैं। दुकान के संचालन से समूह को कमीशन राशि भी प्राप्त होती है जिससे समूह की सदस्यों को 1500 रुपये मासिक आय प्राप्त हो रही है।

समूह की अध्यक्ष श्रीमती अनुभूति पंथी व समूह के अन्य सदस्यों द्वारा संलग्न परिवारों को प्रति माह नियमित रूप से राशन उपलब्ध कराया जा रहा है। हितग्राहियों को प्रतिमाह दूरभाष के माध्यम से राशन प्राप्त करने के लिए अवगत कराया जाता है। उचित मूल्य दुकान पर हितग्राहियों की सुविधा के लिए मूलभूत सुविधाएं जैसे पीने का पानी, शौचालय, बैठने हेतु बेंच इत्यादि की व्यवस्थाएं भी सुनिश्चित की गई हैं। अनुभूति पंथी जो कि उचित मूल्य दुकान विक्रेता के साथ समूह की अध्यक्ष भी हैं उनके द्वारा प्रतिमाह हितग्राहियों से लगातार संपर्क कर राशन वितरण किया जाता है। इनके विशेष प्रयासों के कारण दुकान से प्रतिमाह अधिक से अधिक पात्र हितग्राहियों को 98 प्रतिशत वितरण किया जाता है और दुकान से संलग्न 93 प्रतिशत हितग्राहियों की ई-केवाईसी का कार्य भी पूर्ण किया जा चुका है।

100 दिवस से अधिक समयावधि की सीएम हेल्पलाईन शिकायतों का प्राथमिकता से करें निराकरण- कलेक्टर

रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित टीएल बैठक में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा सीएम हेल्पलाईन, विभागीय गतिविधियों और शसकीय योजनाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक के प्रारंभ में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण निराकरण में प्रदेश में पहले स्थान पर रहने पर सभी के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि जब हम बेहतर कार्य करते हैं तो जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि जो शिकायतें शेष हैं तथा नवीन प्राप्त होने वाली शिकायतों का भी यथाशीघ्र संतुष्टिपूर्ण निराकरण सुनिश्चित कराएं। सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों को कलेक्टर द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित भी किया गया।

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने विभागवार सीएम हेल्पलाईन शिकायतों की विस्तृत समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिकायतों का समयावधि में संतुष्टिपूर्ण निराकरण कराएं। कोई भी शिकायत निम्न गुणवत्ता से निराकृत या बंद ना हो। उन्होंने 50 दिवस से अधिक समयावधि की लंबित शिकायतों की समीक्षा करते हुए जिला अधिकारियों को प्राथमिकता से उनका निराकरण सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। इसी प्रकार 100 दिवस से अधिक समयावधि की शिकायतों की भी समीक्षा कर अधिकारियों को अभियान के रूप में शिकायतों का निराकरण करने के निर्देश देते हुए कहा कि प्रतिदिन शिकायतों के निराकरण की प्रगति की मॉनीटरिंग की जाए। बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने नॉन अटेन्डेन्ट शिकायतों की जानकारी लेते हुए खाद्य विभाग, नगरीय प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग आदि विभागों की शिकायतें नॉन अटेन्डेन्ट रहने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि वह स्वयं गंभीरतापूर्वक शिकायतों को देखें तथा निराकरण कराएं।

बैठक में विभागीय गतिविधियों की समीक्षा के दौरान कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने राजस्व प्रकरणों के निराकरण की प्रगति की समीक्षा करते हुए सभी एसडीएम, तहसीलदार तथा नायब तहसीलदारों को सीमांकन, नामांतरण, बंटवारा, भू-अभिलेख दुरूस्ती आदि प्रकरणों का समयावधि में निराकरण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया कि आगामी 15 दिवस में सीमांकन के अधिकाधिक प्रकरणों का निराकरण सुनिश्चित कराएं। प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी की समीक्षा करते हुए कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने पीओ डूडा तथा सभी सीएमओ को प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत स्वीकृत आवासों का निर्माण शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि हितग्राहियों द्वारा किस्त की राशि का उपयोग आवास निर्माण में ही किया जाए, यह सुनिश्चित कराएं।

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए सीएमएचओ को निर्देश दिए कि एएनसी पंजीयन के विरूद्ध शत-प्रतिशत संस्थागत प्रसव सुनिश्चित कराएं। उन्होंने टीकाकरण, प्रसूति सहायता योजना, आयुष्मान योजना आदि की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि मरीजों को त्वरित और बेहतर उपचार मिले। इसी प्रकार शिक्षा विभाग और अनुसूचित जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं अंतर्गत विद्यार्थियों को राशि भुगतान की समीक्षा की गई। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिए कि शासकीय स्कूलों में बच्चों की संख्या बढ़ाएं। साथ ही प्रत्येक विद्यार्थी को पाठ्य पुस्तकों का वितरण किया जाए। महिला बाल विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने निर्माणाधीन आंगनवाड़ी भवनों की प्रगति की समीक्षा कर शीघ्र कार्य पूर्ण कराने के निर्देश दिए।

बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने परिवहन विभाग की समीक्षा के दौरान कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने जिला परिवहन अधिकारी को स्कूल और कॉलेज की बसों की जांच करने के निर्देश दिए। साथ ही वीडियो कॉफ्रेंस के माध्यम से सभी एसडीएम को भी इसकी मॉनीटरिंग करने के निर्देश दिए। खनिज विभाग की समीक्षा के दौरान अवैध उत्खनन और परिवहनकर्ताओं के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए। इसी प्रकार वन विभाग की समीक्षा के दौरान अवैध रूप से पेड़ों की कटाई तथा वन भूमि पर अवैध उत्खनन करने वालों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। बैठक में कृषि विभाग अंतर्गत जिले में उर्वरक की उपलब्धता, गेहूँ उपार्जन का भुगतान, समर्थन मूल्य पर तुअर विक्रय हेतु पंजीयन तथा अभी तक उपार्जन की मात्रा की जानकारी लेते हुए दिशा-निर्देश दिए। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अपर कलेक्टर श्रीमती श्वेता पवार, डिप्टी कलेक्टर, अतिरिक्त सीईओ जिला पंचायत सहित जिला अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण में उत्कृष्ट कार्य करने पर श्री मनीष कुमार अहिरवार ऊर्जा विभाग, श्री ऋषिकांत यादव नगर परिषद सिलवानी, श्री सुधीर उपाध्याय नगर परिषद गैरतगंज, श्री दानीश अहमद खान जनपद सीईओ बाड़ी, श्री प्रेम कुमार अहिरवार खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग सिलवानी, श्रीमती पूर्णिमा श्रीवास्तव खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग बेगमगंज, श्री श्याम कुमार डोले लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग गैरतगंज, श्री भूरेलाल शाक्या ऊर्जा विभाग वितरण केन्द्र सिलवानी तथा श्री शैलेष पटेल ऊर्जा विभाग वितरण केन्द्र गैरतगंज को सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण में उत्कृष्ट कार्य करने पर प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

राइट क्लिक

ये 'हलवाई स्ट्राइक' 'पाक' पर है या 'पाकशास्त्र' पर ?

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क- 9893699939
ajaybokil@gmail.com

पहलगाम में आंतकी हमला और उसके बाद ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सेना के पाकिस्तान पर जवाबी हमले के बीच आतंकियों की पनाहगाह पाकिस्तान को लेकर जो गुस्सा भारत में उभरा, उससे इस बार मिठाइयां भी नहीं बच सकीं। जयपुर के मिठाई विक्रेताओं ने पाक पर हलवाई स्ट्राइक करते हुए मशहूर मिठाई मैसूरपाक का नाम बदलकर 'मैसूर श्री' कर दिया। इसी तरह चंडी भस्म पाक का नया नाम 'चंडी भस्म श्री' हो गया है। जयपुर की प्रसिद्ध 'बॉम्बे मिष्ठान भंडार' के महाप्रबंधक विनीत त्रिखा ने कहा कि हम स्पष्ट संदेश देना चाहते हैं कि जो लोग भारत की ओर आंख उठाने की हिम्मत करेंगे उनके नाम मिटा दिए जाएंगे तथा हर भारतीय अपने तरीके से जवाब देगा। यह हमारा मीठा, प्रतीकात्मक प्रतिशोध है। दूसरे ने कहा कि पाक की अमानवीय आतंकी हरकतों की सहज सांस्कृतिक प्रतिक्रिया है। एक तर्क यह भी है कि मिठाइयों के नाम से 'पाक' हटाना राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। भारतीय सैनिकों ने सीमा पर पाकिस्तान को सबक सिखाया, ऐसे में हलवाई (मिठाईवाले) अपने स्तर पर जो कर सकते हैं, कर रहे हैं। दावा है कि 'पाक' को 'श्री' में बदलने से मिष्ठान प्रेमी ग्राहक भी खुश हैं। यह बात अलग है कि शब्द बदलने से भाव बदल सकता है, स्वाद नहीं। यानी पहले 'पाक' को उदरस्थ करते थे, अब 'श्री' को करेंगे। याद रहे कि हमारा पड़ोसी 'पाक' तो 78 साल पहले वजूद में आया है, मगर भारतीय 'पाक' तो हजारों सालों से हमारी संस्कृति का गौरवशाली हिस्सा है।

बेशक, धूर्त पाकिस्तान को हर संभव तरीके से सबक सिखाया जाना चाहिए, लेकिन इसके साथ यह विवेक भी जरूरी है कि प्रतिशोध आखिर हम किस से और क्या सोच कर ले रहे हैं। हम यह बदला अज्ञान से ले रहे हैं या ज्ञान से? फारसी के 'पाक' से ले रहे हैं या संस्कृत के 'पाक' से? 'पवित्रता' से ले रहे हैं या 'शुद्धता' से? संयोग से 'पाक' शब्द संस्कृत और फारसी दोनों भाषाओं में है, लेकिन दोनों में अर्थ भेद है। लिहाजा क्या हम पाकिस्तान को नापाक ठहराकर उसके 'पाक' होने के दावे को बेनकाब कर रहे हैं या फिर हमारे ही सदियों पुराने 'पाकशास्त्र' को खारिज कर रहे हैं? नाम बदलें, लेकिन ऐसे भी न बदलें कि हमे हमारी ही विरासत को नकारना पड़े। 'मैसूर पाक' को 'मैसूर श्री' बना देना, कुछ इसी तरह की हिमाकत है, बजाए पाक को पाकशास्त्रीय सबक सिखाने के, भले ही वह देशभक्ति की चाशनी में क्यों न पगा हो। दरअसल यह कुछ-कुछ एक मिठाई 'कराची' हलुए को 'कानपुरी हलुआ' में बदलने जैसा है (यह बात अलग है कि हलुआ शब्द भी अरबी से आया है और भारत में रच बस गया है)। बहरहाल, बात दक्षिण भारतीय मिठाई 'मैसूर पाक' की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार मैसूर राज्य (अब कर्नाटक का भाग) पर वर्ष 1902 से 1940 के बीच शासन करने वाले महाराजा नलवाड़ी कृष्णराज वोडेयार खाने के जानकार भी थे। वो अपने रसोइयों से तरह-तरह के व्यंजन बनवाते और नए-नए प्रयोग करवाते रहते थे। कहते हैं कि एक दोपहर उनका रसोइया काकासुरा मडप्पा रोज की तरह मिठाई बनाना भूल गया। लिहाजा उसने जल्दबाजी में बेसन, घी और चाशनी से एक मिठाई तैयार की और उसे 'मैसूर पाका' नाम दिया। चूंकि यह मिठाई मैसूर में ईजाद हुई थी, इसलिए राजा ने उसका नाम 'मैसूर पाक' रख दिया। कन्नड़ भाषा में बेसन के साथ चीनी की चाशनी मिले मिश्रण को पाका कहते हैं। कन्नड़ में ज्यादातर शब्द आकारांत होते हैं। जबकि मूल शब्द संस्कृत का 'पाक' ही है। मराठी में चाशनी को ही 'पाक' कहा जाता है। 'मैसूर पाक' का आविष्कार तबकी बात है, जब 'पाकिस्तान' शब्द भी वजूद में नहीं आया था। खास बात यह है कि रसोइए काकासुरा मडप्पा की चौथी पीढ़ी के वंशज अभी भी स्वादिष्ट 'मैसूर पाक' बना और बेच रहे हैं। 'मैसूर पाक' मिठाई रेसिपी के हिसाब से यूं तो आसान लगती है, लेकिन इसे बनाने के लिए कुशल हलवाई होना जरूरी है। जयपुर में इस मिठाई का नाम बदलने पर मडप्पा परिवार को घोर आपत्ति है। उनका कहना है कि 'मैसूर पाक' उनकी पारिवारिक विरासत है। यह सांस्कृतिक प्रतीक भी है। कोई अपनी मर्जी से इसका नाम कैसे बदल सकता है? इसका एक अर्थ यह भी है कि जयपुर वाले मिठाई का नाम बदलना ही चाहते हैं तो उनकी अपनी किसी मिठाई का बदलें।

अब सवाल यह कि अगर 'पाक' शब्द पर ही आपत्ति है और उसे हटाने से ही देशभक्ति का इजहार होता हो तो समूचे 'पाकशास्त्र' को हमे क्या 'श्रीशास्त्र' कहना पड़ेगा? भाषाविदों के अनुसार 'पाक' यानी पकाना शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'पच्' धातु से है। जो पकाया गया है, वह पाक है। साथ ही जो अग्नि से होकर गुजरा है, वह पाक यानी पवित्र है। दूसरी तरफ फारसी के जिस 'पाक' से 'पाकिस्तान' (पवित्र देश) शब्द बना है, उसका अर्थ पवित्र होता है न कि पकाया हुआ। पाकिस्तान शब्द भी 1934 में वजूद में आया, इसको गढ़ने वाले पंजाब के चौधरी रहमत अली थे। फारसी 'पाक' की व्युत्पत्ति की बात करें तो वर्तमान फारसी की पूर्वज भाषा अवेस्तन के पाक से है। इसी अवेस्तन भाषा में पारसियों का पवित्र धर्मग्रंथ 'जेंद अवेस्ता' रचा गया है। दरअसल अवेस्तन, मध्यकालीन फारसी और फिर नई फारसी के बहुत से शब्द भारतीय भाषाओं में रच गए हैं, जिन्हें अक्सर इस्लाम से जोड़ दिया जाता है, जबकि ये शब्द इस्लाम के उद्भव से काफी पहले से मौजूद हैं। जबकि भाषा विज्ञान संस्कृत और अवेस्तन (फारसी) भाषा का उद्भव 'आदि भारोपीय भाषा' से ही मानता है। कालांतर में दोनो भाषाएं अलग-अलग विकसित हुईं।

चूंकि भारत में पाक से अर्थ मुख्यतः पाक कला से है, इसलिए हमारी बहुत सी मिठाइयों में पाक शब्द जोड़ा गया है। मसलन आम पाक, मोती पाक, अदरक पाक, चांदी भस्म पाक, गोंद पाक, खोपरा पाक, मलाई पाक, मेथी पाक, गाजर पाक आदि। अब अगर इन सबके नाम बदलने पड़े तो क्या गाजर पाक को 'गाजरश्री' कहेंगे? और फिर 'पाक' शब्द का विकल्प 'श्री' कैसे हो सकता है?

अगर 'पाकिस्तान' में से केवल 'पाक' को खारिज करना चाहें तो संस्कृत में भी पाक का एक अर्थ पवित्र (शुद्ध) है। हमारे पाकशास्त्र में भी शुद्धता पर काफी जोर दिया गया है। 'पाक' को हटाना इस शुद्धता को भी नकारना है। वैसे भी पाकशास्त्र किसी भी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, और हर संस्कृति की अपनी पाक शैली होती है। भारतीय पाकशास्त्र भी वैदिक काल से चली आई है और अपने आप में समृद्ध कला और विरासत है। पाकशास्त्र के हमारे यहां कई ग्रंथ हैं। जिनमें प्रसिद्ध हैं 'पाकदर्पण', जिसका रचयिता राजा नल को माना जाता है। इसमें उस जमाने की कई रेसिपियों का विस्तृत वर्णन है। इसी प्रकार बंगाली में 'मिष्ठानों पाक', हिंदी में 'पाक चंद्रिका' एवं 'वृहद पाक विज्ञान' तथा मराठी में 'हजार पाक क्रिया' आदि ग्रंथ उपलब्ध हैं, जो पाकिस्तान का विचार उपजने से काफी पहले लिखे गए थे। तो क्या अब इन ग्रंथों के नाम में से भी 'पाक' शब्द हटाया जाएगा?

गौरतलब है कि संस्कृत और फारसी में कई शब्द समान हैं और उनके अर्थ भी लगभग मिलते-जुलते हैं। उदाहरण के लिए संस्कृत 'भ्राता' और फारसी का बिरादर, संस्कृत का द्वार और फारसी का दर, संस्कृत का तारा और फारसी का सितारा, संस्कृत का स्थान और फारसी का स्तान (इसमें पहले कौन आया कहना मुश्किल है), इसी तरह वैदिक संस्कृत और फारसी की पूर्वज अवेस्ता भाषा मंद भी समानताएं हैं। जैसे कि संस्कृत का असुर और अवेस्ता का अहुर, संस्कृत का यज्ञ (आहुति) और अवेस्तन का यस्न (स्तोत्र)। कहने का तात्पर्य यह कि पाकिस्तान पर जवाबी स्ट्राइक करें, हर संभव क्षेत्र से करें, लेकिन अति उत्साह और उन्माद में ऐसा कुछ न करें, जिससे बाद में हमे ही पुनर्विचार करना पड़े। प्रतिघात का अर्थ अविचारी वार नहीं है। 'पाक' से ज्यादा औकात हमारी प्राचीन पाककला और समृद्ध पाक परंपरा की है।

देवी अहिल्याबाई के शासन से देश ने सीखी व्यवस्था की नयी परिभाषा

मुख्यमंत्री ने महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज में सीएम की पाठशाला में छात्राओं से किया संवाद

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राष्ट्र से बढ़कर कुछ नहीं है। राष्ट्र का हित सर्वोपरि है। भारत देश में महिलाएं तब भी सशक्त थीं, जब उन्हें कम अधिकार थे और आज भी उतनी ही सशक्त हैं, जब उन्हें सर्वाधिकार प्राप्त हैं। महारानी दुर्गावती और देवी अहिल्याबाई ने अपने साहस, शौर्य, पराक्रम और कौशल से न केवल शासन किया अपितु प्रशासन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में एक आदर्श प्रस्तुत किया। दोनों का जीवन आसान नहीं था, इनके जीवन में नाना प्रकार के संघर्ष थे, अवरोध थे, कठिनाईयां थीं, दुश्वारियां थीं, फिर भी इन्होंने हार नहीं मानी और अंततः सारी कठिनाईयों से लड़कर और जूझकर उन्होंने अपना मुकाम हासिल किया। यही वजह है कि आज हम इन्हें उनके पराक्रम के लिए जानते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को भोपाल के महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज में छात्राओं से आत्मीय संवाद कर रहे थे।

सीएम की पाठशाला

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कॉलेज के फैशन टेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट की छात्राओं से उनके क्लासरूम में 'सीएम की पाठशाला' लगाई और सभी बेटियों से गुरूतुल्य व पितातुल्य संवाद किया। मुख्यमंत्री ने छात्राओं को मध्यप्रदेश की महारानी दुर्गावती और लोकमाता देवी अहिल्याबाई के सम्पूर्ण जीवन वृतांत पर रोचकतापूर्वक प्रकाश डालकर छात्राओं का ज्ञान संवर्धन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छात्राओं के आल्हाद में सहभागी बनकर उनके साथ सेल्फी भी ली।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि महारानी दुर्गावती ने अकबर की सेना के साथ लड़ाई की और अंततः खुद को न्यौछावर कर दिया। मुख्यमंत्री ने छात्राओं को बताया कि महारानी दुर्गावती ने जबलपुर में आधारताल, मदन महल बनाया। ऐसी जल संरचनाएं बनवाईं कि एक तालाब भरने के बाद अगला तालाब, उसके बाद उसके अगले तालाब में जल संरक्षण होता रहा। इससे प्रजा को जल संचयन की प्रेरणा मिली। उन्होंने कहा कि तकनीक के मामले में तब के शासक भी अग्रणी थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छात्राओं की रानी दुर्गावती की शौर्य गाथा विस्तार से बताते हुए कहा कि हमें इस बात का गर्व है कि वे मध्यप्रदेश की महारानी थीं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोकमाता देवी अहिल्याबाई के बारे में छात्राओं को बताया कि उन्होंने अपने करीब 28 साल के शासन में देश को शासन व्यवस्था की एक नई

परिभाषा सिखाई। उन्होंने जगह-जगह मंदिर बनवाए, घाट बनवाए, यात्रियों के लिए सराय (विश्राम गृह), अन्न क्षेत्र, तीर्थ क्षेत्र बनवाए। महिला सशक्तिकरण की मिसाल कायम करते हुए देवी अहिल्याबाई ने विधवा विवाह कराए। इससे वे तत्समय विधवाओं के जीवन में एक नया सवेरा लेकर आईं। उन्होंने सबके साथ समान रूप से न्याय किया। वे एक अच्छी बेटी, अच्छी बहु, अच्छी पत्नी के साथ एक ममतामयी मां भी थीं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देवी अहिल्याबाई को न केवल उनके माता-पिता ने वरन् उनके सास-ससुर ने भी अपनी बेटी की तरह पाला था और अपने बेटे से बढ़कर देवी अहिल्याबाई को सत्ता के सूत्र सौंपे, शासन चलाने का प्रशिक्षण भी दिया। अहिल्याबाई ने जीवनपर्यंत नारी सशक्तिकरण के लिए काम किया। उन्होंने तत्कालीन महिलाओं को सशक्त बनाते हुए महेश्वरी साड़ी बनाने में कुशल बनाया। इससे महिलाएं आत्मनिर्भर बनीं। महेश्वरी साड़ियां हमें देवी अहिल्याबाई की सौगात है। अहिल्याबाई ने अपनी सास गोतमाबाई से प्राप्त खासगी की रकम से कई मंदिर और घाट बनवाए। महेश्वर को अपनी राजधानी बनाई। वे सच्चे अर्थों में नारी सशक्तिकरण का एक आदर्श व्यक्तित्व थीं। उन्होंने देश को सिखाया कि मंदिर और तीर्थयात्रा सिर्फ पूजा के लिए नहीं होते, इससे पर्यटन बढ़ता है और पर्यटन व देशाटन से आंतरिक संबंध बनते हैं, इससे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा मिलता है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छात्राओं को बताया कि देवी अहिल्याबाई होल्कर का जन्म 31 मई 1725 को एक मराठा हिन्दू परिवार में चौंडी नामक गांव में हुआ था, जो आजकल महाराष्ट्र के अहमदनगर में आता है। चूंकि 31 मई को उनके जन्म के 300 साल पूरे हो रहे हैं, यही कारण है कि आज न केवल मध्यप्रदेश बल्कि पूरा देश उनका 300वां जयंती वर्ष हर्षोल्लास से मना रहा है। उन्होंने कहा कि 31 मई को स्वयं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी देवी अहिल्याबाई की स्मृति में आयोजित महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन में शामिल होने भोपाल पधार रहे हैं। उन्होंने बेटियों से कहा कि वे कार्यक्रम में आएं और देवी अहिल्याबाई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा लें।

'सीएम की पाठशाला' कार्यक्रम में बेटियों ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव से प्रश्न भी पूछे। मुख्यमंत्री ने सभी प्रश्नों के बड़ी सहजता और मनुहार के साथ जवाब दिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज में 'होलिस्टिक अपस्किलिंग नारी शक्ति प्रोजेक्ट' के तहत छात्राओं द्वारा चीनी मिट्टी से तैयार किए गए नए-नए घरेलू उत्पाद, लाईट लैम्प, डिजाइनर मिरर, फेब्रिक, डिजाईनर कुर्ते-कुर्ती और अन्य प्रादर्शों का अवलोकन किया और बेटियों के नवाचारों की मुक्तकंठ से सराहना की।

इंदौर, खरगोन-धार में सुबह से बारिश, भोपाल में आंधी चली

रायसेन में सड़कों पर पानी भरा, शाजापुर में पेड़ गिरे ; एमपी के 40 जिलों में आज भी अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में पिछले 24 घंटे के दौरान कई जिलों में बारिश का दौर चला। भोपाल में देर रात तक तेज आंधी चलने के साथ बारिश हुई। शाजापुर जिले में कई पेड़ गिर गए। वहीं, रायसेन में सड़कों पर पानी भर गया। मौसम विभाग के अनुसार, खंडवा में 2 इंच, रायसेन में डेढ़ इंच, खरगोन में 1.4 इंच, इंदौर-सीहोर में सवा इंच, छिंदवाड़ा में 1 इंच, गुना में पौन इंच,

नर्मदापुरम में आधा इंच बारिश हुई। भोपाल, बैतूल, धार, मंडला, नरसिंहपुर, उज्जैन, नर्मदापुरम, हरदा, राजगढ़, देवास, शाजापुर, आगर-मालवा समेत कई जिलों में बारिश होती रही। सीहोर के इछावर में ढाई इंच से ज्यादा पानी गिर गया।

इधर, बुधवार सुबह भी कई जिलों में बारिश हुई। इंदौर, खरगोन, धार में सुबह से ही तेज बारिश का दौर रहा। नौतपा के चौथे दिन यानी, बुधवार को भी भोपाल, इंदौर-उज्जैन समेत 40 जिलों में तेज आंधी चलने और बारिश होने का अलर्ट है। कुछ जिलों में आंधी की रफ्तार 50किमी प्रतिघंटा तक रह सकती है।

बारिश के बीच करंट से 6 मवेशी की मौत

कुक्षी के ग्राम बडग्यार में बुधवार सुबह तेज हवा और बारिश के दौरान बिजली के खंभे का जंपर टूटने से करंट फैल गया। घटना में पदम मुजाल्दा के घर में बंधे 6 मवेशियों की मौत हो गई। पदम और उनका बेटा संदीप भी करंट की चपेट में आ गए। दोनों घायलों को सुबह 11 बजे कुक्षी के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज जारी है।

सैटेलाइट के आधार पर अवैध खनन रोकने की तैयारी

एमपी की सभी खदानें जियो टैग, खनन पर कलेक्टरों को अलर्ट जारी कर रहा खनिज विभाग

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में अवैध खनन पर रोक लगाने अब सैटेलाइट (उपग्रह) बेस्ड खनन निगरानी प्रणाली लागू की जाएगी। खनिज साधन विभाग ने इसके लिए प्रदेश की सभी खदानों को जियो टैग किया था। जिसे पॉयलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू किया है और एक पोर्टल तैयार किया गया है। इस पोर्टल से सैटेलाइट के माध्यम से अवैध उत्खनन की पहचान कर अलर्ट जारी किए जा रहे हैं। जिसे पोर्टल पर जिला कलेक्टर एवं जिला खनिज अधिकारी द्वारा लॉग इन कर देखा जा सकता है।

प्रमुख सचिव खनिज उमाकांत उमराव ने सैटेलाइट (उपग्रह) आधारित खनन निगरानी प्रणाली को लागू किए जाने के संबंध में जिला कलेक्टर्स को आदेश जारी कर दिए हैं। इसमें कहा है कि खनिजों के अवैध उत्खनन पर नियंत्रण के लिए सैटेलाइट (उपग्रह) आधारित खनन निगरानी प्रणाली विकसित की गई है। इस व्यवस्था के अंतर्गत प्रदेश की सभी खदानों को जियो टैग किया है।

विभाग द्वारा तैयार पोर्टल पर क्लिक कर इसे एक्सेस किया जा सकता है। प्रमुख सचिव ने बताया कि इस पोर्टल से सैटेलाइट के माध्यम से अवैध उत्खनन की पहचान कर अलर्ट जारी किए जा रहे हैं। जिसे पोर्टल पर जिला कलेक्टर एवं जिला खनिज अधिकारी द्वारा लॉग इन कर देखा जा सकता है।

लॉग इन की जानकारी अलग से विभागीय ई-मेल आईडी में दी है। जिला कलेक्टर एवं खनिज अधिकारी को अलर्ट की जानकारी एसएमएस द्वारा हर माह पोर्टल के माध्यम से दी जाएगी। प्रमुख सचिव खनिज द्वारा कलेक्टर्स को सैटेलाइट आधारित खनन निगरानी प्रणाली का जिले में तत्परता से क्रियान्वयन करने तथा अवैध उत्खनन पाये जाने पर परिवहन एवं भंडारण नियम के अंतर्गत कार्यवाही करने के निर्देश जारी कर दिये गये हैं।

अलर्ट मैप पर दिखेंगे

- जिले के अंतर्गत जारी किए गए अलर्ट मैप पर चिह्नित रहेंगे, जिनका अन्य खदानों, जियो लॉजिकल लेयर एवं खसरे की जानकारी के आधार पर परीक्षण किया जा सकता है।
- जारी किए गए अलर्ट को खनिज अधिकारी द्वारा फील्ड वेरिफिकेशन कर मोबाइल ऐप के माध्यम से वेरिफाई किया जाएगा।
- फील्ड वेरिफिकेशन के बाद अवैध उत्खनन पाए जाने पर मध्यप्रदेश अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भंडारण नियम-2022 के अंतर्गत कार्रवाई की जाएगी।
- पोर्टल के संबंध में वीसी के माध्यम से सभी जिला कार्यालयों में पदस्थ अधिकारी-कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया है।

राहुल गांधी ने गैंगरेप पीड़ित के परिवार से की बात

खंडवा में कांग्रेस विधायक भूरिया से कहा- इन्हें सपोर्ट करो, मदद लगे मुझे बताना

खंडवा (नप्र)। खंडवा में आदिवासी महिला से गैंगरेप और फिर उसकी हत्या के मामले में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने पीड़ित परिवार से बात की है। उन्होंने मृतक महिला के बेटे से घटना के बारे में जानकारी ली।

दरअसल, बुधवार को झाबुआ से विधायक और आदिवासी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष विक्रांत भूरिया खंडवा में पीड़ित परिवार से मिलने उनके गांव पहुंचे थे। यहां उन्होंने मोबाइल पर पीड़ित परिवार के सदस्य से राहुल गांधी की बात कराई।

राहुल गांधी ने पीड़ित परिवार को हर संभव मदद का भरोसा दिया। उन्होंने कांग्रेस विधायक विक्रांत भूरिया से कहा कि आप इन्हें सपोर्ट करें। मदद लगे तो प्लीज मुझे बताना।

मृतक महिला के बेटे ने राहुल गांधी को ये बताया- राहुल गांधी ने गैंगरेप पीड़िता महिला के बेटे से पूछा कि, घटना कैसे हुई, कौन लोग थे, क्या उन्हें जेल हो गई है। इस पर पीड़िता के बेटे ने कहा, 'गांव में शादी समारोह था और इसी बीच मां महिला रिश्तेदारों को छोड़ने खेत पर गई थी। उनके साथ गांव के सुनील और हरि ने दुष्कर्म किया और फिर हत्या कर दी। दोनों आरोपी अभी जेल में हैं।

शनिवार सुबह 11 बजे भोपाल पहुंचेंगे पीएम मोदी

बीजेपी ऑफिस में हुई बैठक, सीएम यादव बोले, बहनें संभालेंगी सम्मेलन की व्यवस्थाएं

भोपाल (नप्र)। 31 मई को भोपाल के जंबूरी मैदान पर लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर की जयंती पर होने वाले महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 11 बजे पहुंचेंगे। पीएम मोदी के कार्यक्रम की व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी देने प्रदेश भाजपा कार्यालय में भोपाल की डेढ़ हजार महिलाओं की बैठक हुई। इस बैठक को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह एवं प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने संबोधित किया

सीएम बोले: बहनों के सिंदूर उजाड़ने का बदला लिया- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पहलगाम में आतंकवादियों ने पति को गोली मारने के बाद हमारी बहन से कहा कि मोदी को बता देना। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बहन के सुहाग का बदला लिया और ऑपरेशन सिंदूर के तहत देश की सेना ने दुश्मन को घर में घुसकर मारा। प्रधानमंत्री मोदी जी सुबह 11 बजे बहनों के सम्मेलन को भोपाल में संबोधित करेंगे सभी बहनें सुबह जल्दी घर से निकलें और अपने आसपास की बहनों को जंबूरी मैदान के महिला महाशक्ति महासम्मेलन में लेकर पहुंचें।

पीएम का भोपाल आना हमारा सौभाग्य

सीएम ने कहा - प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकारें भी देवी अहिल्याबाई द्वारा स्थापित सुशासन, महिला सशक्तिकरण और सांस्कृतिक विरासत को संजोने के कार्यों को आगे बढ़ा रही है। उन्होंने देवी अहिल्याबाई होल्कर की धर्म, न्यायप्रियता से संबंधित संस्मरण सुनाते हुए कहा कि उन्होंने अपने कार्यों से मध्यप्रदेश की बेटी और बहू के रूप में अतुलनीय कार्य किया है।

वीडी बोले-राजधानी में बनेगा नया इतिहास

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 31 मई को लोकमाता अहिल्याबाई की जयंती पर होने वाले महिला सशक्तीकरण सम्मेलन में भाग लेने भोपाल आ रहे हैं। यह कार्यक्रम ऐतिहासिक होगा, जिसमें करीब 2.5 लाख बहनें भाग लेंगी।

बहू बनकर आईं और बेटी के रूप में पूजी गईं देवी अहिल्याबाई

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि देवी अहिल्याबाई होल्कर ने एक नहीं अनेक आदर्श स्थापित किए हैं। वह बहू बनकर होल्कर परिवार में आईं और बेटी के रूप में पूजी गईं, ऐसा उन्होंने अपने कार्यों से ही कर सकी हैं। अहिल्या बाई होल्कर ने अपने शासनकाल में सुशासन, देशभर के मंदिरों का जीर्णोद्धार, न्यायप्रिय व्यवस्था और महिलाओं के सशक्तिकरण के कार्यों से आदर्श स्थापित किया है।